शेक्सपीयर के कथानक

वेनिस का सौदागर

इटली में वेनिस नाम का एक नगर है। उस नगर में शायलक नाम का एक यहूदी रहता था। उस समय वेनिस नगर में उसके समान कोई दूसरा सूदखोर नहीं था। वह ईसाई सौदागरों को अधिक सूद पर रुपये उधार देता था। उसने इस प्रकार से प्रचुर धन एकत्र कर लिया था।

शायलक का हृदय बहुत ही कठोर था। कर्जदारों को कष्ट देना ही मानो उसका एकमात्र उद्देश्य था। ऋण चुकाने का समय आने पर वह घातकों जैसा निर्दयी होकर अपने पावने की कौड़ी-कौड़ी चुकता कर लेता था। इस कारण वेनिस नगर के सभी निवासी उसे घृणा की दृष्टि से देखते थे। विशेष रूप से एक ईसाई सौदागर, जिसका नाम एन्टोनियो था, उससे अधिक घृणा करता था। वह कभी-कभी शायलक को लोगों के सम्मुख ही अपमानित किया करता था। इस कारण यहूदी शायलक और ईसाई एन्टोनियो में बहुत पुरानी शत्रुता चली आ रही थी।

एन्टोनियो एक बहुत ही उदार पुरुष था। वह भी समय-समय पर लोगों को कर्ज देता था, लेकिन कभी भी सूद के लोभ नहीं। इसलिए लोग उसे बहुत चाहते थे तथा उसकी प्रशंसा ते थे। शायलक इस पर बहुत जला करता था और कोई अच्छा-सा घात लग जाने पर एन्टोनियो को उचित दण्ड देने की बात सोचा करता था।

एन्टोनियो का एक मित्र था। जिसका नाम बेसानियो था। बेसानियो भी अच्छे घर का तथा अपने मित्र के समान सुशील और शिष्ट था। परन्तु वह अपनी वंश-मर्यादा की रक्षा के लिए अपने धन का बहुत ही अनुचित उपयोग करता था। कुछ दिनों में बड़े-बड़े धनिकों की चालढाल के अनुकरण में उसका सारा धन समाप्त हो गया। इस कारण आवश्यकता पड़ने पर वह प्राय: अपने मित्र एन्टोनियो से ऋण लिया करता था। लोग उन दोनों की मित्रता की बड़ी प्रशंसा करते थे।

बेसानियो का एक प्रतिष्ठित और धनवान व्यक्ति की इकलौती पुत्री से प्रेम हो गया था। वे एक दूसरे को बहुत चाहते थे। उस धनिक-पुत्री का नाम पोर्शिया था। उसके समान रूप और गुण-वाली तरुणी बेलमान्ट नगर में कोई दूसरी नहीं थी। जब उस सुन्दरी के पिता का देहान्त हो गया तब बेसानियो ने उससे विवाह करने की बात सोची। क्योंकि, इस प्रकार से उसकी अपनी आर्थिक स्थिति भी सुधर सकती थी। परन्तु धनिक-पुत्री के मनोहरण के लिए रूप और गुण के अतिरिक्त कुछ धन की भी आवश्यकता पड़ती है। बेचारा बेसानियो पोर्शिया के पास नायक बन कर जाना चाहता था, परन्तु किसी नायिका के पास नायक बन कर जाने के लिए कम से कम नायक को नायकों की सा वेश-भूषा तो अवश्य होनी चाहिये। नहीं तो बात एक हँसी की हो जाती है।

बेसानियो ने एन्टोनियो के पास जाकर अपना सब-कुछ कहा और तीन हजार डूकट माँगे। उस समय एन्टोनियो के पास उतने रुपये नहीं थे। किन्तु वह अपने मित्र को निराश भी कर सका। उसने बेसानियो से कहा—"भाई, चिन्ता न करो अभी मेरे पास इतने रुपये नहीं हैं तो क्या? हम यहूदी से उधार लेकर अपना काम चला लेंगे। मेरे जहाज [illegible] ही

वेनिस के बन्दरगाह को लौट रहे हैं। उनके आ पहुँचने पर मैं उसके रुपये दे दूँगा।"

दोनों मित्र शायलक के पास गये। शायलक उनको देखते ही बहुत विस्मित हुआ। वह और भी अधिक विस्मित हुआ, जब एन्टोनियो ने उसके सम्मुख तीन हजार डूकट उधार माँगे। शायलक उसकी बात सुनकर मन ही मन बहुत प्रसन्न हुआ, मानो उसे मुँह-माँगा इनाम मिल गया हो। उसने सोचा, एन्टोनियो कम से कम एक बार तो उसके चंगुल में फँसे, फिर तो वह जानता ही है कि कैसे बदला चुकाया जाता है!

शायलक को मौन देखकर एन्टोनियो ने फिर कहा—"क्यों जी शायलक! मुझे आज तीन हजार डूकट उधार दोगे न?"

यह सुनकर शायलक को उससे जरा परिहास करने की इच्छा हुई। वह बोला—"महाशय एन्टोनियो! आपने बार-बार मेरा अपमान किया है। दूसरे सौदागरों के सामने मुझे 'कुत्ता' कहकर पुकारा है। भला बताइये! एक कुत्ता कभी तीन हजार डूकट उधार दे सकता है?"

एन्टोनियो ने कठोर शब्दों में उस परिहास का उत्तर दिया। उसने कहा—"मैं फिर तुम को उसी प्रकार से संबोधित करूँगा। यदि तुम्हें ऋण देना है तो मित्रतापूर्वक नहीं, शत्रुतापूर्वक ही दो। यदि मैं निश्चित अवधि के भीतर तुम्हारा पावना न चुका सका, तो मैं प्रतिज्ञा करता हूँ, तुम मुझे विधि के अनुसार उचित दण्ड का भागी बनाना।"

यह सुनकर शायलक मन ही मन बहुत प्रसन्न हुआ। परन्तु उसने अपने मनोभाव को छिपा कर कहा—"श्रीमान् जी! आप तो मुझ पर अकारण क्रोधित हो रहे हैं। चाहे आप जो कहें, मैं सचमुच आपको अपना मित्र बनाना चाहता हूँ। आपने अनेक

बार मेरा अपमान किया है। फिर भी मैं आपसे मित्रता स्थापित करने के लिए उत्सुक हूँ। आपने अनेक बार अनेक प्रकार से मुझे लज्जित करने की चेष्टाएँ की हैं, परन्तु मैं सभी बीती बातों को भूल जाऊँगा। मैं सहायता अवश्य करूँगा किन्तु इसके बदले आप मुझे सूद लेने के लिए अनुरोध न कीजियेगा।"

अर्थ-पिशाच शायलक के मुँह से सहसा ऐसी बातें सुनकर एन्टोनियो बहुत ही विस्मित हुआ। शायलक ने हँसते हुए कहा—"मैं आपको सचमुच तीन हजार डूकट उधार दूँगा और सूद भी न लूँगा। किन्तु एक बार आपको वकील के घर चलना होगा और यों ही हँसी के तौर पर एक ऋण-पत्र पर हस्ताक्षर करना होगा कि यदि आप उल्लिखित अवधि के भीतर मेरा पावना न चुका सकें तो मैं आपके शरीर से आधा सेर माँस काट लूँगा—यह कोई महत्त्व की बात नहीं—केवल हँसी ही हँसी तो है।"

एन्टोनियो भी इसे एक अच्छा-सा मजाक समझकर ऐसा करने को राजी हो गया। उसने कहा—"बहुत अच्छा! मैं ऐसा करने को तैयार हूँ। ऋण-पत्र लाओ, मैं अभी हस्ताक्षर कर देता हूँ। अब मैं अवश्य लोगों से कहूँगा कि यहूदी वास्तव में ही दयालु होते हैं।"

बेसानियो अब तक चुपचाप दोनों की बातें सुन रहा था। परन्तु अब वह चुप न रह सका। वह शायलक की बनावटी दयालुता से ताड़ गया कि दाल में अवश्य कुछ काला है। उसने संशययुक्त होकर अपने मित्र एन्टोनियो से कहा,—"भाई ऐसी प्रतिज्ञा न करो। ऐसे संकट-पूर्ण ऋण में आबद्ध होना कदापि उचित न होगा।"

एन्टोनियो ने हँसकर अपने मित्र से कहा—"इसमें चिंतित होने का कौन-सा कारण है। प्रतिज्ञा चाहे जितनी कठिन हो इसमें आशंका कौन-सी है। मेरे जहाज शीघ्र ही धन-माल से

पूर्ण होकर यहाँ पहुँच जायेंगे। उनके पहुँच जाने पर मैं ऋण का सौ-गुना धन दे सकूँगा। फिर मैंने समय भी पर्याप्त लिया है। तीन महीने की अवधि बहुत लम्बी होती है।"

शायलक दोनों की बातें सुनकर स्वतः बोल उठा—"हाय पिता इब्राहिम! देखिये, ईसाई कितने शक्की होते हैं।" फिर उसने बेसानियो से प्रकाश्य में कहा—"महाशय, यदि आपके मित्र निर्दिष्ट समय के भीतर ऋण नहीं चुका सके तो क्या मैं उनके शरीर से सचमुच ही माँस काट लूँगा? आप ही बताइये, मनुष्य के माँस से मुझे क्या लाभ होगा! यह माँस यदि भेड़ या बकरे का भी होता तो उसका कुछ मूल्य होता। आप अकारण चिंतित न हों। आपके मित्र का अनिष्ट कभी भी न होगा। मैं सचमुच ही आपके मित्र के साथ मित्रता करने की अभिलाषा रखता हूँ। यदि इस पर भी आपका संशय न मिटा तो मुझसे उधार लेने की आवश्यकता नहीं है। आप लोग जा सकते हैं।"

बेसानियो इस पर भी निःसंदेह न हो सका। वह एन्टोनियो को ऐसी प्रतिज्ञा पर ऋण लेने से बार-बार मना करने लगा। न जाने क्यों शायलक की साधुता देख उसके मन में यह धारणा दृढ़ हो गयी थी कि उसकी यह साधुता कपटता से भरी है। परन्तु एन्टोनियो ने उसकी बात नहीं मानी। उसने शायलक के कथनानुसार ऋण की शर्तें मान लीं और ऋण-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिया। उसका विश्वास था कि यह प्रतिज्ञा केवल एक कौतुक मात्र है।

बेसानियो की प्रेम-पात्री पोर्शिया अतुलनीया सुन्दरी थी। वह बेलमांट नामक नगर में रहती थी जो वेनिस के समीपवर्ती था। वह अपने पिता के देहावसान के बाद अपार ऐश्वर्य की अधिकारिणी बन गयी थी। इस कारण उसके चाहने वाले अनेक थे। किंतु उससे विवाह करने के लिए एक कठिन प्रण

था जिसे पूरा करना प्रथम कर्तव्य था। यह एक प्रकार की भाग्य-परीक्षा थी।

पोर्शिया के पिता ने सोने, चाँदी और सीसे की तीन अलग-अलग पेटिकाएँ बनवाई थीं। तीनों में से किसी में उसने पोर्शिया का चित्र रख दिया था। हर-एक पेटिका पर एक कविता लिखी हुई थी। सोने की पेटिका पर जो कविता लिखित थी, उसका अर्थ इस प्रकार है—'मैं लोगों की प्रार्थित वस्तु हूँ। संसार मेरे पीछे निश-दिन मरता है।' चाँदी की पेटिका पर लिखित कविता का अर्थ है—'मुझे मनोनीत करनेवाले अपने योग्य पुरस्कार अवश्य पाते हैं।' जो पेटिका सीसे की बनी थी, उसपर लिखित कविता का अर्थ है—'मुझे ग्रहण करनेवाले व्यक्ति का जीवन आपत्तियों और अशांतियों से भरा होता है और उसे आत्म-समर्पण करना ही पड़ता है।'

पोर्शिया के पिता ने अपनी कन्या के विवाह के लिए एक नियम बना दिया था कि पोर्शिया से विवाह करने के इच्छुक व्यक्ति आकर पहले किसी एक पेटिका को मनोनीत करेगा और उसे खोलेगा। यदि पोर्शिया का चित्र उस पेटिका में मिल गया तो वह उसके पाणि-ग्रहण के योग्य होगा। नहीं तो नहीं। फिर यदि कोई व्यक्ति असफल रहा तो असफल व्यक्ति को उस पेटिका के गुप्त भेद को प्रकट न करने की शपथ खानी पड़ेगी। इस कारण पोर्शिया के लिए कोई प्रार्थी अपने भाग्य की परीक्षा में साहसी नहीं होता था। इधर पोर्शिया भी अपने पूज्य पिता की आज्ञा का अपमान कैसे कर सकती थी!

इतनी अड़चनों के होते हुए भी पोर्शिया के तुल्य कन्या-रत्न के पाने के लिए पहले-पहल मरक्को देश का राजा आया। पोर्शिया ने उस सम्मानित अतिथि का खूब आदर-सत्कार का प्रबन्ध किया तथा उन पेटिकाओं को राजा के सम्मुख मँगवा कर रखा।

उसने अतिथि-राजा से कहा—"आप किसी एक पेटिका को चुन लीजिये, मैं उसकी कुञ्जी देती हूँ।"

राजा ने उन पेटिकाओं पर लिखी कविताओं को ध्यान से देखा। उसने सोने की बनी पेटिका पर लिखित कविता को पढ़ा—'मैं लोगों की प्रार्थित वस्तु हूँ। संसार मेरे पीछे निश-दिन मरता है।' उसने तुरन्त वह पेटिका मनोनीत कर ली। क्योंकि देवी-प्रतिमा सी पोर्शिया को पाने के लिए सभी के मन में तीव्र अभिलाषा है। वह सभी के लिए लोभनीय वस्तु है। इस कारण उसके लिए संसार का निश-दिन मरना अत्यन्त स्वाभाविक है। मरक्को के राजा ने पोर्शिया से कहा—"देवी! मैं इसी पेटिका को मनोनीत करता हूँ। आप इसकी कुञ्जी दीजिये। देखूं इसमें आपकी अनुपम प्रतिकृति है या नहीं।"

परन्तु मरक्को-राज का भाग्य-देवता प्रसन्न न था। पेटिका खोलने पर वहाँ पोर्शिया के चित्र के बजाय एक पत्र मिला जिसमें लिखा था—'जो बाह्य-सौंदर्य से मुग्ध होते हैं उनकी यही दशा होती है।'

मरोक्को का राजा निराश होकर चला गया।

अब आया आरागोन देश का राजा! उसने भी तीनों पेटिकाओं को देखा और उन कविताओं को पढ़ा। सोने की पेटिका पर लिखित था—'मैं लोगों की वांछित वस्तु हूँ। संसार मेरे लिए दिन-रात मरता है।' आरागोन-नरेश ने सोचा—संसार के लोग मूर्ख होते हैं, इसलिए उनकी प्रार्थित वस्तु मुझे कैसे मिल सकती है! उसने सोने की पेटिका को नहीं खोलना चाहा। उसने चाँदी की बनी पेटिका देखी। उस पर लिखित था—"मुझे मनोनीत करनेवाले व्यक्ति अपने योग्य पुरस्कार अवश्य पाते हैं।" इस कविता को पढ़कर उसका मन आनन्द

से भर उठा। वह एक देश का राजा था। उसके योग्य पुरस्कार पोर्शिया के अतिरिक्त और क्या हो सकता है? क्योंकि योग्य व्यक्ति ही उचित वस्तु का अधिकारी होता है। उसने चाँदी की पेटिका खोली। परन्तु उसे भी निराश होना पड़ा। वहाँ भी पोर्शिया का चित्र नहीं था। वहाँ एक पत्र पड़ा था। जिसमें ये शब्द लिखित थे—'तुम भी बाहरी सुन्दरता से मुग्ध हुए! क्या तुम नहीं जानते कि कितनी बार जलने के बाद चाँदी शुद्ध होती है?'

आरागोन-नरेश भी चलता बना।

अब बेसानियो पोर्शिया के समीप उसके प्रणय-प्रार्थी के रूप में उपस्थित हुआ। उसके साथ उसके कुछ नौकर और एक विशिष्ट अनुचर ग्रेसियनो थे। पोर्शिया बेसानियो को देखते ही बहुत प्रसन्न हुई। क्योंकि वह स्वयं बेसानियो को चाहती थी। परन्तु उसके आगे एक भयानक बाधा थी, जिसे पार कर वह बेसानियो से कभी न मिल सकती थी। वह थी उसके पिता की प्रतिज्ञा! यदि बेसानियो अपनी भाग्य-परीक्षा में असफल रहा तो वह बेसानियो का मुख कभी भी न देख सकेगी, जो दशा उसके लिए मृत्यु से भी भयानक होगी। फिर वह अपने पिता के निषेध को भी कैसे ठुकरा सकती थी! इसलिए उसने मन ही मन बहुत दुःखी होकर बेसानियो से कहा—"आप मेरे पास कुछ दिन अतिथि बन कर रहिये। मैं इसे ही अपना सौभाग्य समझूँगी। यदि विधाता हम पर प्रसन्न न हुए, यदि आप अपने भाग्य की परीक्षा में असफल हो गये तो मैं फिर आपको देख न सकूँगी।"

बेसानियो यह सुनकर बहुत ही दुःखी हुआ। फिर भी उसने साहस करके कहा—"पोर्शिया! अदृष्ट में जो है—उसे स्वीकार करना ही पड़ेगा। कोई दूसरा उपाय नहीं है। मैं अपने भाग्य की परीक्षा करूँगा!"

बेसानियो ने तीनों पेटिकाएँ देखीं, उन पर लिखित पदों को पढ़ा। उनमें सोने की बनी पेटिका को देखकर मन में विचार किया—संसार के लोग बाहरी सौंदर्य पर मुग्ध होते हैं परन्तु भीतरी गुण के प्रति उनका ध्यान नहीं रहता। इसलिए उसने सोने की दिखावटी सुन्दरता में न भूलने का निश्चय किया।

अब उसने चाँदी की पेटिका देखी। लेकिन चाँदी भी उसे आकृष्ट न कर सकी। चाँदी का धर्म है—प्रतिदिन हस्तांतरित होते रहना। आज जो धनी है कल वह भिखारी हो सकता है। इसलिए उसे चाँदी भी पसन्द न आयी। बेसानियो सीसे की पेटिका को देखने लगा। उस पर लिखित था—'मुझे ग्रहण करने वाले व्यक्ति का जीवन आपत्तियों और अशांतियों से भरा होता है और उसे आत्मसमर्पण करना ही पड़ता है।' इस श्लोक का अर्थ बेसानियो के विचार के अनुकूल था। प्रिय जनों के लिए प्रियजनों का आत्मदान तो उसका धर्म है। फिर जहाँ आत्मदान है, वहाँ आपत्तियों और अशांतियों का होना स्वाभाविक है। बेसानियो ने उस पद को बार-बार पढ़ा और मन ही मन प्रसन्न हुआ। उसने निश्चय किया कि उसका पुरस्कार अवश्य उसी पेटिका में है। उसने पोर्शिया से उस पेटिका की कुञ्जी माँगी। आनन्द से पोर्शिया का हृदय नाच उठा। उसने तुरन्त कुञ्जी दे दी। बेसानियो ने पेटिका खोल कर उसमें अपनी प्रेम-पुत्तलिका की अनुपम प्रतिकृति को देखा। इस प्रकार से उसे अपने प्रेम का पुरस्कार मिला।

सीसे की पेटिका में भी एक खंड कागज था। उस पर लिखित था—'तुम भाग्यवान हो, इसलिए तुम्हें ऐसी पत्नी मिली। दिखावटी सुन्दरता से तुम मुग्ध नहीं हुए, इसलिए तुम्हें धन्यवाद देता हूँ।'

पोर्शिया बेसानियो को अपने पति के रूप में पाकर अतिशय आनन्दित हुई। बेसानियो भी उसे पत्नी के रूप में पाकर अपने को भाग्यवान समझने लगा। परन्तु वह पोर्शिया के तुल्य धनी नहीं था। यह चिन्ता उसे बार-बार दुःख देने लगी। उसने अपनी पत्नी से अपनी आर्थिक स्थिति के बारे में कहा—"पोर्शिया, मेरा जन्म ही केवल प्रतिष्ठित कुल में हुआ है। नहीं तो मेरी कोई ऐसी योग्यता नहीं है जिससे तुम्हारे समान पत्नी पा सकूं। मेरी आर्थिक-स्थिति अत्यन्त नाजुक है।"

पोर्शिया बेसानियो के गुणों से मुग्ध थी। फिर वह स्वयं अपार ऐश्वर्य की अधिकारिणी भी थी। यदि उसके पति की आर्थिक दशा उसके तुल्य नहीं हुई तो क्या ? उसने बेसानियो को दुःखी होते देखकर कहा—"मैं आपको चाहती हूँ, आप के ऐश्वर्य को नहीं। संसार की किसी भी संपदा से आपकी तुलना नहीं हो सकती। मैं आप जैसे पति को पाकर धन्य हो गयी, मुझे कोई और अभिलाषा नहीं है।"

पोर्शिया ने अपनी उँगली से एक अंगूठी निकालकर बेसानियो की उँगली में पहना दी और कहा—"मैं अपने तन-मन-धन आपको अर्पित करती हूँ। आप इनका ग्रहण कीजिये।"

बेसानियो के लिए और कौन-सा उपहार इतना मूल्यवान हो सकता था! उसने अपने हृदय से उस उपहार को स्वीकार किया और अपनी पत्नी के सम्मुख प्रतिज्ञा की कि वह उस अंगूठी को मृत्यु पर्यन्त अपने साथ रखेगा तथा अपने जीवन के विनिमय में भी वह अंगूठी किसी को नहीं देगा!

जब पोर्शिया ने बेसानियो को पति बनाना स्वीकार किया तब पोर्शिया की सखी नोरिसा और बेसानियो का सहचर ग्रेसियनो उनके सम्मुख उपस्थित हुए। वे भी एक दूसरे के प्रेम में

फँस चुके थे। उन्होंने एक दूसरे से विवाह करने के लिए अपने-अपने प्रभु से अनुमति माँगी।

बेसानियो और पोर्शिया ने इस विवाह की सानन्द अनुमति दी। वे प्रसन्न होकर चले गये।

बेसानियो जब पोर्शिया के प्रेम में पूर्णरूप से डूबा हुआ था, उसी समय उसके निकट एक अशुभ समाचार पहुँचा। पत्र एन्टोनियो का था। वह पत्र पढ़कर बहुत ही चिंतित हुआ। उसके मुख पर उदासी छा गयी। पोर्शिया ने अपने पति की अवस्था देखकर पूछा—"आप एकाएक इतना अधीर क्यों हो उठे? क्या यह पत्र कोई अशुभ समाचार लाया है?"

बेसानियो ने विषाद भरे स्वर में कहा—"यह समाचार बहुत ही अशुभ और चिन्ताजनक है। मैं ऋणी हूँ और मेरे ऋण के कारण मेरे मित्र का जीवन संकट में पड़ गया है। मैं बड़ा ही अभागा हूँ।" फिर वह पोर्शिया के समक्ष सारी घटना कह गया। वह यह कहते भी नहीं भूला कि यदि उसका मित्र एन्टोनियो तीन महीने की निश्चित अवधि के भीतर यहूदी शायलक का प्राप्य नहीं चुकाता तो प्रतिज्ञा के अनुसार वह एन्टोनियो के शरीर से आधा सेर माँस काट लेगा।

इस समाचार से पोर्शिया और बेसानियो दोनों ही बहुत दुःखी हुए। बेसानियो ने पोर्शिया को एन्टोनियो का पत्र पढ़कर सुनाया। उसमें लिखा था—"भाई बेसानियो! मेरे सभी व्यापारिक जहाज लापता हो गये हैं। इधर ऋण की निश्चित अवधि भी समाप्त हो गयी है। अब यहूदी शायलक प्रतिज्ञा के अनुसार मेरे शरीर से आधा सेर माँस लेने का अधिकारी हो गया है। इस कारण मेरी मृत्यु निकट आ गयी है। यदि तुम मुझसे अंतिम साक्षात्कार करना चाहते हो तो समाचार पाते ही चले आना। नहीं तो इस पत्र का उत्तर देने की आवश्यकता नहीं है।"

पोर्शिया ने अपने पति से कहा—"आप के मित्र को रक्षा करनी ही होगी। ऐसे मित्र सभी के लिए दुर्लभ हैं। आवश्यकता पड़ने पर आप उनके ऋण का बीस गुना धन देकर भी उनकी रक्षा कीजिये। ऐसे उदार व्यक्ति संसार में कहाँ मिलेंगे! वे हमारे कारण संकट में पड़े हैं। हम उन्हें संकट से अवश्य बचायेंगे।"

पोर्शिया ने शीघ्र ही बेसानियो से विवाह कर लिया। ऐसा करने से पोर्शिया की संपत्ति पर बेसानियो का विधिसम्मत अधिकार हो गया। अब वह अपने मित्र को आपत्ति से छुड़ा सकता था।

विवाह-कार्य समाप्त होते ही बेसानियो और ग्रेसियनो वेनिस के लिए रवाना हो गये और शीघ्र ही वहाँ पहुँच गये। परन्तु वहाँ पहुँच कर उन्होंने अपने मित्र एन्टोनियो को कारागार में देखा। ऋण के कारण वह वन्दी बनाया गया था।

बेसानियो अपने साथ प्रचुर धन लाया था। वह शायलक के पास गया और मुँह माँगा धन लेकर एन्टोनियो को छोड़ देने के लिए उससे अनुरोध करने लगा। परन्तु निर्दयी शायलक अपने निश्चय पर अटल रहा। वह बार-बार कहता गया—"अब मुझे रुपये की आवश्यकता नहीं है। प्रतिज्ञानुसार एन्टोनियो के शरीर से आधा सेर माँस मुझे मिलना चाहिये।"

यह सुनकर बेसानियो का हृदय भय से काँप उठा। वह निराश होकर कोई अन्य उपाय सोचने लगा।

इधर पोर्शिया बेसानियो के चले जाने के बाद एकांत में बैठकर इस बारे में गंभीर चिन्ता करने लगी। यदि बेसानियो धन देकर उसके मित्र की रक्षा न कर सका तो क्या होगा? यदि विचारपति शायलक के पक्ष में राय देता है तो एन्टोनियो का

जीवन जाता है। ऐसे संकट में क्या किया जा सकता है? पोर्शिया ने बहुत सोच-विचार कर एक उपाय ढूँढ़ निकाला और स्वयं वेनिस जाने का निश्चय किया। उसने बेलेरियो नाम के एक चतुर वकील के पास एक पत्र भेजा। उसमें सारा विवरण लिखा हुआ था। उसने पत्र द्वारा बेलेरियो से एन्टोनियो की रक्षा के लिए कोई अच्छी युक्ति भी पूछी और एक वकील का पहिरावा भेजने के लिए भी अनुरोध किया। बेलेरियो ने शीघ्र ही उस पत्र का उत्तर और एक वकील का पहिरावा भेज दिये।

पोर्शिया ने वकील का लबादा पहन लिया और वेश बदल कर पुरुष बन गयी। उसकी सखी नोरिसा भी वेश बदल कर पुरुष बन गयी। पोर्शिया बनी वकील और उसकी सखी नोरिसा बनी उसका मुहर्रिर! वे शीघ्र ही छद्मवेश धारण कर वेनिस पहुँचीं और निर्दिष्ट समय पर न्यायालय में उपस्थित हुईं।

वेनिस का राजा भी ठीक समय पर अपने मन्त्रियों को लेकर विचार-सभा में उपस्थित हुआ। उस समय का दृश्य देखने के लिए चारों तरफ अगणित दर्शक खड़े थे। पोर्शिया नोरिसा के साथ एक वकील के वेश में वहाँ उपस्थित हुई। उसने वेनिसके राजाको अभिवादन कर उसे एक पत्र दिया। यह पत्र बेलेरियो द्वारा वेनिस-राज को लिखा गया था। बेलेरियो ने लिखा था कि वह शारीरिक अस्वस्थता के कारण विचार सभा में उपस्थित न हो सका। इसलिए वह इस पत्रवाहक वकील को, जिसका नाम बलथासर है, भेज रहा है। यदि वेनिस-राज इस वकील को प्रतिवादी का पक्ष समर्थन करने दें तो वह बहुत ही अनुगृहीत होगा। बेलेरियो ने और भी लिखा था—'बलथासर युवक होने पर भी अत्यन्त बुद्धिमान है।'

अनुभवी वकील बेलेरियो का परिचय-पत्र देख कर वेनिस के राजा ने सानन्द उस युवक वकील बलथासर को पैरवी करने की आज्ञा दी।

एन्टोनियो का विचार आरम्भ हुआ। पोर्शिया वकील के आसन पर बैठकर चारों तरफ देखने लगी। एक तरफ यहूदी शायलक खड़ा था। वह देखने में प्रतिहिंसा का सजीव प्रतीक-सा लगता था। भयभीत होकर सभी उस भयानक यहूदी को देख रहे थे। वह यहूदी पत्थर के समान स्थिर और निश्चल खड़ा था। दूसरी तरफ एन्टोनियो खड़ा था। उसी के निकट पोर्शिया ने बेसानियो को देखा। बेसानियो का मुखमण्डल भी एन्टोनियो के मुखमण्डल के समान मलीन था। उनके पास ही भयभीत ग्रेसियनो भी खड़ा था।

पोर्शिया और नोरिसा वकील तथा मुहर्रिर के वेश में थीं। इस कारण उन्हें बेसानियो और ग्रेसियनो पहचान न सके।

शायलक और एन्टोनियो के अद्भुत विचार को देखने के लिए विचार-सभा के लोगों के चेहरे पर उत्सुकता छायी थी। वहाँ का वातावरण शांत और गम्भीर था। फिर भी पोर्शिया नारी-सुलभ भय और लज्जा का त्याग कर पुरुषोचित दृढ़ता के साथ सभा के बीच खड़ी हुई। वह धीरे-धीरे शायलक के निकट जाकर खड़ी हो गयी। उसने शायलक के मुखमण्डल की ओर दृढ़तापूर्वक देखती हुई कहा—'शायलक के प्रतिज्ञा-पत्र के अनुसार एन्टोनियो को दण्ड अवश्य मिलना चाहिये। इसके विरुद्ध कोई कुछ नहीं कह सकता। क्योंकि ऋण चुकाने की निश्चित अवधि समाप्त हो चुकी है। परन्तु इस समय मनुष्यता के नाते आप कुछ उदारता दिखायें और प्रतिज्ञा-पत्र पर लिखित प्रतिज्ञा को भूल जायें। केवल कृपाकर आप एन्टोनियो को क्षमा करें। ऋण की शर्तों तथा विचार-धारा के तर्कों को आप क्षण

भर के लिए भूल जायें। केवल कुछ समय के लिए आप दयालु बन जायें। बिना आपकी दया के एन्टोनियो की जीवन-रक्षा असम्भव होगी।"

वकील-वेशी पोर्शिया ने दया के विषय में एक सुन्दर भाव-पूर्ण भाषण दिया। वह भाषण सुनकर सभी के चित्त में दया उत्पन्न हुई किन्तु निर्दयी शायलक के चित्त पर इसका कुछ भी प्रभाव न पड़ा। वह ऋण की प्रतिज्ञा को न भूला। वह बार-बार कहता गया—"मुझे एन्टोनियो के शरीर से आधा सेर माँस चाहिये।"

अब पोर्शिया ने शायलक से पूछा, "क्या एन्टोनियो ऋण का परिशोध नहीं कर सकता ?" इस प्रश्न का उत्तर बेसानियो ने दिया। उसने कहा—"शायलक अपने प्राप्य रुपये के अतिरिक्त और भी जितने रुपये अधिक माँगे मैं सानन्द देने को तैयार हूँ।"

परन्तु प्रतिहिंसा के प्रतिमूर्ति शायलक ने इन बातों पर कुछ भी ध्यान न दिया। वह केवल एन्टोनियो के शरीर से आधा सेर माँस माँगता गया। जब शायलक टस से मस न हुआ तब बेसानियो कातर होकर वकील-वेशी पोर्शिया के निकट अपने मित्र की प्राण-रक्षा के लिए प्रार्थना करने लगा। इस पर पोर्शिया ने वकीलों की भाँति गम्भीर स्वर में कहा—"ऐसा कदापि नहीं हो सकता! जब आपके मित्र ने ऋण-पत्र पर हस्ताक्षर किया है तब उन्हें उसको मानना ही पड़ेगा। वेनिस की जो रीति सदा से चली आ रही है उसमें परिवर्तन करने का साहस कौन कर सकता है ?"

वकील की बातों को सुनकर शायलक मन में बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सोचा कि वकील उसी का समर्थन कर रहा है। इसलिए वह प्रसन्न होकर कह उठा—"वाह! वाह! क्या निष्पक्ष विचार! मानो स्वयं धर्मराज विचार कर रहे हैं! आपकी

अवस्था जितनी कम है, विचार-कार्य में आपकी पटुता उतनी ही अधिक है !"

अब पोर्शिया ने शायलक से ऋण-पत्र माँग लिया। उसने उसे पढ़कर कहा—"ऋण चुकाने की अवधि समाप्त हो चुकी है। शायलक एन्टोनियो के शरीर से आधा सेर माँस ले सकता है। फिर भी मैं और एक बार शायलक से अनुरोध करूँगा कि वह एन्टोनियो पर दया करें और अपने प्राप्य का तीन गुना धन लेकर उसे छोड़ दें।"

शायलक बोला—"मैं अपनी प्रतिज्ञा पर अटल हूँ। आप विधिसम्मत विचार कीजिये। कोई भी मनुष्य मेरे निश्चय को परिवर्तित नहीं कर सकता। किसी में इतनी शक्ति नहीं है। मैं यह स्पष्ट शब्दों में कहता हूँ।"

यह सुनकर एन्टोनियो बोला—"जब शायलक मेरे शरीर से आधा सेर माँस लेने के लिए ही अड़ा है तब वैसा ही हो। आप उसे आज्ञा दीजिये !"

वकील-वेशी पोर्शिया बोली—"एन्टोनियो! तब तुम तैयार हो जाओ। शायलक को अपना कार्य करने दो।" शायलक प्रसन्न होकर अपनी छूरी की धार देखने लगा। पोर्शिया ने शायलक से पूछा—"तुम एन्टोनियो के शरीर से जो माँस काटोगे क्या उसकी तौल जानने के लिए तराजू लाये हो ?"

शायलक तराजू लाया था। पोर्शिया ने पुनः उससे पूछा—"क्या कोई चिकित्सक भी साथ लाये हो ? हो सकता है, माँस काटते समय अधिक रक्त-स्राव के कारण एन्टोनियो की मृत्यु हो जाय !"

शायलक बोला—"परन्तु प्रतिज्ञा-पत्र में तो इसका उल्लेख नहीं है।"

पोर्शिया बोली—"अवश्य नहीं है! परन्तु यह साधारण दया का कर्त्तव्य है। क्या तुम इतनी भी दया नहीं कर सकते ?"

शायलक बोला—"प्रतिज्ञा-पत्र के अनुसार—नहीं।"

अब पोर्शिया ने एन्टोनियो से कहा—"एन्टोनियो! क्या तुम कुछ कहना चाहते हो ?"

एन्टोनियो बोला—"मुझे कुछ विशेष कहना नहीं है। मैं तो मरने जा रहा हूँ। केवल प्रिय मित्र बेसानियो से विदा माँग लेनी है। इसकी अनुमति दीजिये!"

पोर्शिया ने अनुमति दी। एन्टोनियो ने बेसानियो को संबोधित करके कहा—"भाई बेसानियो! तुम्हारे कारण मेरी यह दशा हुई है, यह सोचकर दुःखित न हो। तुम मेरे बारे में अपनी पत्नी से कहना। उन्हें बताना—हमारी मित्रता कितनी सच्ची थी। जब वे मेरे सम्बन्ध में सब कुछ सुन लेंगी तब अवश्य समझ जायेंगी कि बेसानियो को एक सच्चा मित्र मिला था।"

मित्र के अन्तिम वाक्यों को सुन कर बेसानियो का हृदय रो उठा। वह अतिशय कातर हो कर बोला—"भाई एन्टोनियो! मेरी पत्नी मेरे प्राणों से भी प्यारी है। फिर भी यदि अपनी पत्नी और अपने जीवन को देकर भी तुम्हें छुड़ा सकता तो मैं वैसा ही करता। क्योंकि ये सब तुम्हारी तुलना में तुच्छ हैं। परन्तु पापी शायलक तो इस पर भी नहीं मानेगा!"

बेसानियो की बातें सुनकर पोर्शिया बोली—"यदि महाशय की पत्नी यहाँ उपस्थित रहतीं तो महाशय की इस उदारता की प्रशंसा वे कभी भी न करतीं।"

बेसानियो का अनुचर ग्रेसियनो हर प्रकार से अपने प्रभु का अनुकरण करता था। उसने मुहर्रिर-वेशी नोरिसा के पास जाकर कहा—"मेरी भी पत्नी है। यदि वह स्वर्ग में जाकर किसी

देवता की कृपा से शायलक के मन में दया ला सकती है तो मैं उसे छोड़ सकता हूँ।"

मुहर्रिर-वेशी नेरिसा बोली—"तुमने यह उसकी अनुपस्थिति में कहकर अच्छा किया है। यदि तुम्हारी पत्नी तुम्हारी ये बातें सुन लेती तो तुम्हारे लिए घर में रहना कठिन होता।"

ये निरर्थक बातें शायलक को अच्छी नहीं लग रही थीं। वह शीघ्रता कर कह उठा—"हम विचार के समय निरर्थक बातों में समय नष्ट कर रहे हैं। विचार-पति का आदेश शीघ्र ही प्रचारित होना चाहिये।"

शायलक की व्यग्रता से सभी व्याकुल हो उठे। क्योंकि विचार-पति का आदेश एन्टोनियो के समान धार्मिक व्यक्ति के लिए मृत्यु था। अब अन्तिम दृश्य देखने के लिए सभी अधीर होकर प्रतीक्षा करने लगे।

पोर्शिया शायलक से बोली—"तुम एन्टोनियो के शरीर से आधा सेर माँस काट लोगे। यह तुम्हारा उचित प्राप्य है। फिर तुम यह माँस उसके सीने से काट सकोगे। ऋण-पत्र के अनुसार निष्पक्ष विचार यही कहता है।"

यह सुनकर शायलक बहुत प्रसन्न हो उठा। वह अपनी प्रसन्नता को रोक न सका। बोल उठा—"अहा! मानो स्वयं धर्मराज विचार कर रहे हैं!" उसने एन्टोनियो के प्रति हँसते हुए कहा—"अब तैयार हो जाओ!"

अब पोर्शिया एकाएक गंभीर मुद्रा धारण करके कहने लगी—"शायलक! जरा ठहर जाओ! केवल एक बात और कहनी है। तुम केवल एन्टोनियो के शरीर से आधा सेर माँस काट लोगे। ऋण-पत्र में यही लिखा है! परन्तु वहाँ खून के निकलने का कोई उल्लेख नहीं है। इसलिए तुम ऋण-पत्र के अनुसार केवल आधा सेर माँस ही काट लो। लेकिन देखना, एक बूँद भी खून न

निकलने पाये। यदि एक बूँद भी खून निकला तो वेनिस नगर के नियमानुसार तुम्हारी सारी संपत्ति राजा के अधिकार में आ जायगी।"

यह सुनते ही शायलक की वह दशा हुई जैसे—काटो तो खून नहीं। क्योंकि बिना खून निकाले माँस का काटा जाना सर्वथा असंभव था। परन्तु प्रतिज्ञा में केवल आधा सेर माँस का ही उल्लेख स्पष्ट है। वहाँ खून का कोई प्रसंग आया ही नहीं। पोर्शिया ने अपनी बुद्धि की सूक्ष्मदर्शिता और अभिनव विचार-कौशल से एन्टोनियो की रक्षा की। वहाँ के उपस्थित सभी व्यक्ति इस युवक वकील की बुद्धिमत्ता की भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे। विचार-सभा आनन्द के कोलाहल से गूँज उठा। ग्रेसियनो से अब रहा नहीं गया। वह शायलक के प्रति व्यंग करता हुआ कह उठा—"सचमुच धर्मराज स्वयं विचार कर रहे हैं!"

शायलक के मन में आशा थी कि वह एन्टोनियो का अनिष्ट कर सकेगा। परन्तु उसकी इस आशा पर पानी फिर गया। वह अतिशय निराश होकर कातर स्वर में बोला—"मैं आधा सेर माँस नहीं चाहता। केवल मुझे तीन गुना रुपया दे दीजिये। मुझे कुछ और नहीं चाहिये।"

एन्टोनियो की विजय से बेसानियो अत्यन्त आनन्दित हो उठा। वह बड़ी शीघ्रता से शायलक को उसका मुँह माँगा देने गया। परन्तु पोर्शिया शायलक को अपने वश में करके यों ही छोड़नेवाली न थी। वह बेसानियो को रोककर बोली,—"घब-ड़ाओ नहीं! शायलक विधिसम्मत विचार चाहता है! मैं वैसा ही करूँगा!" उसने शायलक को पुकार कर कहा—"शायलक, तुम माँस काटने के लिए तैयार हो जाओ। याद रखना—एक बूँद भी खून निकलने न पाये। इसके सिवाय माँस की तौल के प्रति भी उचित ध्यान रखना! यदि उसकी तौल तनिक भी घट-

बढ़ गयी तो वेनिस के नियमानुसार तुम्हें प्राण-दण्ड मिलेगा और तुम्हारी सारी संपत्ति राजा की हो जायगी।"

धन और प्राण दोनों को जाते देख शायलक घबड़ा कर बोल उठा—"मैं कुछ भी सूद नहीं चाहता। केवल असल रुपया दे दीजिये—मैं चला जाऊँ।"

बेसानियो उसे तुरंत रुपया देने लगा। परन्तु पोर्शिया उसे रोककर शायलक से बोली—"शायलक! तुमको रुपया नहीं मिल सकता! तुम्हारे विरुद्ध मुझे कुछ कहना है। वेनिस के कानून के मुताबिक अगर कोई व्यक्ति किसी की हत्या की चेष्टा करता है तो उस व्यक्ति की संपत्ति का एक अंश अभियुक्त को मिलेगा और दूसरा अंश राजा को। इसके अतिरिक्त उसका जीवन भी राजा के हाथ में रहेगा। यदि राजा चाहते हैं तो उसे जीवन-दान दे सकते हैं। अब तक तुमने जो कुछ किया है उससे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि तुम्हारा आंतरिक अभिप्राय एन्टोनियो का विनाश करना ही था। इसलिए तुम्हारा धन और प्राण अब राजा के हाथ में है। यदि वे चाहते हैं तो तुम पर दया कर सकते हैं। अब तुम राजा के सम्मुख नतमस्तक होकर अपने जीवन के लिए प्रार्थना करो!"

वेनिस के राजा ने हँसकर कहा—"शायलक! ईसाइयों का हृदय तुम लोगों से उदार होता है। तुम्हारे कुछ कहने के पूर्व ही मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया है। किंतु तुम्हारी संपत्ति का आधा भाग राजकोष में सम्मिलित होगा तथा आधा एन्टोनियो को मिलेगा।"

परन्तु एन्टोनियो बहुत ही उदार था। उसने शायलक की संपत्ति का आधा भाग लेना स्वीकार नहीं किया और कहा—"मैं शायलक की संपत्ति लेना नहीं चाहता। वह मेरा अंश अपनी लड़की

तथा जमाई को लिख दे। जिससे वे शायलक की मृत्यु के बाद उस संपत्ति के अधिकारी हो सकें।"

एन्टोनियो के मित्र लोरेंझो का विवाह शायलक की पुत्री जेसिका से हुआ था। जेसिका ने अपने पिता की अनुमति के बिना उस ईसाई युवक से विवाह कर लिया था। इस कारण शायलक ने उसे अपनी संपत्ति से वंचित कर दिया था। शायलक को अब बाध्य होकर एन्टोनियो का प्रस्ताव स्वीकार करना पड़ा। एक तो उसकी प्रतिहिंसा चरितार्थ न हुई जिस कारण वह बहुत दुःखी था, फिर जब उसने देखा कि सारी संपत्ति दूसरों के हाथ चली गयी तब वह बहुत ही अधीर हो उठा। उसने कातर होकर वेनिस-राज से कहा, "मेरी तबीयत ठीक नहीं है। मुझे घर जाने की आज्ञा दीजिये। मेरी संपत्ति के इच्छा-पत्र प्रस्तुत हो जाने पर मेरे घर भेज दीजियेगा। मैं वहीं उन पर हस्ताक्षर कर दूँगा कि मेरी आधी संपत्ति मेरी लड़की को मिलेगी और शेष आधी वेनिस-राज को।"

राजा ने उसे घर जाने की अनुमति दी। उसने शायलक को यह भी कह दिया कि यदि वह अपनी निष्ठुरता पर दुःखित होता है और पवित्र ईसाई-धर्म को स्वीकार करता है तो उसकी आधी संपत्ति वेनिस के राज-कोष में नहीं मिला ली जायगी। शायलक इसी में अपनी भलाई जान कर चला गया।

वेनिस के राजा ने एन्टोनियो को मुक्ति दे दी और विचार समाप्त हो गया। उसने उस तरुण वकील की अनेक प्रशंसाएँ कीं तथा राज-भवन में कुछ दिन अतिथि बनकर रहने के लिए उसे निमंत्रित किया। परन्तु वकील-वेशी पोर्शिया राजा का निमंत्रण ग्रहण न कर सकी। वह जानती थी कि विचार समाप्त होते ही उसका पति बेसानियो बेलमान्ट के लिए रवाना हो जायगा और उसे उसके पति के पूर्व ही बेलमान्ट पहुँचना है। इसलिए

पोर्शिया राजा को अभिनन्दित करती हुई बोली—"महाराज की कृपा से मैं बहुत ही अनुगृहीत हूँ। परन्तु मेरा शीघ्र ही लौट चलना आवश्यक है। भविष्य में यदि महाराज की कृपा हुई तो अवश्य महाराज की सेवा में उपस्थित हो जाऊँगा।"

राजा इस पर कुछ दुःखित हुआ। फिर भी उसने एन्टोनियो से कहा—"तुम इस युवक वकील के निकट विशेष रूप से ऋणी हो। तुम इसे अवश्य उचित पुरस्कार देना!"

राजा अपने अनुचरों के साथ चला गया।

बेसानियो अभी तक पोर्शिया को पहचान न सका। उसने पोर्शिया से कहा—"महाशय, आज आप की कृपा से तथा आपके अद्भुत विचार-कौशल से मेरे मित्र की जान बची। शायलक के प्राप्य तीन हजार डूकट को आप ही ग्रहण करके हमें कृतार्थ कीजिये!"

एन्टोनियो बोला—"हम आपके निकट सदा कृतज्ञ रहेंगे और आपके इस महान उपकार को आजीवन न भूलेंगे!"

परन्तु पोर्शिया ने उन लोगों से धन न लिया। उसने कहा—"मैं यह कार्य करके बहुत ही सन्तुष्ट हूँ। मेरा संतोष ही सच्चा पुरस्कार है। मुझे कोई दूसरा पुरस्कार नहीं चाहिये।"

बेसानियो इस पर भी छोड़नेवाला न था। वह बार-बार कुछ लेने के लिए आग्रह करता गया। उसने कहा—"हम आपके परिश्रम का मूल्य नहीं दे रहे हैं। आप इसे पारिश्रमिक के रूप में न लीजिये। परंतु यह हमलोगों का कृतज्ञता का उपहार है—इसे आपको अवश्य स्वीकार करना पड़ेगा। आपको कुछ लेना ही होगा!"

जब बेसानियो बार-बार अनुरोध करता गया तब पोर्शिया को कुछ मजाक सूझा। उसने अपने पति से कुछ चातुरी करने की सोची, जिससे आगे चलकर अच्छा कौतुक हो और उसके

पति बेसानियो को लज्जित होना पड़े। उसने एन्टोनियो से उसके हाथों के दस्ताने माँगे और बेसानियो से उसकी अंगूठी! इस प्रकार की अद्भुत माँग से बेसानियो कुछ चिन्तित हुआ। वह आगा-पीछा करने लगा। क्योंकि यह उसकी पत्नी पोर्शिया की दी हुई अंगूठी थी, जिसे देते समय उसकी पत्नी ने कहा था, 'देखना यह अंगूठी किसी को न देना। सावधानी से रखना, खो न जाय।' बेसानियो ने भी उसके सम्मुख ऐसी प्रतिज्ञा की थी कि वह सदा उस अंगूठी को अपने पास रखेगा। बेसानियो बड़े असमंजस में पड़ गया। वह कुछ निश्चय न कर सका। पत्नी अथवा यह वकील दोनों में से किसी को अप्रसन्न करने की इच्छा उसे न हुई। फिर भी उसने कहा—"महाशय मुझे क्षमा कीजियेगा। यह अंगूठी मेरी पत्नी की दी हुई है। इसे मैं आपको देने में असमर्थ हूँ। मैं वादा करता हूँ, वेनिस नगर की सबसे अच्छी और कीमती अंगूठी आपको उपहार में दूँगा। केवल आप कृपाकर इसी की प्रार्थना न कीजिये!"

पोर्शिया मन ही मन हँसने लगी। वह अपनी चालाकी को सही उतरते देख उसी अंगूठी के लिए अकारण हठ करने लगी। परन्तु जब बेसानियो ने अँगूठी नहीं दी तब वह मानो कुछ अप्रसन्न होकर वहाँ से जाने लगी। जाते समय उसने कहा भी—"महाशय, किसी को कुछ माँगने के लिए बाध्य करने का तथा उसके कुछ माँगने पर उसे वह वस्तु न देने का सुन्दर पाठ मैंने आप लोगों से भली भाँति सीखा।"

इस पर एन्टोनियो बेसानियो से बोला—"भाई, तुम अपनी अंगूठी इन्हें दे दो। इन्होंने हमारा बड़ा उपकार किया है। इनके किये उपकार के आगे तुम्हारी अँगूठी तुच्छ है। इन्होंने मेरी जान बचायी है। कम से कम मेरे लिए तुम अपनी प्रियतमा के क्रोध की परवाह न करो।"

बेसानियो एन्टोनियो के कथन से कुछ लज्जित हुआ। उसने अपनी अंगूठी ग्रेसियनो के हाथ में देकर कहा—"तुम शीघ्र जाकर यह अँगूठी वकील को दे दो।"

ग्रेसियनो ने वैसा ही किया। केवल यही नहीं, उसने भी अपनी पत्नी की दी हुई अंगूठी मुहर्रिर-वेशी नोरिसा को दे दी। क्योंकि वह हर तरह से अपने प्रभु का अनुकरण करता था। पोर्शिया और नोरिसा कौशल से अपने-अपने पति से अंगूठी हथिया कर हँसने लगीं। फिर दोनों सखियों ने निश्चय किया कि अपने-अपने पति के घर लौटने पर अंगूठी के लिए उन्हें खूब छकाया जायगा।

पोर्शिया और उसकी सखी नोरिसा बेलमान्ट में अपने घर लौट आयीं। उस समय उनका हृदय एक अनिर्वचनीय आनन्द से भरा हुआ था। परोपकार के कार्य करने से किसी के मन में जिस निर्मल सुख का अनुभव होता है वे उसी सुख का अनुभव करने लगीं।

आज उनके लिए सब कुछ सुन्दर था। चाँद सुन्दर था। उसकी उज्ज्वल किरणें और भी उज्ज्वल थीं। कुछ समय के लिए चाँद मेघों की आड़ में छिप गया और उनके घर के दीपक सहसा अधिक प्रकाशित हो उठे। दोनों सखियों ने आज उन दीपों को न जाने क्यों अधिक जगमगाते देखा। संगीत आज उनके लिए मुग्धकारी था। और दिनों से उसका सुर आज अधिक मधुर और अधिक मनोहर प्रतीत होने लगा।

वास्तव में कोई भी वस्तु संसार में न तो सुंदर है, न असुंदर। मानव की मानसिक स्थिति पर उसकी सुंदरता और असुंदरता निर्भर है।

कुछ समय पश्चात् बेसानियो, ग्रेसियन और एन्टोनियो बेलमान्ट पहुँचे। बेसानियो अपने मित्र एन्टोनियो को अपनी

पत्नी से परिचित कराने के लिए अपने साथ लाया था। बेसानियो ने अपनी पत्नी पोर्शिया से अपने मित्र का परिचय करा दिया। दोनों एक दूसरे से मिलकर बहुत सुखी हुए।

पोर्शिया और एन्टोनियो आपस में बातें करने लगे। न जाने क्यों इतने में नोरिसा और ग्रेसियनो में वाद-विवाद आरंभ हो गया। पोर्शिया सहसा इस झगड़े का कारण न समझ सकी। उसने उनसे पूछा, "तुम दोनों आपस में लड़ते क्यों हो?"

ग्रेसियनो यह सुनकर बोला कि नोरिसा की दी हुई अंगूठी ही इस कलह का कारण है। जिस अंगूठी पर लिखित था—"प्यार करना, याद रखना, भूलना नहीं"....इत्यादि! अब नोरिसा ग्रेसियनो से बोली, "अंगूठी का क्या दाम था, उस पर क्या लिखा था—जानने से क्या लाभ होगा? मैंने जब वह अंगूठी तुम्हें दी थी, उस समय क्या कहा था? तुमने भी कौन सी प्रतिज्ञा की थी? तुमने तो कहा था कि जीवन भर उस अंगूठी को अपने साथ रखोगे! परंतु कहाँ है वह अंगूठी? तुमने अवश्य किसी स्त्री को वह अंगूठी दी है!"

ग्रेसियनो बोला, "मैं सौगंध खाकर कहता हूँ, मैंने वह अंगूठी एक पुरुष को दी है जिस वकील ने महाशय एन्टोनियो की जान बचायी है, वह उसी वकील का मुहर्रिर था तथा उसके साथ विचार-सभा में आया था। जब उसने मुझसे वह अंगूठी अपने पारिश्रमिक के रूप में माँगी तब मैं देने से इनकार न कर सका!"

अब पोर्शिया बोली, "देखो ग्रेसियनो, फिर भी दोष तुम्हारा ही है। क्या अपनी पत्नी का दिया हुआ प्रथम उपहार किसी दूसरे को दे देना उचित है? मैंने भी उपहार स्वरूप एक अंगूठी बेसानियो को दी है। वह तो सारे संसार के बदले में भी उस अंगूठी को किसी के हाथ नहीं दे सकता! उसने ऐसी ही प्रतिज्ञा की है। ग्रेसियनो, तुमने अपनी पत्नी को बहुत कष्ट दिया

है। यदि मुझे ऐसा कष्ट बेसानियो देता तो मैं अवश्य पागल हो जाती।"

अब ग्रेसियनो ने अपने को दोष से मुक्त करने के लिए कहा, "श्रीमती जी! बेसानियो ने भी ऐसा ही किया है। उन्होंने भी अपनी अंगूठी वकील को दी है!"

पोर्शिया यह सुनते ही सहसा क्रुद्ध हो उठी और रोने-पीटने लगी। उसने मिस कर के कहा, "नोरिसा ठीक कह रही है! अवश्य बेसानियो ने मेरी अंगूठी किसी नारी को दी है।"

बेसानियो इसका प्रतिवाद कैसे कर सकता था। वह बहुत दुःखित और लज्जित होकर अपनी प्रियतमा को यह कह कर मनाने लगा कि उसने वह अंगूठी किसी नारी को नहीं, बल्कि उसके मित्र की जान बचाने वाले वकील को दी है, क्यों कि वह कोई दूसरा उपहार लेने को तैयार न था। बेसानियो ने कहा कि उसने अंगूठी देने से बार-बार इनकार किया था पर अंत तक असमंजस में पड़कर लाचारी से अंगूठी देनी ही पड़ी। वह पोर्शिया को यह कह कर भी मानने लगा कि यदि पोर्शिया स्वयं वहाँ उपस्थित होती तो हो सकता था वह स्वयं अंगूठी देने के लिए अनुरोध करती!

जब दोनों दंपतियों में इस प्रकार का वाद-विवाद चल रहा था तब एन्टोनियो स्वयं दुःखी होकर कहने लगा, "हाय! मैं ही इस कलह का कारण हूँ!"

पोर्शिया एन्टोनियो को सांत्वना देती हुई बोली, "आप इसलिए चिंतित न हों।"

एन्टोनियो इस पर बोला, "मैंने एकबार मित्र के लिए अपने को बंधक रखा था और उस वकील की दया से मेरी जीवन-रक्षा हुई। इस कारण मैं उस वकील का पक्ष लेता हूँ और मित्र के लिए फिर अपने को आपके निकट बंधक रखता हूँ। मैं निश्चय कर कहता हूँ, मेरे मित्र से कभी कोई अविश्वास का काम न होगा।"

एन्टोनियो की बातों को सुनकर पोर्शिया हँस कर बोली, "तो महाशय, आप अपने मित्र के लिए बंधक पड़ते हैं! ठीक है! मैं आपके मित्र को फिर से एक अंगूठी देती हूँ उसे सुरक्षित रखने को कहियेगा।"

पोर्शिया ने एक अंगूठी बेसानियो की उँगली में पहना दी। यह वही अंगूठी थी जिसे बेसानियो ने वकील को दिया था। बेसानियो उस अंगूठी को देखते ही आश्चर्य-चकित हो उठा। वह अपने को रोक न सका। उसने पोर्शिया से उस अद्भुत रहस्य का भेद पूछा।

पोर्शिया ने सब-कुछ खोलकर कहा। तब उस रहस्य का मर्म सब कोई समझ गये। बेसानियो का हृदय आनंद से नाच उठा क्यों कि उसी की पत्नी की चतुराई से उसके मित्र को प्राण-रक्षा हुई। इस पर सभी प्रसन्न हुए।

उन सब की प्रसन्नता और भी बढ़ी जब पोर्शिया ने एन्टोनियो को उसके जहाजों के लौट आने का समाचार सुनाया। जहाज के लौट आने की चिट्ठियाँ संयोगवश पोर्शिया को मिली थीं। वास्तव में वे जहाज कुछ विलंब से बन्दरगाह को लौटे थे। उनके डूब जाने का समाचार गलत था। फिर पोर्शिया और नेरिसा का वेश बदलकर विचार-सभा में उपस्थित होना और विचार-कार्य में अद्भुत कौशल दिखाना सदा के लिए मनोरंजन के साधन बन गये।

मैकबेथ

बहुत दिन हुए, उस समय स्काटलैंड के सिंहासन पर डानकान आसीन था। उसके समान निर्विरोधी शासक आज तक कोई न हुआ। उसी के राज्यकाल में मैकबेथ नाम का एक प्रतिष्ठित सामंत था। ऐसे सामंतों को 'लार्ड अथवा 'थेन' कहते थे। मैकबेथ केवल एक प्रतिष्ठित 'थेन' ही नहीं, बल्कि डानकान का निकट संबंधी भी था। राजा के साथ खून का संबंध रहने से राजसभा में उसका विशेष मान था। सिवाय इसके वह बहुत ही साहसी और रणनिपुण योद्धा भी था।

जिस समय कहानी आरंभ होती है, उस समय मैकबेथ और बैंको—यह भी एक साहसी सेनापति था—नार्वे के राजा तथा एक दूसरे विद्रोही दल की सम्मिलित सेना को हरा कर रणक्षेत्र से राजधानी को लौट रहे थे। उनके रास्ते में एक मरुभूमि पड़ी। वे जब उस मरुभूमि को पार करने लगे तब तीन बूढ़िया डायनें आकर उनका रास्ता छेंक कर खड़ी हो गयीं। वे तीनों देखने में तो औरतों सी लगती थीं परंतु उनके मुख पर इतना अधिक लोम था और वे ऐसे अद्भुत पहिनावे पहनी थीं कि वे संसार के प्राणियों से अलग कुछ अन्य जीवों के समान लगती थीं।

मैकबेथ उन्हें देख कर कुछ कहने जा रहा था। परंतु वे संकेत कर उसे कुछ बोलने से मना किया। मैकबेथ चुप हो गया। अब उन डायनों में से एक ने मैकबेथ को संबोधित कर कहा—"ग्लेमिश के थेन!" दूसरी डायन ने तब मैकबेथ को पुकार

कर कहा, "कडर के थेन !" मैकबेथ ये संबोधन सुन कर विस्मित हुआ। परन्तु वह और विस्मित हुआ जब तीसरी डायन ने उसे "भविष्य के सम्राट" कह कर पुकारा। वास्तव में यह आश्चर्य-चकित करनेवाली बात थी। क्योंकि राजकुमारों के जीते जी यह भविष्यवाणी कैसे सफल हो सकती थी! इस भविष्यवाणी का सफल होना याने मैकबेथ का सम्राट बनना उस परिस्थिति में सर्वथा असंभव था।

वे तीनों डायनें अब मैकबेथ के साथी को बैंकी तरफ देखती हुई पहले के ढंग से बोलीं—"तुम मैकबेथ से छोटे हो, फिर भी बहुत बड़े। तुम मैकबेथ के समान सुखी नहीं हो—फिर भी उससे अधिक सुखी होगे। तुम स्वयं सम्राट नहीं बनोगे परन्तु तुम्हारे संतान सम्राट बनेंगे।"

तीनों डायनें दोनों सेनापतियों को इतना कह कर अदृश्य हो गयीं। दोनों सेनापतियों ने अनुमान किया कि ये वही तीनों डायनें हैं जो मनुष्य के भविष्य का हाल बता सकती हैं।

वे दोनों इस घटना के घटने पर इतने विस्मित हुए कि उसी स्थान पर कुछ देर तक खड़े रह गये। जब वे खड़े-खड़े अपने-अपने अदृष्टों पर विचार कर रहे थे तब वहाँ उनके निकट कुछ दूत पहुँचे। ये दूत सम्राट डानकान द्वारा भेजे गये थे। उन दूतों ने आकर मैकबेथ से समाचार कहा कि सम्राट डानकान ने मैक-बेथ की वीरता से प्रसन्न होकर उसे 'कडर के थेन' की उपाधि दी है। डायन द्वारा कही गयी भविष्यवाणी को इतना शीघ्र सफल होते देख मैकबेथ सहसा अचंभित हो उठा और मन ही मन तीसरी डायन की भविष्यवाणी को सोचने लगा। क्या आगे चल कर सचमुच वह स्काटलैंड का सम्राट बनेगा। उसने मन में फिर सोचा, ऐसा हो भी सकता है जब एक का कहा हाथोंहाथ ठीक निकला।

मैकबेथ ने बैंको से कहा, "तुम्हारे वंशवाले एक दिन स्काटलैंड के सम्राट बनेंगे—क्या तुम इसका विश्वास नहीं करते ? अभी देखा न, मेरे बारे में उनकी भविष्यवाणी कैसी सही निकली।"

बैंको ने मैकबेथ को उन डायनों की बातों पर विश्वासयुक्त देख कर उसे सावधान किया और कहा, "मैकबेथ, डायनों की बातों पर विश्वास न करो। हो सकता है एकदिन उनकी भविष्यवाणी तुमको राज्य-लोभी बना दे।"

बैंको ने शुरू में ही मैकबेथ को सावधान करना चाहा परंतु मैकबेथ पर उसकी बातों का तनिक भी प्रभाव न पड़ा। डायनों की बातें मैकबेथ के मन में स्थायी रूप से बैठ गयीं। उसके मन में एक विश्वास पैदा हो गया कि वह अवश्य एक दिन स्काटलैंड का सम्राट बनेगा। यह विश्वास उसके मन में दिनोंदिन वर्धित होता गया और अंत तक यह उसके मन की एक लालसा बन गया। अब उसका एकमात्र लक्ष्य हो गया स्काटलैंड का सिंहासन !

मैकबेथ पहले से ही उच्चाकांक्षी था। अब इस भविष्यवाणी ने उसकी उच्चाकांक्षा की अग्नि में घृताहुति का काम किया। उसकी महत्त्वाकांक्षा अपनी सीमा पार कर गयी। मैकबेथ ने इस भविष्यवाणी के बारे में सब-कुछ अपनी पत्नी से कहा। उसकी पत्नी भी अपने मन में उच्चाकांक्षा रखती थी और वह भी मैकबेथ से अधिक ! मैकबेथ की पत्नी अपनी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए किसी अन्याय कार्य से भी नहीं बाज आती थी। साथ ही साथ उसका हृदय भी कठोर और सबल था। परंतु मैकबेथ का हृदय उसकी तुलना में बहुत ही दुर्बल था। अपनी महत्त्वाकांक्षा को चरितार्थ करने के लिए वह कभी खून बहाने को तैयार न था। परन्तु उसकी पत्नी उसे निरन्तर समझाने लगी कि बिना खून

बहाये राज्य मिलना असम्भव है। वर्तमान सम्राट डानकान की हत्या करनी ही पड़ेगी। कोई दूसरा उपाय नहीं है।

जब मैकबेथ और उसकी पत्नी के मन में विभिन्न विरोधी विचारों की उथल-पुथल मची हुई थी उसी समय एक दिन सम्राट डानकान मैकबेथ से मिलने आया। मैकबेथ ने लड़ाई में जो वीरता दिखायी थी उसी के कारण उसे सम्मानित करने के लिए सम्राट का उसके घर आना हुआ था। सम्राट के साथ उसके दो लड़के मैलकम और डोनलबेन भी आये थे। इसके अतिरिक्त सम्राट के साथ अनेक अनुचर और अनेक सामंत आये थे। मैकबेथ और उसकी पत्नी के लिए यह एक स्वर्ण अवसर था।

मैकबेथ और उसकी पत्नी ने उन अतिथियों का खूब आदर-सत्कार किया। मैकबेथ की पत्नी भलीभाँति जानती थी कि किस प्रकार से हँसी की ओट में क्रूरता छिपायी जाती है। मित्रता का मुलायम पर्दा सचमुच इतना मोटा होता है कि उसके पीछे सारी की सारी विश्वासघातकता छिपायी जा सकती है। यही कारण है कि एक विश्वासघाती देखने में अधिक सरल, अधिक निर्दोष और अधिक पवित्र लगता है। इसी प्रकार मैकबेथ की पत्नी देखने में तो पुष्पों सी निर्मल थी परंतु उसके अंतर में पराग के स्थान में विष छिपा था।

सम्राट डानकान और उसके सभी अनुचर मैकबेथ के आदर-सत्कार से तुष्ट हुए और भोजन-आदि समाप्त होने के बाद आराम से सो गये। क्यों कि वे लंबी यात्रा के बाद बहुत थके हुए थे। सम्राट जिस कमरे में सोया वहाँ उसकी रक्षा में उसके दो सैनिक नियुक्त हुए। वे भी थकावट के मारे सो गये और न जाने क्यों खूब गहरी नींद सोने लगे।

आधी रात! आधी पृथ्वी पर के सारे अधिवासी सो रहे थे। वे इस प्रकार नींद के अथाह समुद्र में डूबे हुए थे कि उन्हें

देखने से ऐसा लगता था कि वे अब जीवित नहीं हैं। फिर भी उस समय कुछ प्राणी जाग रहे थे। परंतु वे हत्यारों और चोरों के अतिरिक्त और क्या हो सकते थे! आधी रात के इन जागनेवालों में से एक मैकबेथ की पत्नी भी थी। वह स्वयं सम्राट की हत्या का उपाय सोचने लगी! क्योंकि उसका पति सचमुच दयालु और उदार था। एक निर्दोष व्यक्ति का खून बहाना उसके लिए असंभव था। मैकबेथ की पत्नी जानती थी कि उसके पति में भी कूट-कूट कर उच्चाकांक्षा भरी हुई है परंतु उस उच्चाकांक्षा को सफल बनाने के लिए उच्चकोटि का पाप वह नहीं कर सकता; फिर भी मैकबेथ की पत्नी ने हार न मानी। वह बार-बार अपने पति को समझाती गयी। वास्तव में दुष्टों की बहकानेवाली बातों में एक ऐसा जादू छिपा रहता है कि अच्छे-अच्छे विचारवाले मनुष्य भी उनके जालों में तुरंत फँस जाते हैं। मैकबेथ की भी वही दशा हुई। वह अपनी पत्नी की बातों में आ गया। वह अपनी पत्नी की बुरी प्ररोचना से सम्राट की हत्या कर देने को राजी हो गया। फिर भी मैकबेथ पर उसकी पत्नी विश्वास न कर सकी। वह स्वयं सम्राट की हत्या करने को चली। उसने सम्राट के कमरे में घूस कर देखा कि सम्राट के दोनों शरीर-रक्षक उसकी दी हुई मदिरा पीकर इतनी गहरी नींद सो रहे हैं—मानो उनमें जीवन का कुछ भी अवशेष नहीं है। छुरा हाथ में लिये मैकबेथ की पत्नी सम्राट के पलँग के पास जाकर खड़ी हो गयी। परन्तु वह हत्या कर न सकी। उसका हाथ ढीला पड़ गया। न जाने क्यों सोये हुए सम्राट के मुख पर उसे अपने पिता के मुख की छाया दिखाई पड़ी। वह अपने पति के पास भाग चली।

इधर मैकबेथ का मन भी अधीर हो उठा था। हत्या करने के लिए आवश्यक दृढ़ता जो उसकी पत्नी ने उसके मन में ला दी थी—धीरे-धीरे जाती रही। सम्राट उसका निकट सम्बन्धी था—

फिर उसका अतिथि। अतिथि की हत्या करना बहुत ही निंदित कार्य है। सम्राट डानकान के समान दयावान और स्नेहशील शासक सभी प्रजाओं का प्रिय है। प्रजाएँ ऐसे समाट की हत्या का प्रतिशोध अवश्य लेंगी। फिर ऐसे शासकों की रक्षा तो स्वयं परमेश्वर करते हैं। मैकबेथ मन ही मन बहुत घबड़ा उठा। यदि उसके घर में सम्राट की हत्या होती है तो सभी उस पर संदेह करेंगे और उसका सम्मान, उसकी प्रतिष्ठा—सब कुछ छीने जायेंगे।

मैकबेथ की शुभ बुद्धि धीरे-धीरे लौटने लगी। परन्तु इतने में उसकी पत्नी वहाँ आ पहुँची। वह आकर पुनः अपने पति के कानों में अपनी बुरी मन्त्रणा भरने लगी। वह अपने पति से कहने लगी—"कार्य बहुत ही आसान है। थोड़े ही दिनों में लोग सब-कुछ भूल जायेंगे और राज्य पर तुम्हारा एकाधिकार स्थापित हो जायगा।

मैकबेथ की पत्नी बार-बार उसे उत्तेजित करने लगी। निरंतर उभाड़ने के कारण मैकबेथ का हृदय पुनः कठोर और लोलुप हो उठा। वह स्वयं सम्राट की हत्या करने के लिए सम्राट के शयन-कक्ष में घूसा। जब वह हत्या करने के लिए जा रहा था उसी समय एक बड़ी ही विचित्र घटना घटी। उसने अपने सामने एक छुरे को शून्य में लटकते देखा, जिसकी नोक से खून की बूँदे टपक रही थीं। उसने उस छुरे को पकड़ने के लिए हाथ उठाया परन्तु उसी क्षण वह छुरा अदृश्य हो गया। भयानक भय से उसका शरीर रोमांचित हो उठा। परन्तु धीरे-धीरे वह फिर अपने मन में साहस लाया और सोये हुए सम्राट के समीप पहुँचा। अब केवल एक ही आघात करना था। मैकबेथ ने अपने हृदय को लोहे के समान कठोर बना कर वैसा ही किया। पलकों में सब कुछ समाप्त हो गया।

सम्राट के पास सोये हुए रक्षक डरावने सपने देखकर नींद

में चौंक उठे और बड़बड़ाने लगे—'हत्या ! हत्या !' दोनों की नींद टूटी। वे परमेश्वर की प्रार्थना कर पुनः सो गये।

मैकबेथ दौड़ता हुआ अपने कमरे की ओर भाग चला। भागते हुए जाते समय उसने अपने कानों स्पष्ट सुना कि कोई कह रहा है—"अब सोना नहीं—ग्लेमिश ने नींद की हत्या की है। कडर आज से कभी न सोयेगा। मैकबेथ नहीं सोयेगा।'

भय से व्याकुल होकर मैकबेथ अपने कमरे में पत्नी के पास आया। उसके हाथ में खून से भरा हुआ छुरा ज्यों का त्यों धरा हुआ था। मैकबेथ की पत्नी ने अपने पति से हाथों को धोने को कहा और स्वयं उस छुरे को सम्राट के कमरे में सोये रक्षकों के पास जाकर रख आयी। इस प्रकार से वे रक्षक दोषी प्रमाणित हो सकते थे।

सवेरा होते ही उस हत्या का समाचार सभी ने सुना। मैकबेथ तथा उसकी पत्नी ने शोकातुर होने का बड़ा ही सुन्दर अभिनय किया। परन्तु सभी के संशय उन्हीं पर केंद्रित हुए। सम्राट के शरीर-रक्षकों पर इस हत्या का विशेष प्रमाण मौजूद था। लेकिन कोई यह न समझ सका कि सम्राट को मार कर उन रक्षकों का कौन-सा स्वार्थ सिद्ध हुआ है।

सम्राट डानकान के दोनों लड़के भाग गये। मैलकम भाग कर इंगलैंड चला गया और डोनालबेन ने भाग कर आयरलैंड में शरण ली।

दोनों कुमारों की अनुपस्थिति पर सम्राट का निकट सम्बन्धी मैकबेथ ही गद्दी पर बैठाया गया। डायनों की भविष्यवाणी सफल हुई। मैकबेथ स्काटलैंड का अधीश्वर बना।

स्काटलैंड का सिंहासन पाकर भी मैकबेथ तथा उसकी पत्नी की चिंता दूर न हुई। डायनों ने कहा था कि बैंको के वंशवाले अंत तक स्काटलैंड के अधिकारी बनेंगे। यह चिंता उनके निरंकुश सुख

पर मानो अंकुश के समान थी। अब वे डायनों की भविष्यवाणी को विफल करने के लिए तत्पर हो उठे उन्होंने बैंकों तथा उसके पुत्रों को इस संसार से हटाना चाहा।

इसी अभिप्राय से मैकबेथ ने अपने प्रासाद में एक निशा-भोज का आयोजन किया और अपने दरबार के सभी सम्मानित प्रधानों के निकट निमंत्रण भेजा। अब जिस रास्ते से बैंको राज-प्रासाद में आनेवाला था उसी रास्ते में मैकबेथ के द्वारा नियुक्त घातक बैंको की प्रतीक्षा कर लगे। बैंको जब उसी रास्ते से आया तब उन हत्यारों ने उसकी हत्या कर दी। परन्तु उसका पुत्र फ्लोयंस भाग निकला। आगे चल कर इसी फ्लीयंस के सन्तान स्काटलैंड के सम्राट होते हैं।

इधर निमंत्रण-सभा में मैकबेथ और उसकी पत्नी आतिथेयता की पराकाष्ठा दिखाने लगे। उनके भद्रोचित व्यवहार से सभी सन्तुष्ट हुए। मैकबेथ बैंको की अनुपस्थिति पर दुःख प्रकट करने के मिस कर के कहने लगा—"यदि आज हमारे मित्रवर बैंको यहाँ उपस्थित होते तो हम अधिक प्रसन्न हो सकते।" ज्यों ही मैकबेथ के मुख से ये शब्द निकले त्यों ही बैंको का प्रेतात्मा भोज-सभा में उपस्थित हो गया। उसे कोई और नहीं देख सकता था। वह केवल मैकबेथ की आँखों के आगे विद्यमान था। मैकबेथ उसे देखते ही बहुत भयभीत हुआ। उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। वह एकटक उस प्रेतात्मा को देखने लगा।

मैकबेथ के सिवाय और किसी ने उस प्रेतात्मा को नहीं देखा। सभी निमंत्रित व्यक्ति मैकबेथ को सहसा भयभीत होते देख आश्चर्य-चकित हुए। फिर मैकबेथ भी न जाने हवा से क्या-क्या बातें करने लगा। मैकबेथ की पत्नी घबड़ायी। यदि मैकबेथ लोगों के सामने अंड-बंड कुछ कह दे तो सारा परदा खुल

जायगा। इसलिए उसकी पत्नी ने शीघ्र ही उसे पकड़ कर बैठाया और मैकबेथ की अस्वस्थता का कारण दिखा कर अतिथियों को विदा किया।

फ्लीयंस के भाग जाने से मैकबेथ और उसकी पत्नी बहुत ही चिंतित हुए और वे एक प्रकार से भविष्य के बारे में निराश हो उठे। क्योंकि फ्लीयंस के जीवित रहते उनके वंशवाले कैसे सिंहासन पर बैठ सकते थे। डायनों ने कहा था बैंको के वंश-वाले भविष्य के सम्राट होंगे। तरह-तरह की अशुभ और बुरी चिंताएँ मैकबेथ तथा उसकी पत्नी को दिन-रात सताने लगीं। वे दोनों प्रायः प्रतिदिन तरह-तरह के काल्पनिक और डरावने सपने देखने लगे।

अन्त तक मैकबेथ ने मन में ठाना कि वह पुनः डायनों के निकट जाकर अपने भविष्य का पूरा हाल भली-भाँति मालूम कर लेगा। मैकबेथ उसी स्थान पर गया जहाँ वे तीनों डायनें पहले पहल मिली थीं। वहाँ पर वह उनको खोजने लगा। आखिर-कार वे एक गुफा के भीतर मैकबेथ को मिलीं। वे उस समय एक बड़ी कड़ाही में न जाने क्या-क्या अद्भुत वस्तुएँ मिलाकर अपनी जादूगरी का मसाला पका रही थीं। वे उसी प्रस्तुत मसाले के बल भूतों को बुलाती थीं और वे भूत आकर उनके प्रश्नों के उत्तर देते थे।

मैकबेथ ने एक कवचधारी मस्तक देखा। उस मस्तक ने मैकबेथ को सावधान कर कहा—"मैकडफ से होशियार रहना।" उसके बाद एक खून से लथपथ बच्चा कड़ाही से उठ कर बोला—"नारी ने जिसका जन्म दिया है उससे तुम न डरो।" मैकबेथ ने अपने मन में सोचा—मैकडफ भी किसी नारी से उत्पन्न हुआ है; तब उससे डरना क्या है। अब तीसरा प्रेत माथे पर मुकुट धारण किये एक बच्चे के रूप में दिखाई पड़ा। उसने

कहा—"सुनो मैकबेथ, जब तक बरनम का जंगल तुम्हारे विरुद्ध उठकर स्वयं डानसिनन की पहाड़ियों तक चला न आवे तब तक किसी भी रणक्षेत्र में तुम नहीं हारोगे।" मैकबेथ ये भविष्य-वाणियाँ सुन कर बहुत ही उत्साहित हो उठा। उसने कहा—"समूचे जंगल को कौन उखाड़ कर लायगा। और एक जंगल भी क्या कोई जीवित प्राणी है कि स्वयं चलने लगेगा। अब मैं किसी से नहीं डरूँगा!"

मैकबेथ इतने पर भी पूर्ण रूप से निःसंदेह न हो सका। उसने डायनों से प्रश्न किया—"क्या बैंको के वंशधर स्काटलैंड के सम्राट बनेंगे?" लेकिन उसे इस प्रश्न का उत्तर नहीं मिला। उसके सामने से सभी जादूई दृश्य अन्तर्हित हो गये। केवल आठ राजाओं की परछाईं सी मूर्त्तियाँ उसके सामने से गुजरीं। सब के पीछे खून से लथपथ बैंको दिखाई पड़ा। उसके हाथ में एक आईना था। उसी आईने में छाया-सी मूर्तियाँ दिखाई पड़ीं। बैंको इन मूर्त्तियों को दिखा कर सहसा हँस पड़ा। मैकबेथ समझ गया कि ये बैंको के वंशधर हैं जो भविष्य के सम्राट होंगे।

डायनों की गुफा से बाहर आकर मैकबेथ ने सुना कि—'मैकडफ भाग कर इंगलैंड को चला गया है। वहाँ वह मैलकम के साथ मिल कर सेना संगठित कर रहा है।' यह समाचार पाते ही मैकबेथ जल-भुन उठा। उसने भयानक क्रोध के कारण विचार-रहित हो कर मैकडफ' के परिवार के सभी की हत्या कर दी!

मैकबेथ के निष्ठुर आचरण से उसके राज्य के सभी प्रधान सरदार दुःखी हुए और वे उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचने लगे। बहुत-से सरदार भाग कर मैलकम और मैकडफ से जा कर मिले। अब मैलकम और मैकडफ उचित अवसर जान कर स्काटलैंड की ओर अग्रसर हुए।

मैकबेथ की पत्नी की आँखों से तो पहले ही नींद छीनी गयी थी। वह केवल डरावने सपने देखा करती थी। धीरे-धीरे वह पागल हो गयी और एक दिन उसने आत्महत्या कर ली। अब मैकबेथ अकेला था। जीवन के लिए अब उसके मन में कोई मोह नहीं था। वह दिन-रात अपनी मृत्यु की कामना करने लगा। जीवन उसके लिए नीरस और दुःखदायी हो गया। उधर मैलकम और मैकडफ की सम्मिलित सेना भी स्काटलैंड की ओर अग्रसर हो रही थी। मैकबेथ ने डायनों की बातों पर विश्वास कर किले का फाटक बन्द कर दिया। क्यों कि उसे अभी तक विश्वास था कि जो नारी द्वारा उत्पन्न हुआ है वह उसका अनिष्ट नहीं कर सकता। आखिरकार मैलकम और मैकडफ भी तो नारी के जने थे।

मैकबेथ अस्वाभाविक मौन धारण कर शत्रुओं की प्रतीक्षा करने लगा। इतने में एक दिन किसी सैनिक ने आकर मैकबेथ से कहा कि उसने पहाड़ियों पर से देखा है—बरनम का जंगल ऊपर को चला आ रहा है। मैकबेथ यह अद्भुत और असम्भव समाचार पाकर चौंक पड़ा। जीवन के लिए उसकी सारी तृष्णा पहले ही खत्म हो चुकी थी। फिर भी अपने कर्त्तव्य का पालन करना पड़ा। वह शत्रुओं का मुकाबला करने के लिए बाहर आया।

मैकबेथ का दूत जो समाचार लाया था वह आंशिक सत्य था। मैलकम तथा मैकडफ के सैनिक जब किले की ओर अग्रसर हो रहे थे तब उन्होंने अपने छिपाव के लिए अपने हाथों में जंगली पेड़ों की पत्तियों से भरी डालियाँ ले ली थीं। शत्रुओं के निकट सेना की प्रकृत संख्या को गुप्त रखना ही उनका उद्देश्य था। परन्तु ऊँची पहाड़ियों पर से वे चलते हुए जंगल के समान

दिखाई पड़े ! मैकबेथ डायनों की भेदभरी बातों के चक्कर में पड़ कर अपनी आँखों से धोखा खा गया। उसका दिल टूट गया।

फिर भी मैकबेथ एक साहसी सेनापति था। वह पूर्ण पराक्रम के साथ शत्रुओं से लड़ने लगा। लड़ते-लड़ते वह एक बार मैकडफ के सामने पड़ गया। मैकडफ को देखते ही मैकबेथ का सारा उत्साह मानों चलता बना। डायनों ने उसे मैकडफ से सतर्क रहने के लिए कहा था। वह बहुत ही घबड़ा उठा। लेकिन मैकडफ उसके सम्मुख ही विद्यमान था। मैकबेथ को बाध्य होकर उससे लोहा लेना पड़ा। मैकबेथ मन ही मन चंचल हो उठा था। उसने मैकडफ से कहा कि उसका जीवन अभिमंत्रित है—वह मंत्रों द्वारा सुरक्षित है। जो नारी से पैदा हुआ है वह उसे नहीं मार सकता।

इस पर मैकडफ हँसता हुआ बोला—"मैकबेथ ! फिर भी मरने के लिए तैयार हो जाओ ! मेरा जन्म स्वाभाविक रूप से नहीं हुआ था। गर्भवास पूर्ण होने के पहले ही माँ की कोख चीर कर मैं बाहर निकाला गया था।

यह सुनते ही मैकबेथ की आँखों के सामने अँधेरा छा गया, वह भयानक भय से काँप उठा और बोला—"हाय, मैंने क्यों डायनों की बातों में आया था ! कोई भी मेरे समान भूत-प्रेतों की बातों को कभी भी न सत्य समझना। उनकी बातों के सदा दो अर्थ होते हैं। मैं अब नहीं लड़ूँगा।"

मैकडफ बोला—"ऐसा ही हो। हम तुझे पिंजड़े में बन्द कर लोगों को दिखायेंगे। अगर जीना चाहता है तो इसी प्रकार से जीना होगा।"

मैकबेथ बोला मैं लड़ूँगा—"मुझे मरना ही क्यों न पड़े। पराधीन होकर मैं जीवित रहना नहीं चाहता।"

वे पुनः लड़ने लगे। अंत में मैकडफ के हाथों मैकबेथ की मृत्यु हुई।

निर्विरोधी सम्राट डानकान का पुत्र मैलकम स्काटलैंड के सिंहासन पर बैठा। लोग उसका दीर्घ जीवन कामना करने लगे।

राजा लीयर

स्नेह !

कितना मधुर और मनोरम है यह शब्द ! मानो विश्व-संसार का सारा पवित्र जादू इस छोटे से शब्द में निहित है । फिर माँ-बाप के प्रति संतान का स्नेह—इसकी तुलना ही कहाँ है ? विगत युग के अनेक कवियों ने चाहा—परन्तु मानव-सम्पर्क के स्वर्गीय राग के इस कोमलतम और मधुरतम झंकार—स्नेह को रूपायित करने का छन्द उनके पास था ही कहाँ ? वर्तमान और आगामी काल के कवियों को भी हार माननी पड़ेगी । माँ-बाप के प्रति संतान का स्नेह है वसंत के मृदु मलय-समीर के विलम्बित प्रवाह के समान मधुर और प्रभात-कालीन सूर्य के समान जीता-जागता अनुपम सत्य । भाषा इस स्नेह के वर्णन में कभी भी पार नहीं पा सकती । ध्यानमग्न मौनता की परिपूर्ण मर्यादा से यह स्नेह महिमामय है ।

एक बाप और बेटी की कहानी । बाप राजा था, नाम था लीयर । बेटी का नाम बहुत ही मीठा था—कारडिलिया । ऐसा मीठा नाम और ऐसी मीठी लड़की सम्भवतः कहीं और कभी न होगी । भोर में उगनेवाले उस जमजमाते तारे के समान सुन्दर और सुकुमार है उसका रूप !

राजा लीयर जब बहुत बूढ़ा हो गया—राज-काज का भार सँभालना जब उसके लिए असंभव-सा हो गया तब उसने मन ही मन माथे पर से राजपाट का बोझ उतार कर जीवन के बचे दो-चार दिनों को सुख और शांति से बिताने का निश्चय किया ।

परन्तु उसे कोई लड़का नहीं था जिसे वह सिंहासन सौंप सकता था। भगवान ने उसे केवल तीन लड़कियाँ दी थीं।

ये लड़कियाँ उसके बहुत ही लाड़-प्यार की थीं—मानो पसली की तीन हड्डियाँ। बूढ़ा राजा उनसे इतना प्यार करता था कि क्षण भर भी उनको अपने से दूर नहीं रख सकता था।

बूढ़े ने मन ही मन सोच रक्खा था कि अच्छे लड़के मिल जाने पर उनसे लड़कियों का विवाह कर देंगे और उनको अपने पास लाकर रखेंगे। अपने राज्य को भी उन्हीं में बाँट देने की इच्छा उसको थी।

इतने में दो लड़कियों का विवाह हो गया।

बड़ी लड़की का विवाह अलबानी वाले ड्यूक के साथ हुआ और मझली का कार्नवाल के ड्यूक के साथ।

छोटी अभी तक ब्याही नहीं थी। इसी का नाम कारडिलिया था। इसकी बातचीत चल रही थी। फ्रांस का राजा और बारगंडी का ड्यूक दोनों ही योग्य वर थे। दोनों ही देखने-सुनने में अच्छे और नेक थे। वे राजा लीयर के राजमहल में आकर ठहरे।

अब राजा लीयर ने सोचा कि उसकी तीन लड़कियों में राज्य बाँट दिया जाय। परन्तु, यह तो जानना चाहिये कि कौन लड़की उससे अधिक प्यार करती है। बूढ़े ने तीनों की परीक्षा लेने की सोची। उसने तीनों लड़कियों को बुलाया। जब वे आ गयीं तब उसने अपनी बेटियों से कहा—"देखो! अब मैं बूढ़ा हो चला, इतना बड़ा राज्य अब मुझसे संभाला नहीं जाता तुम बड़ी हो गयी हो, मैं चाहता हूँ अपना राज्य तुम में बाँट दूँ। परन्तु हाँ, यह बात मुझे जानने की इच्छा है कि तुम में से कौन मुझसे कैसा प्यार करती हो।"

बड़ी लड़की गोनेरिल के मन में मैल थी। वह मन ही मन चाहती थी कि कब बूढ़ा मर जायगा और सब-कुछ अपने हाथ

लगेगा। वह चाहती थी कि उसका पति सारे राज्य को अपने कब्जे में कर ले। राजा के मुँह से ऐसी बात सुन कर उसके मुँह में पानी भर आया।

राजा लीयर ने सब से पहले अपनी बड़ी लड़की से यह बात पूछी। वह चालाक लड़की बूढ़े पिता के इस प्रश्न को सुन कर बोली—"पिता जी! यह भी आप पूछ रहे हैं। आप मुझे इतने अच्छे लगते हैं कि उसे मैं कैसे कह सकती हूँ। थोड़े से शब्दों में उसे कह कर पूरा नहीं किया जा सकता भाषा में इतनी शक्ति कहाँ है? आपके प्रति मेरी कैसी ममता है? आपको मैं कितना चाहती हूँ? आँखों की रोशनी से, स्वतन्त्रता के सुख से भी बढ़ कर आपको चाहती हूँ जिन से जीवों के जीवन सुखमय और शांतिमय बनते हैं। सुन्दरता, स्वास्थ्य, ऐश्वर्य सम्मान—सब से बढ़ कर आपकी ममता मेरी प्यारी है। मैं केवल आपको ही चाहती हूँ।"

राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उसने तुरन्त अपने राज्य के तीन हिस्सों में से एक हिस्सा बड़ी लड़की को दे दिया।

अब मझली लड़की की बारी आयी! उसका नाम था रिगान। उससे भी यही प्रश्न पूछा गया कि पिता के प्रति उसके मन में कितना स्नेह है? उसने कहा—"पिताजी! यह तो मैं नहीं जानती कि आपके लिए मेरे मन में कितना स्नेह है। परन्तु दीदी से कहीं अधिक आपको मैं चाहती हूँ। आपके आगे संसार का कुछ भी नहीं है।"

अब आयी छोटी लड़की कारडिलिया की बारी, राजा जिसे स्वयं अधिक चाहता था। उसे देख कर राजा का मन स्नेह से भर गया। उसने कहा—"देखो बेटा! तुम मेरी आँखों की प्रसन्नता हो। राज्य के सब से उत्तम भाग तुम्हारे लिए सुरक्षित है। बोलो बेटा, तुम मुझसे कैसा प्यार करती हो।"

कारडिलिया कुछ बोल न सकी। उसके समान एक नेक

लड़की के मन में पिता के प्रति सच्चा स्नेह स्वाभाविक था। दिखावटी ढंग से बातें गढ़ने की शक्ति उसमें न थी। प्रशंसा अथवा वर्णना तो उस वस्तु की हो सकती है जिसमें मिलावट हो। वह चुपचाप खड़ी रही।

पिता ने फिर से पूछा—"चुपचाप क्यों खड़ी हो ?"

कारडिलिया बोली—"मुझे तो कुछ कहना नहीं है, पिताजी!"

—"कुछ भी नहीं ?"

—"नहीं पिताजी ! कुछ भी नहीं !"

—"ऐसा कभी नहीं हो सकता।" यदि बाहर कहती हो 'कुछ नहीं' तो मन में भी जरूर कुछ न होगा। क्या मुझसे प्यार नहीं करती ? ऐसा तो हो नहीं सकता। कहो, कुछ भी कहो !"

—"पिता जी ! यदि कहना ही पड़ा, तो बस इतना ही कहती हूँ कि आप से प्यार करती हूँ, इसे अपना धर्म जानकर—न तो उससे कम और न उससे अधिक।"

पिता के प्रति कारडिलिया के मन में सच्चा प्रेम था। वह अपने आप को जानती थी, अपने मन से परिचित थी। वह अपनी बहिनों को भी भली-भाँति पहचानती थी। वह जानती थी कि वे सदैव अपने मन में किस प्रकार पिता का अकल्याण चाहती हैं। पिता-माता के प्रति संतान का प्रेम संतान का धर्म है। परन्तु यह धर्म अब संसार में है ही कहाँ ? यदि इस पवित्र धर्म का कुछ भी अवशेष आज संसार में होता तो क्या कोई कन्या अपने ऐसे स्नेहमय पिता की मृत्यु-कामना कर सकती थी। इसलिए कारडिलिया बोली—'आप से प्यार करती हूँ इसे अपना धर्म जान कर।'

ऐसा उत्तर बूढ़े बाप को ठीक न जँचा। वह कारडिलिया से सब से अधिक स्नेह रखता था। उसने सोचा था, ऐसा प्रश्न सुनकर कारडिलिया के मनोभावों का उच्छ्वास उमड़ पड़ेगा। उसकी

भाषा से ऐसी स्फूर्ति टपकेगी जिसकी तुलना न होगी। बूढ़ा हो जाने पर मन की दशा ऐसी ही होती है। दो-चार मीठी बातें सुनने के लिए वह लालायित रहता है।

कारडिलिया की बातें सुन कर उसके मन को बहुत ठेस पहुँची। यह बात उसके मन में बैठ गयी कि कारडिलिया कभी भी उससे स्नेह नहीं करती। यदि वह सचमुच स्नेह करती तो क्या उसके लिए स्नेह के दो-चार मीठे शब्द कहना भी असंभव होता।

जिस लड़की के मन में उसके प्रति ममता न थी उस लड़की के लिए वह क्या कर सकता था? उसने उसी समय क्रोध में आकर आदेश दिया—"आज से तुम मेरी लड़की नहीं रही। मेरे यहाँ तुम्हारा कोई स्थान नहीं है।"

इतना कह कर राजा लीयर ने अवशिष्ट राज्य का बँटवारा भी दोनों बड़ी लड़कियों में कर दिया। उसने केवल शरीर-रक्षा के लिए अपने पास एक सौ सैनिक रखे और पारी-पारी से दोनों लड़कियों के यहाँ रहने का निश्चय किया।

जब बारगंडी के ड्यूक ने सुना कि राजा ने कारडिलिया को राज्य से वंचित किया है, तब उसने भी कारडिलिया की आशा त्याग दी। वह अपने देश को लौट गया। बारगंडी के ड्यूक के मन में राजकुमारी के साथ-साथ आधे राज्य का भी लोभ था। जब आधा राज्य ही हाथ न लगा तब केवल राजकुमारी को लेकर क्या होगा?

परन्तु फ्रांस का राजा नहीं लौटा। उसके मन में कारडिलिया के प्रति सच्चा प्रेम था। जब उसने कारडिलिया की ऐसी दुर्दशा देखी तब वह स्वयं आकर उससे मिला। उसने कारडिलिया से कहा—"मेरी कारडिलिया! तुम मेरे लिए इस संसार का श्रेष्ठ सम्पद हो। इस धरती पर यदि तुम्हारे लिए कहीं स्थान न हो तो मेरे हृदय में है। तुम्हारे पास कुछ नहीं है तो क्या, मेरे हृदय-

सिंहासन पर तुम देवी बन कर विराजित रहोगी। सभी ने तुमको त्याग दिया है अब तो सच्चे प्रेम पर तुम्हारा ही अधिकार है। तुम लांछिता हो—अब तुम सचमुच प्रेम कर सकती हो।"

फ्रांस के राजा ने कारडिलिया के पिता राजा लीयर के पास जाकर कहा—"महाराज, आप अनुमति दीजिये, यौतुक की आशा छोड़कर मैं आपकी इस कन्या को ग्रहण करूँगा। वह मेरी और मेरे फ्रांस की रानी बन कर रहेगी।"

राजा ने तुरन्त उत्तर दिया—"किसी भी प्रकार यह बला टली तो मैं अहोभाग्य समझूँगा। तुम जहाँ चाहो उसे ले जाओ। मैं वैसी लड़की का मुँह भी नहीं देखना चाहता।"

कारडिलिया की आँखें भर आयीं। वह आँसू गिराती हुई चली गयी।

राजा लीयर ने जब कारडिलिया को राज्य से वंचित किया था तब वहाँ 'अर्ल ऑफ कैन्ट' उपस्थित था। वह समझ गया था कि राजा क्रोध और अभिमान के कारण अन्याय कर रहा है। परन्तु जब किसी ने उस कार्य का प्रतिवाद नहीं किया, तब उसने प्रतिवाद किया। लीयर यह सुनकर लाल हो गया। कारडिलिया के साथ-साथ उसने कैन्ट के अर्ल को भी राज्य से निर्वासित कर दिया।

राजा अपनी बड़ी लड़की गोनेरिल के निकट रहने लगा।

अब राजा लीयर समझने लगा कि उतनी चिकनी-चुपड़ी बातों में भेद क्या था। वे मीठी-मीठी बातें कितनी बनावटी थीं।

जैसे भी बना सात-पाँच करके बड़ी लड़की बूढ़े बाप से सोलहो आने ऐंठने लगी। परन्तु बूढ़े लीयर ने जैसी आशा की थी उसके अनुसार कुछ भी नहीं हुआ।

जब दो-चार महीने बीत गये, तब एक दिन गोनेरिल ने ताना मार कर कहा—"पिताजी आपको रहना हो रहिये, परन्तु

आपके साथ सैकड़ों शरीर-रक्षकों को पालना कठिन है। यह बहुत बुरा है। क्या कभी कोई शरीर-रक्षक लेकर लड़की के घर रहता है?"

बूढ़ा बड़ी लड़की की बातें सुनकर मन ही मन जलने लगा। कहाँ गयी उस दिन की मीठी-मीठी बातें।

अब बूढ़े बाप को देखनेवाला कौन था? उसकी सेवा की बात ही कौन सोचता था। यदि गोनेरिल कभी कदाचित बाप के आगे पड़ जाती तो उसके मुँह पर अँधेरा छा जाता और वह भौंहें चढ़ा कर एक ओर चली जाती। इस प्रकार से कुछ दिन और बीत गये। अब धीरे-धीरे घर के नौकर-चाकर भी बूढ़े का अपमान करने लगे।

एक दिन वह था जब बूढ़ा स्वयं एक विशाल राज्य का राजा था। लोगों के जीवन अथवा मृत्यु उसकी उँगलियों पर नाचा करती थी। उसने स्वयं अपनी उस शक्ति को दूसरे के हाथ सौंप दिया था। अब उसे करना ही क्या था? वह क्रोध और अपमान के कारण अपनी स्थिति को भूल जाता था। वह कभी-कभी पागल हो कर वैसा ही आदेश देने लगता था जैसा कि वह पहले कभी दिया करता था। लोग उसकी दशा देख कर हँसते थे और उसका आदेश प्रतिध्वनि बन कर हवा में गूँजता था।

उस समय उसका एक ऐसा अनुचर था जो सदैव पास रहता था। जब उसका राज्य था तब भी वह अनुचर उसके साथ रहता था। वह बहुत विनोदी जीव था। हँस कर हँसा कर राजा का मनोविनोद किया करता था। अब बूढ़े लीयर के पास न राज्य था और न धन-सम्पदा फिर भी वह उसके साथ रह कर सभी प्रकार के दुःखों और दुर्दशाओं को झेलता था, हँसते हुए लांछनाओं को सहता था। वह हँसी की आड़ में सभी कष्टों को छिपा लेना चाहता था।

उसे एक और नया साथी मिला था—एक नौकर। वह बड़ा ही अद्भुत और विचित्र था। जब राजा लीयर को सभी छोड़ गये, तब वह नौकर उसके पास आकर खड़ा हुआ। जब गोनेरिल का कोई नौकर बूढ़े लीयर का अपमान करता था तब वह नौकर क्रोध के मारे जल-भुन उठता। तब उसके मुँह की ओर देखने से उसे साधारण नौकर नहीं जान पड़ता था। सचमुच वह कोई साधारण नौकर नहीं था। राजा ने जिस 'अर्ल ऑफ कैन्ट' को राज्य से निकाल दिया था वह वही था। सचमुच कुछ लोग ऐसे होते हैं जो निकालने पर भी नहीं निकलते। जिसको राजा ने निकाल दिया था वह एक नौकर के भेस में लौट आया था, परन्तु राजा उसे पहचान न सका। जब बूढ़ा लीयर राजा था तब उसकी प्रतिष्ठा के लिए 'अर्ल ऑफ कैन्ट' सदैव उसके अधीन रहता था। अब निर्वासित किये जाने पर भी वह नौकर बन कर राजा की सेवा में लगा रहा।

एक दिन राजा का यह नौकर गोनेरिल के एक नौकर की ढिठाई पर बहुत क्रुद्ध हो उठा और उसे उठा कर रास्ते के किनारे एक गड्ढे में फेंक आया।

गोनेरिल इस पर भयानक क्रुद्ध हो उठी। उसने पिता के मुँह पर कह दिया कि ऐसी बात उसके यहाँ चलनेवाली नहीं है। उसने यह भी कहा कि पिता के सभी आदमियों को तुरन्त निकाल देना होगा। काम के न काज के दुश्मन अनाज के! बैठे-बैठे खायेंगे; डोलेंगे तक नहीं केवल गुण्डई दिखायेंगे। बूढ़े लीयर से यह भी कहा गया कि यदि वह अकेला रहना चाहता हो तो रह सकता है। यदि नितांत उससे ऐसा न बन पड़े तो उसके समान बूढ़े एक-दो को अपने साथ रख सकता है। इसके अधिक नहीं।

बूढ़ौती की बेबसी में भी बूढ़े लीयर के लिए ऐसा अपमान

असह्नोय था। वह क्रोध में आकर चिल्ला उठा—"मेरे आदमियों की निन्दा तू न कर। वे अपने कर्त्तव्य को भली-भाँति जानते हैं।"

राजा लीयर ने तुरन्त घोड़े को कसने का आदेश दिया। उसको एक लड़की और थी जहाँ वह अपने आदमियों के साथ जा सकता था। उसे किस बात की चिन्ता थी ?

बूढ़ा चला गया। जाते समय उसने बड़ी लड़की को अभि-शाप देकर कहा—"कभी तू सन्तान की माँ नहीं बनेगी; यदि बनी भी तो आज तू ने जैसी दुर्दशा मेरी की है वैसी ही दुर्दशा तेरी भी उसके हाथ होगी।"

इतना कह कर वह अपने आदमियों को लेकर मझली लड़की के राज्य की ओर चल पड़ा।

रिगान के राज्य के निकट आकर बूढ़े लीयर ने दूत के हाथ एक पत्र भेजा, जिसमें उसके आने का संवाद लिखा था।

इधर गोनेरिल केवल बाप को राज्य से निकाल कर ही शांत न हुई। ज्यों ही राजा लीयर उसके घर से चलने लगा था त्यों ही वह अपनी बहिन के पास पहुँची। फिर दोनों बहिनों ने मिल कर राजा लीयर के पास पत्र का उत्तर भेजा कि उतने आदमियों का पालन-पोषण करना उसके लिए असम्भव है। यदि वह चाहता है तो स्वयं आकर रह सकता है।

अब राजा लीयर समझ गया कि वहाँ भी उसका ठिकाना नहीं है।

धीरे-धीरे अँधेरी रात आयी। वर्षा-सहित आँधी चलने लगी। मानो पानी कह रहा था कि आज बरस कर ही रहूँगा। आज बूढ़े के हृदय से हताश की लम्बी साँस निकली। आँधी! तू और प्रचण्ड रूप धारण कर ले! मनुष्य निर्दयी हो सकता है पर तू नहीं।

उस रात बूढ़े को केवल सिर छिपाने के लिए एक टूटी-फूटी झोपड़ी मिल सकी। दूसरे दिन बूढ़े का वह अनुचर उन सभों को डोवर नामक स्थान में ले गया। डोवर के उस पार ही फ्रांस की सीमा आरम्भ हो जाती है। वहाँ वह सभी अनुचरों को छोड़कर अकेला फ्रांस गया। वहाँ उसने कारडिलिया के साथ भेंट की। नौकर-वेशी 'अर्ल ऑफ केन्ट' ने कारडिलिया से सब कुछ कहा। वृद्ध पिता की ऐसी दुर्दशा सुन कारडिलिया का मन रो उठा।

कारडिलिया ने तनिक भी विलंब नहीं किया। वह थोड़ी सी सेना लेकर पिता के पास डोवर पहुँची। उसने आकर देखा कि बूढ़ा लीयर पागल हो गया है। दिन भर इधर-उधर भटका करता है। पेड़-पौधों से न जाने क्या बका करता है। माथे पर राज-मुकुट नहीं था। जंगली पौधों की कँटीली डालियों को उसने माथे पर पहन रखा था। लोगों को देख कर वह पहचान भी नहीं सकता था। ऐसी अवस्था में आकर कारडिलिया उसकी सेवा करने लगी। जब बूढ़े की चेतना लौट आयी तब कारडिलिया ने उससे कहा—"पिताजी !"

'पिता' का संबोधन सुन कर बूढ़ा चौंक उठा।

—"कौन हो ?"

—"मैं कारडिलिया—आपकी बेटी हूँ।"

—"तुम सब क्यों हँसी करती हो ? हाँ एक-एक बार जान पड़ता है कि तुमको पहचानता हूँ। परन्तु तुम्हारे पहिनावे तो नये हैं—इनको तो मैं नहीं पहचानता।"

—"पिता जी ! इधर देखिये ! मैं आपकी लाड़ली बेटी कारडिलिया हूँ। मैं आपके प्रति किये गये अपमानों का बदला लूँगी।"

बूढ़ा लीयर पुनः अपना खोया हुआ स्नेह पा गया। बुढ़ापे

की अचेतन-अवस्था में भी उसकी चेतना स्नेह को पाकर जाग उठी। ममता-भरी उस लड़की को राजा लीयर हृदय से लगा कर रोने लगा—एक बच्चे के समान रोने लगा।

—"मुझे क्षमा कर दे बेटा ! भूल मेरी ही थी।"

इधर गोनेरिल और रिगान ने जब सुना कि कारडिलिया सेना लेकर डोवर में राजा लीयर के निकट आयी है तब वे बहुत क्रुद्ध हुईं।

गोनेरिल ने अपने पति से कहा कि कारडिलिया उनका राज्य हड़पने के लिए आयी है। 'ड्युक ऑफ अलबानि' पत्नी की बातों पर विश्वास करके सेना लेकर आगे बढ़ा।

कारडिलिया के पास जो थोड़ी सेना थी वह हार गयी। बूढ़े लीयर और कारडिलिया बन्दी बनाये गये। गोनेरिल और रिगान की इच्छा थी कि कारडिलिया को फाँसी पर चढ़ा दिया जाय। इससे उनके पथ का काँटा दूर हो जायगा।

कारडिलिया की फाँसी का दिन भी निश्चित हुआ।

परन्तु किसी भी प्रकार से 'ड्युक ऑफ अलबानि' को इस बात का पता लग गया कि जितनी घटनाएँ घटी हैं उनके पीछे उसकी ही पत्नी का षड्यन्त्र था। पीठ पीछे वह अपनी बुरी भावनाओं को पूरा करने के लिए अब तक जाल फैलाती थी। उस जाल में वह स्वयं फँस गया था। इससे 'ड्युक ऑफ अलबानि' आग-बबूला हो उठा।

अब गोनेरिल डर गयी। उसने भयानक दण्ड के भय से आत्महत्या की बात सोची। परन्तु जब मरना ही है तो वह अकेली क्यों मरेगी ! रिगान ने भी तो इस अन्याय में उसका साथ दिया था। उसे भी मरना होगा। गोनेरिल ने उसे भी विष दिया।

इधर 'ड्युक ऑफ अलबानि' ने कारडिलिया की फाँसी रोकने के लिए कारागार में दूत भेजा। परन्तु उसके पहले ही सब कुछ समाप्त हो चुका था। गोनेरिल ने विष पान करने के पहले उसकी व्यवस्था कर डाली थी।

राजा लीयर ने छुटकारा पाकर कारडिलिया की मृत देह देखी।

बूढ़ा अब सचमुच पागल हो गया। वह लड़की के शव को अपने कन्धे पर रख कर 'ड्युक ऑफ अलबानि' की राज सभा में उपस्थित हुआ।

—"जिसने तेरी हत्या की है। आज मैं उसकी हत्या करूँगा। कारडिलिया, मेरी बेटी! एक बार अपनी आँखें खोल कर मुझे देख। क्या तू नहीं देखेगी—इस संसार की ओर नहीं ताकेगी?

अब बूढ़े के पास खड़े होने तक की शक्ति भी न बची थी। कारडिलिया के शव के साथ वह भी धरती पर गिर पड़ा। फिर वह नहीं उठा।

———

जूलियस सीजर

निर्धनों और धनवानों का जो झगड़ा आज दुनियाँ में चल रहा है वह बहुत पुराना है। हज़ारों वर्ष पहले रोम में भी यह झगड़ा चल रहा था। परन्तु उसका रूप कुछ और ही था।

उन दिनों रोम में 'पेट्रिशियन' के नाम से अभिजात-वर्ग पुकारे जाते थे और जन-साधारण 'प्लीबियन' के नाम से। इन दोनों वर्गों का विरोध बहुत पुराना था। कहानी जिस समय की है उस समय साधारण-वर्गवालों के हाथ में राजसत्ता थी। उसके ही प्रतिनिधियों को लेकर ट्रिब्युन या मन्त्रि-सभा संगठित हुई थी।

साधारण-वर्गवालों में जूलियस सीजर अतिशय शूर और वीर था। उसकी शक्तिमत्ता चरम-सीमा पर थी। अभिजात-वर्गवालों के सर्वप्रधान वीर और योद्धा पाम्पो को उसने हराया था। अब, अतिशय शक्तिमान होने के कारण जूलियस सीजर रोम का सर्वप्रधान हो गया। यह बात रोम-वासियों की आँखों में बहुत खटकती थी। वे स्वतन्त्रता के सच्चे पुजारी थे। भला, वे कैसे दास बन सकते थे? सीजर के बारे में लोगों के मन में दारुण सन्देह उत्पन्न हो गया। कहीं जूलियस सीजर अब रोम का राजा न बन बैठे।

जिस दिन यह कहानी आरम्भ होती है उस दिन रोम में उत्सव की भारी धूम मची हुई थी। सीजर मिस्र देश को जीत कर लौटा था। उसी अवसर पर आनन्द मनाया जा रहा था। नगर के सभी लोग अपने-अपने दैनंदिन कार्यों को छोड़कर इस

उत्सव के आयोजन में लगे हुए थे। झुण्ड के झुण्ड रोमवासी इधर-उधर घूम रहे थे। परन्तु सीजर के विरोधी दल के कुछ लोग इस धूमधाम से दूर रहे। वे सीजर के विरुद्ध लोगों में प्रचार कर रहे थे। इस दल का नायक था कैसस। सीजर के प्रति उसके मन में कुछ व्यक्तिगत विद्वेष का भाव था। इसी गुट के दो अनुचर मेरुलस और फ्लेवियस लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर कह रहे थे कि जो लोग थोड़े दिन पहले पाम्पी को देवता के समान मानते थे तथा उसका सम्मान करते थे आज वे ही लोग पाम्पी के हत्याकारी सीजर को वैसा ही सम्मान दे रहे हैं। उनके चित्त की कोई स्थिरता नहीं है। षड्यन्त्र रचनेवाले इस प्रकार लोगों के मन में सीजर के विरुद्ध घृणा का भाव पैदा करने लगे।

इस घटना के उपरान्त रोम में लुपोर्केल नामक एक उत्सव होनेवाला था। उस समय रोम में इस उत्सव की काफी प्रसिद्धि थी। इस अवसर पर धूमधाम भी खूब होती थी। रोम के सभी बड़े-बड़े लोग इस उत्सव में एकत्रित होते थे। इस बार भी उस चिराचरित प्रथा का उल्लंघन नहीं हुआ। उत्सव के स्थान में राज्य के सभी सम्मानित पुरुष उपस्थित हुए। सीजर भी आ पहुँचा। सीजर की पत्नी कालपूर्निया तथा सीजर के अन्यतम मित्र ब्रूटस की पत्नी पोर्शिया भी वहाँ आयी। भीड़ काफी थी। इतने में उस भीड़ में से किसी ने पुकार कर कहा—"सीजर! याद रखना मार्च महीने की पन्द्रहवीं तारीख!" सीजर ने घूमकर पूछा—"क्यों जी क्या कहते हो? फिर से कहो!" दैवज्ञ बोला—"मार्च की पन्द्रहवीं तारीख को सावधान रहना!" सीजर हँसने लगा और उसके प्रति अवज्ञा दिखला कर बोला कि उसकी बातों का क्या मूल्य है? वह तो बहुत कुछ कहा करता है। सीजर आगे बढ़ा। सभी वहाँ होनेवाले खेलों को देखने में व्यस्त हो उठे।

उस उत्सव में सीजर का एक मित्र भी उपस्थित था, जिसका नाम था मार्कस ब्रूटस। वह बहुत धार्मिक और उदार पुरुष था। वस्तुतः देश-प्रेम उसमें कूट-कूट कर भरा था। कैसस ने उसे ज्यों ही देखा एक तरफ बुला लिया। कैसस ब्रूटस के साथ वार्तालाप करते समय ऐसा भाव प्रकट करने लगा कि मानों सीजर की विजय पर लोगों के इतने उल्लासित होने का कारण उसकी समझ में नहीं आ रहा है। इस पर ब्रूटस ने कहा—"यदि सीजर देश का राजा बन बैठा तो देश का अहित होगा।" यह सुनकर कैसस उत्साहित हो उठा, वह कहने लगा, "न जाने लोग सीजर के नाम पर क्यों इतना न्योछावर होते हैं! क्या सीजर की-सी प्रतिभा और किसी में नहीं है? सीजर और ब्रूटस ये दो नाम एक साथ उच्चारित होने पर मुझे कोई अन्तर नहीं जान पड़ता।"

जो भी कुछ हो, कैसस ने बुद्धिमानी से यह बात जान ली कि ब्रूटस रोम की वर्तमान परिस्थिति को उचित नहीं समझता।

जब वे कथोपकथन कर रहे थे तब जनता की उल्लास-ध्वनि सुनायी पड़ी। परन्तु वे इस आनन्द का कारण नहीं समझ पाये। ब्रूटस बोल उठा—"क्या लोगों ने सीजर को राजा बना लिया?" उसके मन में कुछ ऐसा सन्देह उत्पन्न हो गया था कि सीजर अंत तक राजा बन बैठेगा और रोमवासियों की स्वतन्त्रता सदा के लिए समाप्त हो जायेगी। गण-तन्त्र का स्वप्न आकाश-कुसुम में परिणत होगा।

सीजर और उसके साथी उत्सव के कार्यक्रम समाप्त हो जाने पर उसी रास्ते से लौटे। सीजर की दृष्टि कैसस पर जा पड़ी। उसने मार्क एन्टोनी को सम्बोधित कर कहा—"उस कैसस को देखो! वैसा मनुष्य मुझे अच्छा नहीं लगता। उसकी आँखों में एक ऐसी जलन की दृष्टि है जिसे कभी न इन्धन मिला हो। ऐसे लोग बहुत खतरनाक होते हैं।"

सीजर और उसके साथियों के चले जाने के बाद ब्रूटस और कैसस को कासका नामक एक रोमवासी से इसका पता चला कि मार्क एन्टोनी ने जनता के सम्मुख सीजर की महत्ता बढ़ाने के लिए उसे राजमुकुट प्रदान किया; किन्तु सीजर ने उसे लेने से अस्वीकार कर दिया है। लोग इस प्रकार सीजर की महत्ता से परिचित हो गये। मार्क एन्टोनी ने दो बार और इस प्रकार का अभिनय किया परन्तु दोनों ही बार सीजर ने सम्राट बनना अस्वीकार किया। इसी कारण इतनी हर्ष-ध्वनि हो रही थी।

ब्रूटस और कैसस फिर एक दूसरे से मिलने का वचन देकर चले गये। सीजर के विरुद्ध विद्रोह खड़ा करने के लिए ब्रूटस के समान एक सदाशय और उदारचेता व्यक्ति की आवश्यकता है, कैसस यह समझता था। अब वह ब्रूटस को अपने साथ दल में मिलाने के लिए कोई उपाय सोचने लगा। कैसस जान गया था कि ब्रूटस कट्टर देश-प्रेमी है। यदि उसे यह बात समझा दी गयी कि जनता सीजर को नहीं बल्कि ब्रूटस को चाहती है, तो ब्रूटस सहज ही षड़यन्त्रकारियों के साथ सम्मिलित हो जायगा। तब कैसस जाल फैलाने लगा। वह जाली चिट्ठियाँ लिख-लिख कर ब्रूटस के पास भेजने लगा मानो भिन्न-भिन्न लोग लिख रहे हों। लिखाई भी हरेक की अलग-अलग थी ताकि कोई समझ न पाये। कैसस इन चिट्ठियों को ब्रूटस के घर में फेंक दिया करता था। इनको पढ़ने से ब्रूटस के मन में यह बात बैठ गयी कि जन-साधारण ही उसे सीजर के बढ़ते हुए अहंकार को नष्ट करने के लिये लिख रहे हैं। महान ब्रूटस भी कैसस के जाल में फँस गया। वह क्रमशः उत्तेजित होने लगा।

उस रात को प्रकृति ने रुद्र रूप धारण किया था। घन-घोर घटाओं से आकाश आच्छन्न था। मेघों की भयंकर गर्जना से

संसार शंकित हो रहा था। आँधी और पानी में मानो भयानक होड़-सी लग गयी थी। उसी रात को चक्रान्तकारियों ने पाम्पी की प्रतिमूर्ति के निकट गुप्त रूप से सम्मिलित होकर आपस में विचार-विमर्ष करने का निश्चय किया। कैसस ने यह सन्देश सिन्ना नामक अनुचर के हाथ ब्रूटस के निकट भेजा था। यह सन्देश पाकर ब्रूटस के मन में अन्तर्द्वन्द मच गया। सीजर उसका परम मित्र था। क्या वह उस मित्र का अनिष्ट करेगा। रोम उसकी जन्मभूमि है—उस जन्मभूमि की स्वाधीनता छीनी जायगी और वह चुपचाप देखता रहेगा। सीजर उसका परम मित्र है वह सीजर को चाहता है परन्तु रोमवासियों की स्वतंत्रता की बलि वह सीजर मात्र के लिए नहीं दे सकता! इन चिंताओं के चक्कर में पड़ने से ब्रूटस को नींद नहीं आयी। वह अपने बगीचे में टहलने लगा। इतने में उसके नौकर ने उसे कुछ कागज लाकर दिये। जिसमें अज्ञात हस्ताक्षरों में लिखित था—"ब्रूटस! कल मार्च महीने की पन्द्रहवीं तारीख है। क्या तुम भूल गये। ब्रूटस! क्या तुम सो रहे हो? उठो? जागो! अपनी ओर देखो! रोम का क्या होने वाला है। यह कुछ करने का समय है—चुप मार कर बैठने का नहीं। अन्यायी को दंड दो! ब्रूटस जागो।"

ब्रूटस ने पढ़ा, बार-बार पढ़ा। रोम का क्या होने वाला है। रोम का क्या होगा। ब्रूटस का सीना फड़क उठा। उसकी आँखों के सामने आवेश छा गया। रोम की स्वाधीनता! गणराज्य का स्वप्न!

इतने में लूसियस ने ज्ञात कराया कि कैसस उससे मिलने आया है। अब ब्रूटस ने आसानी से उस षड़यन्त्र में सहयोग दिया। कैसस का चक्रान्त सफल हुआ।

अब प्रश्न उठा कि केवल सीजर को ही मारा जायगा या मार्क

एन्टोनी की भी हत्या उसी के साथ करा दी जायगी। कैसस ने कहा कि अगर मार्क एन्टोनी जीवित रहता है तो हम लोगों पर विपत्ति आ सकती है। किन्तु ब्रूटस इस पर सहमत न हुआ। ब्रूटस ने कहा—"हम आवश्यकता पड़ने पर हत्या कर रहे हैं बिना किसी कारण के हम हत्या नहीं कर सकते जैसा कोई हत्यारा करता है। मार्क एन्टोनी सीजर रूपी शरीर का एक अंग है। मस्तक काट देने पर शरीर के अन्यान्य अंगों को काट कर टुकड़ा-टुकड़ा करना या न करना एक-सा है। सीजर महत्ताकांक्षी है, उसे मरने दो औरों का खून न बहाओ।"

उस रात को सीजर को भी नींद न आयी। उसकी पत्नी कालपूर्निया रात भर भयानक सपने देखती रही। बेचारी तीन-तीन बार चीख पड़ी, क्यों कि सपने भयानक और अशुभ थे। प्रत्येक बार वह एक ही प्रकार के सपने देखती गयी कि कोई सीजर की हत्या कर रहा है प्रातः काल जब सीजर सभा में सम्मिलित होने को चला तब कालपूर्निया ने आकर उसे रोका। कालपूर्निया आज सीजर की कुछ भी सुननेवाली न थी। वह केवल सीजर के निकट बार-बार इस बात की प्रार्थना करने लगी कि वह आज कहीं भी न जाय, कोई काम पड़ने पर भी बाहर न निकले।

सीजर सिंह के समान साहसी पुरुष था। भीरुता के लिए उसके मन में घृणा थी। उसने कालपूर्निया से कहा—"जो डरपोक होता है वह मरने के पहले ही अनेक बार मृत्यु के कष्टों को भोगता है। परन्तु साहसी मनुष्य केवल एक ही बार मरता है। फिर मृत्यु तो सभी के लिए निश्चित है। जब उसका समय आता है तब मनुष्य कितनों ही न डरे उसे मृत्यु को स्वीकार करना ही पड़ता है। फिर भी मनुष्य मृत्यु से डरता है। इससे अधिक आश्चर्य की बात और क्या हो सकती है।"

किन्तु कालपूर्निया आज इन युक्तियों से भूलनेवाली न थी। अपशकुन की अशुभ चिन्ता से उसका मन काँप रहा था। अब वह सीजर को रोकने के लिए रोने लगी। अन्त तक सीजर का जाना स्थगित हो गया। स्थिर हुआ सभा में इस आशय का संवाद भेज दिया जाय कि सीजर अस्वस्थ है जिसके कारण वह सभा-स्थल में उपस्थित नहीं हो सकता।

इधर चक्रान्तकारियों के मन में भी ऐसा भय था। उन्होंने ऐसी सम्भावना को दूर करने के लिए डीसस नाम के एक अनुचर को भेजा। डीसस बहुत चतुर था। सीजर डीसस के द्वारा ही अपनी अनुपस्थिति का संदेश सभा में भेजनेवाला था। परन्तु डीसस ने बहुत चतुराई से काम लिया। उसने सीजर से कहा कि, आज सीनेट-सभा सीजर को राजमुकुट प्रदान करनेवाली है। यदि वह आज की सभा में उपस्थित न हुआ तो यह अवसर सदा के लिए हाथ से निकल जायगा। सीजर ने अपना निश्चय बदल दिया और सभा में योगदान करने के लिए तैयार हो गया।

इतने में इस षड़यन्त्र का पता एक ग्रीक को लगा। उसने सारा विवरण एक पत्र में लिख कर ब्रूटस की पत्नी पोर्शिया के निकट भेजा। वह जानता था कि पोर्शिया का पति ब्रूटस सीजर का घनिष्ट मित्र है। किन्तु पोर्शिया को उसके पूर्व ही इस वृत्तान्त का पता लग चुका था पर उसने अपने अपने पति के निकट यह प्रतिज्ञा की थी कि, वह इस चक्रान्त के विषय में किसी के निकट कुछ भी व्यक्त नहीं करेगी। इसलिए उस ग्रीक के निकट से पत्र पाकर भी उसे चुप रहना पड़ा।

पन्द्रहवीं मार्च ! रोम नगर के केपिटल के सम्मुख सभी सभासद एकत्रित हुए हैं। सीजर के मुख-मण्डल पर दम्भ और शक्तिमत्ता के चिह्न अंकित हैं। चक्रान्तकारी धीरे-धीरे सीजर के समीप आते हैं। सीजर का मस्तक सदा ही उन्नत रहा है, आज

वह अदम्य साहस और पुरस्कार-प्राप्ति के आनन्द से मंडित हो कर कुछ अधिक उन्नत है। एकत्रित जनता पर सीजर की निर्भय दृष्टि पड़ी। उसने उस दैवज्ञ को देख कर हँसता हुआ पूछा—"क्यों जी, पन्द्रहवीं तारीख आयी है न?" दैवज्ञ ने उत्तर दिया—"ठीक कहते हो सीजर! आयी अवश्य है, परन्तु अभी बीती नहीं!"

अब सभा का कार्य आरम्भ होनेवाला है। ट्रेबोनियस नामक एक चक्रान्तकारी मार्क एन्टोनी को लेकर एक तरफ चला गया। मेटेलस सीम्बर सीजर के सम्मुख नतजानु होकर अपने निर्वासित भाई के लिए प्रार्थना करने लगा। ब्रूटस और कैसस मानो उस निर्वासित व्यक्ति के दोष को क्षमा कराने के लिए अनुरोध करने के वास्ते सीजर के निकट जा खड़े हो गये। सीन्ना, डीसस आदि अन्य षड्यन्त्रकारी भी निकट आकर खड़े हो गये। सीजर पर प्रथम छुरिकाघात किया कासका ने। कासका के पश्चात् सभी उन पर आघात करने लगे। अन्तिम प्रहार ब्रूटस ने किया। ब्रूटस को भी वार करते देख सीजर ने कातर होकर कहा—"ब्रूटस! तुम भी!" केवल इतना कह कर चिर निर्भीक सेनापति सीजर पृथ्वी पर गिर पड़ा।

सीन्ना चिल्ला कर कह उठा—"स्वतन्त्रता! मुक्ति! स्वेच्छाचार का विनाश हुआ! जाओ! शीघ्र जाओ! गलियों में कूचों में इसका प्रचार करो।"

ट्रेबोनियस ने आकर कहा कि मार्क एन्टोनी डर के मारे अपने घर में छिपा है। कुछ देर बाद एन्टोनी का दूत आया। उसके द्वारा एन्टोनी ने कहला भेजा कि यदि सीजर की हत्या का कारण बतला कर जनता के सामने उसे कुछ कहने का मौका दिया जाय तो वह चक्रान्तकारियों के साथ मिल सकता है।

ब्रूटस इस प्रस्ताव पर राजी हो गया। परन्तु कैसस मार्क

एन्टोनी को भली-भाँति जानता था। उसने कहा—"यदि जनता के समक्ष एन्टोनी को कुछ कहने का अवसर मिला तो हमारा विनाश अवश्य होगा। मार्क एन्टोनी जनता को निश्चित रूप से हमारे विरुद्ध उत्तेजित करेगा।"

तत्पश्चात् यह निश्चित् हुआ कि ब्रूटस सर्व-प्रथम लोगों के सम्मुख भाषण देगा और जन-साधारण को यह बतलायेगा कि उन्होंने सीजर की हत्या क्यों करा दी है। उसके पश्चात् एन्टोनी को वक्तृता करने का अवसर दिया जायगा।

इधर मार्क एन्टोनी को समाचार मिला कि जूलियस सीजर का भ्रातुष्पुत्र ओक्टेवीयस सीजर शीघ्र ही रोम को लौट रहा है। अब उसे रोम पहुँचने में देर न लगेगी। मार्क एन्टोनी को मानो अन्धकार में आशा का प्रकाश दिखाई पड़ा।

जनता अधीर हो उठी थी। वह हत्या का सच्चा विवरण जानना चाहती थी।

—"ब्रूटस! हम जानना चाहते हैं कि सीजर क्यों मारा गया!" ब्रूटस को देख कर जनता उत्तेजित होकर चिल्ला उठी—"हमें इस हत्या का कारण बताओ। हम जानना चाहते हैं!"

ब्रूटस निर्भय उनके सामने खड़ा हो गया। वह शान्त किंतु दृढ़-स्वर में कहने लगा—"रोम-नगर के निवासियो! मेरे स्वदेश-वासी बन्धुओ! देश के सच्चे प्रेमियो! मेरी बातों पर ध्यान दीजिये। मैं जो कहता हूँ उस पर निष्पक्ष विचार कीजिये। यदि इस एकत्रित जनता के बीच कोई सीजर के मंगलाकांक्षी मित्र हों तो वे जानेंगे कि सीजर के प्रति मेरी मित्रता उनकी मित्रता से कुछ कम न थी। यदि वे मुझसे पूछते हैं कि क्यों मैंने इस हत्या में सहयोग दिया, तो मैं उसके उत्तर में यह कहूँगा कि मेरे निकट सीजर से रोम अधिक प्रिय है, जिस कारण मैंने उसकी हत्या की। सीजर मेरे मित्र थे, उनके लिए मेरे मन में प्रेम है—इस

कारण मैं रोता हूँ। सीजर के भाग्योदय से मैं सदैव आनन्दित होता था। जब वे साहस दिखाते थे मैं उनको सम्मान देता था किन्तु जब वे महत्ताकांक्षी हो उठे, सर्वश्रेष्ठ होने का स्वप्न देखने लगे तभी मैंने उनकी हत्या की। क्या ऐसे कोई रोमवासी यहाँ उपस्थित हैं जिनको दास बनना स्वीकार हो? क्या आप लोगों में से कोई ऐसे हैं जिनके हृदय में रोम के लिए प्रेम का भाव नहीं है? रोम के प्रति यदि किसी के मन में सद्भावना नहीं है तो मेरे इस कार्य से उन्हीं को ठेस पहुँचेगी। बोलिये! उत्तर दीजिये! कौन ऐसे हैं?"

उत्तेजित जनता यह सुन कर शांत हो गयी। सभी एक साथ बोल उठे—"ऐसा कोई नहीं है ब्रूटस—कोई नहीं है।"

अब एन्टोनी सामने आया। उसके कंधे पर सीजर की मृत देह दोनों ओर लटक रही थी। जनता उसे एक-टक देखने लगी। मार्क एन्टोनी ने बोलना आरम्भ किया। वह कुशल वक्ता था। श्रोताओं को इच्छानुसार चालित करने की शक्ति उसके शब्दों में थी। कैसस का अनुमान सही निकला। एन्टोनी बोलता गया। बड़ी सावधानी के साथ अग्रसर होता गया। जनता के मन की गति को परिवर्तित करने का कौशल उसे ज्ञात था। जनता उसके आगे कठपुतली बन कर नाचने लगी। वह कहता गया—"मित्रो! रोमवासियो! मेरे स्वदेश-प्रेमिक बन्धुओ! मैं सीजर की अन्तिम क्रिया करने आया हूँ, उनकी प्रशंसा नहीं। महाशय ब्रूटस ने अभी जो कहा, यदि वह ठीक है—यदि सीजर सचमुच महत्ताकांक्षी थे तो यह निःसन्देह उनका घोर अपराध था और उन्हें उसका उचित दण्ड भी मिला है। यहाँ सभी सम्मानित व्यक्ति उपस्थित हैं। उनके सामने मैं कह रहा हूँ—सीजर मेरे मित्र थे—परम विश्वासी और न्यायवान मित्र। किन्तु महाशय ब्रूटस ने सीजर

पर उच्चाकांक्षी होने का आरोप लगाया है, परन्तु महाशय ब्रूटस भी तो एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं !"

अब एन्टोनी धीरे-धीरे कुछ ऐसे प्रमाण उपस्थित करने लगा जिससे जनता समझ गयी कि जूलियस सीजर सचमुच उच्चाकांक्षी अथवा क्षमता-लोभी नहीं था। सीजर को राजमुकुट उपहार-स्वरूप प्रदान किया गया था, परन्तु उसने उसे कदापि स्वीकार नहीं किया। क्या कोई क्षमता-लोभी ऐसा त्याग कर सकता है ? एन्टोनी की भाषा में जादू था। जनता धीरे-धीरे उत्तेजित होने लगी। सभी समझ गये कि जो कुछ किया गया है वह सीजर जैसा महान व्यक्ति के प्रति अन्याय है। अब एन्टोनी ने सीजर का इच्छापत्र निकाला। इच्छापत्र को देखने के लिए भीड़ निकट आ उटी। चतुर एन्टोनी ने सीजर का क्षत-विक्षत शरीर दिखाया और कहना आरंभ किया—"......और भी देखो ! सीजर के प्रियतम मित्र ब्रूटस ने क्या किया है।......" जनता से अब यह देखा नहीं गया। जन-साधारण के भावालु मन में प्रतिहिंसा की आग भभक उठी। एन्टोनी फिर उस वसीयतनामे को निकाल कर पढ़ने लगा...."सीजर सभी को कुछ-न-कुछ दे गया है। इसके अतिरिक्त सार्वजनिक कामों में भी उसका प्रचुर दान है।

एन्टोनी को अब कुछ बोलने की आवश्यकता न रही। जनता स्वयं सीजर की मृत देह के सत्कार के लिए चल पड़ी। कुछ लोग तो उसी समय जलते हुए मशाल लिये चक्रान्तकारियों के घर जलाने के लिए दौड़े।

इतने में सीजर का भ्रातुष्पुत्र ओक्टेवीयस सीजर आ पहुँचा। दूत के निकट यह संदेश सुन कर एन्टोनी मन ही मन प्रसन्न हुआ। षड़यन्त्रकारी भी इस घोर संकट से रक्षा पाने के लिए भाग खड़े हुए। निर्दोष तथा देश-प्रेमी ब्रूटस को भी अदृष्ट का सामना करने के लिए रोम छोड़ना पड़ा।

रोम में पुनः शान्ति स्थापित हुई। एन्टोनी, ओक्टेवीयस और लेपीडीयस—तीनों ने मिलकर 'ट्रायामविरेट' नामक त्रयी-सभा की स्थापना की।

ब्रूटस, कैसस आदि षड्यन्त्रकारी एशिया-माइनर के सार्डिस नामक नगर में आकर एकत्रित हुए। वहाँ वे लड़ाई की तैयारियाँ करने लगे। रोम को अपने अधिकार में लाकर वहाँ गण-तन्त्र स्थापित करेंगे, उनका स्वप्न सफल होगा, ऐसी सुनहली कल्पनाएँ अभी भी उनके मस्तिष्क में मँडराती थीं।

एन्टोनी, लेपीडीयस, ओक्टेवीयस आदि सभी युद्ध के लिए तैयार हो रहे थे। कैसस ने यह संवाद पाकर कहा कि हम यहीं शत्रु की प्रतिज्ञा करेंगे। लम्बी यात्रा के बाद शत्रुओं की सेना थक जायगी। और तब उन्हें पराजित करना हमारे लिए आसान होगा। परन्तु ब्रूटस ने कहा—"शत्रुओं को अवसर देना कदापि उचित नहीं है। हमें अभी रवाना हो जाना चाहिये। हम अभी शत्रु से लड़ने के लिए प्रस्थान करेंगे।"

कैसस बोला—"तो आप अग्रसर होइये हम पीछे आते हैं।"

उसी रात ब्रूटस अकेले शिविर में बैठ कर पुस्तक पढ़ रहा था कि सीजर का आत्मा आकर उसके सामने उपस्थित हुआ। ब्रूटस ने उस आत्मा से पूछा—"आप क्यों आये हैं ?"

आत्मा बोला—"तुम से कहने आया था कि फिलिप्पी के रणक्षेत्र में मुझसे मिलना।"

आत्मा यह कह कर अदृश्य हो गया।

रणक्षेत्र !!.

सेना दो भागों में बँट कर खड़ी हो गयी। ओक्टेवीयस के सामने ब्रूटस की सेना और एन्टोनी के सम्मुख कैसस की। ब्रूटस ने शत्रुओं पर आक्रमण करने का आदेश दिया किन्तु यह आदेश कैसस की सेना के लिए असुविधाजनक हो गया! ब्रूटस

की सेना का जो भाग कैसस की सेना से मिलनेवाला था वह आ नहीं पहुँचा था। इसलिए कैसस को थोड़ी सेना लेकर ही एन्टोनी का सामना करना पड़ा। एन्टोनी की सेना संख्या में अधिक थी। कैसस का पताका-वाहक पताका लेकर ही भाग रहा था। कैसस ने उसे मार कर पताका स्वयं थाम ली। इतने में पिंडारस नामक एक सैनिक ने आकर खबर दी—"एन्टोनी के सैनिकों ने आप के शिविर में आग लगा दी है।" कैसस ब्रूटस की सेना की प्रतीक्षा कर रहा था। वह सेना कितनी दूर है जानने के लिए कैसस ने टीसीनीयस को भेजा और पिंडारस से कहा कि वह एक पहाड़ पर चढ़ कर जो कुछ देखा जा सके बताये।

पिंडारस ने ऊपर से देखकर कहा—"टीसीनीयस शत्रुओं द्वारा पकड़ा गया है।" यह सुनकर कैसस ने जीतने की आशा त्याग दी। उसने पिंडारस को बुलाकर कहा—"मेरे सीने में छुरा भोंक दे।" विश्वासी अनुचर पिंडारस ने आज्ञा का पालन किया। मरते समय कैसस ने कहा—"सीजर, तुम्हारी प्रतिहिंसा चरितार्थ हुई।"

जो कुछ भी हो, पिंडारस ने झूठा संवाद दिया था। थोड़ी देर बाद टीसीनीयस ब्रूटस की सेना लेकर घटनास्थल पर पहुँच गया। वहाँ उसने सारी घटना देखी। अब वह भी निराश हो गया। उसने ब्रूटस के निकट समाचार भेजा कि कैसस अब इस संसार में नहीं है। फिर वह आत्महत्या कर कैसस का अनुगामी हो गया।

घटनास्थल पर पहुँच कर ब्रूटस ने जब दोनों मृत देहों को देखा तब उसका मन अनुशोचना से भर उठा। उसने आवेश में आकर कहा—"सीजर, तुम आज भी महिमामय हो।" अब

उसकी यह धारणा दृढ़ हुई कि जूलियस सीजर के आत्मा ने उसको प्रभावित किया है।

फिर से लड़ाई छिड़ गयी। ब्रूटस आज भयानक युद्ध करने लगा। उसकी सेना हार रही है, कट रही है, तथापि उसका उत्साह नहीं घटा। एन्टोनी और ओक्टेवीयस की अगणित सेनाओं ने चतुर्दिक से उसे घेर लिया। ब्रूटस जान गया कि विजयलक्ष्मी अब उसकी अंकशायिनी नहीं हो सकती। वह एक के बाद एक—प्रत्येक के निकट अनुरोध करने लगा—"मेरी हत्या कर दो, मेरे इस जीवन का अन्त कर दो। मुझ पर दया करो।" परन्तु किसी ने उसकी हत्या नहीं की। अन्त में उसने अपने एक विश्वासी अनुचर से कहा—"स्ट्राटो! तुम अपनी तलवार को कोष से निकाल कर थामो और अपना मुँह एक तरफ फेर लो।" स्ट्राटो की आखों में आँसू भर आया। उसने अपने प्रभु से अन्तिम बार हाथ मिलाया और उस भयानक आदेश का पालन किया।

ब्रूटस चीत्कार कर बोल उठा—"सीजर! अब शान्त हो जाओ।" इसके बाद उसने उस तीक्ष्ण तलवार पर गिर कर जान दे दी।

एन्टोनी शीघ्र ही उस स्थान पर आ पहुँचा, परन्तु तब तक सब कुछ समाप्त हो चुका था। एन्टोनी ने श्रद्धा-सहित कहा—रोम-वासियों में ये सब से अधिक उदार और महान थे। दूसरे षड़यन्त्रकारी सीजर की क्षमता तथा प्रतिष्ठा से जलते थे। एकमात्र ये ही जन-साधारण के हित के लिए चक्रान्तकारियों से जा मिले थे।" वास्तव में एन्टोनी ही ब्रूटस की महत्ता से परि-चित हो सका था। ब्रूटस के समान आदर्श देशभक्त युग-युग जनता की पूजा पाता है।

अब तक चक्रान्तकारी स्वतंत्रता का जो स्वप्न देखा करते थे वह आकाश-कुसुम में परिणत हो गया। रोम में गण-राज्य की

स्थापना नहीं हुई, वहाँ एक साम्राज्य स्थापित हुआ। ओक्टेवीयस सीजर अगस्टस सीजर का नाम धारण कर रोम का सम्राट बन बैठा।

गणतन्त्र की मलिन-ज्योति चिरकाल के लिए अन्धकार में विलीन हो गयी।

ओथेलो

किसी मनुष्य का परिचय उसका बाहरी रूप नहीं होता। मनुष्य का सच्चा परिचय उसकी मनुष्यता ही देती है। मनुष्य कदाकार हो सकता है, उसकी आकृति बेढब और उसका रूप कुत्सित हो सकता है, क्योंकि उसका शरीर प्राकृतिक नियम का अधीन है। किन्तु वह मनुष्य स्वयं फूल के समान पवित्र और प्रकाश के समान निर्मल हो सकता है यदि उसका हृदय विमल और पवित्र हो। सुन्दर से सुन्दर मनुष्य अपनी मनोभावना के कारण घृणा का पात्र बन जाता है। इसलिए इस संसार में रूप के भ्रम में पड़ना कदापि उचित नहीं है। सच्चे ज्ञानी कभी बाहरी सौन्दर्य से प्रभावित नहीं होते।

डेसडिमोना एक ऐसी लड़की थी, जो किसी के शारीरिक सौंदर्य पर नहीं, बल्कि उसके मानसिक सौंदर्य से मुग्ध होती थी। डेसडिमोना एक धनी और प्रतिष्ठित व्यक्ति के लाड़-प्यार की लड़की थी। उसके पिता का नाम था ब्रेबनसियो। वह वेनिस नगर की शासन-सभा का सदस्य था।

डेसडिमोना जब धीरे-धीरे यौवन प्राप्त करने लगी तब उसकी सुन्दरता की ख्याति भी बढ़ गयी। लोग उसके रूप के वर्णन में कोयल हो उठे। अब डेसडिमोना एक रूपवती तरुणी थी। इसके अतिरिक्त उसका आचरण था नम्र और शालीनतामय। उसके प्रशंसक जुटने में अब देर न लगी। डेसडिमोना के रूप से मुग्ध होकर तथा उसके पिता के वैभव से लुब्ध होकर वेनिस के सभी रूपवान युवक पागल हो उठे। परन्तु डेसडिमोना उन्हें नहीं चाहती थी।

डेसडिमोना दिखावटी रूप से उस रूप को अधिक चाहती थी जिसका आधार हृदय होता है। वह इसलिए ओथेलो पर रीझ गयी थी। ओथेलो जाति का 'मूर' था, और एक 'मूर' होने के कारण उसके शरीर का रंग स्वाभाविक रूप से काला था। ओथेलो डेसडिमोना के पिता का अतिशय प्रिय था।

डेसडिमोना का प्रेमी एक भिन्न जाति का काला 'मूर' था, किंतु इसलिए डेसडिमोना को दोष नहीं दिया जा सकता। ओथेलो का रंग ही काला था, नहीं तो उसमें कुछ ऐसी त्रुटि नहीं थी जिस कारण वह डेसडिमोना के योग्य वर नहीं हो सकता था। वह एक साहसी योद्धा था। तुर्कियों से लड़ते समय उसने ऐसी वीरता का परिचय दिया जिस कारण उसे एक सेनापति का पद मिला था। वेनिस में उसकी काफी प्रतिष्ठा थी। उसने विभिन्न देशों का भ्रमण किया था। डेसडिमोना उसके मुँह से उन भ्रमण-कहानियों को बड़े चाव से सुनती थी। ओथेलो अपने बचपन की स्मृति से लेकर बड़े-बड़े युद्धों तक की कहानी सुनाया करता था। शत्रुओं से उसे किस वीरता के साथ लड़ना पड़ा जब शत्रुओं ने आकर एकाएक घेरा डाल दिया, किस साहस के साथ सामना करना पड़ा जब विद्रोह अचानक उठ खड़ा हुआ। कभी दुश्मन जल तथा स्थल दोनों मार्गों से आक्रमण कर देते थे। इसके अतिरिक्त वह किस प्रकार जान को हथेली में लिये तोप के सामने जाकर डट जाता था। कभी-कभी विपक्षी उसे पकड़ भी लेते थे। जब कभी वह पकड़ा जाता था तब उसे किस प्रकार से दास बना कर बेचा जाता था, फिर उसे किस प्रकार से भागना पड़ता था उसका वह रोचक वर्णन सुनाता था। डेसडिमोना उन कहानियों को सुनती थी और इस प्रकार अटूट आग्रह तथा गंभीर मनन के साथ सुनती थी कि कहानी की सभी अद्भुत वस्तुओं और आश्चर्यजनक दृश्यों का जमघट उसके नेत्रों के सामने आ जाता

था। विस्तृत मैदान, सुन्दर-सुन्दर गुफाएँ आकाश को छूनेवाले ऊँचे-ऊँचे पहाड़ आँखों के सामने दिखाई पड़ते थे। उन कहानियों को सुनते-सुनते डेसडिमोना का चित्त इस प्रकार वशीभूत हो जाता था कि यदि डेसडिमोना को कुछ काम से उठ कर जाना पड़ता था तो वह उसको समाप्त कर झट चली आती थी।

एकबार डेसडिमोना ने ओथेलो से उसके अपने जीवन की सारी घटनाएँ सुनाने को कहा। इस पर ओथेलो सम्मत हुआ। वह जब-जब अपने कष्टों तथा मुसीबतों की कहानियाँ सुनाता गया तब-तब डेसडिमोना भी आँसू बहाती गयी। जब कहानी समाप्त हुई तब डेसडिमोना लम्बी उसाँसें भरती हुई बोली कि यदि ओथेलो का कोई मित्र उसे ऐसी कहानियाँ सुनाता तो वह अवश्य उससे प्रेम करने लगता। जब डेसडिमोना ने ऐसे स्पष्ट शब्दों में अपना प्रेम प्रकट किया तब ओथेलो भी उससे प्रेम करने लगा। उन दोनों का विवाह भी गुप्त रूप से हो गया।

ओथेलो का रंग अतिशय काला था फिर उसकी आर्थिक दशा भी उतनी अच्छी न थी जितनी डेसडिमोना के पिता की। इसलिए डेसडिमोना के पिता ब्रेबनसियो के निकट यदि ओथेलो इस विवाह का प्रस्ताव करता तो वह अवश्य उसे ठुकरा देता। ब्रेबनसियो ने अपनी लड़की को इसकी स्वतन्त्रता दी थी कि वह एक ऐसे युवक को अपना पति मनोनीत कर ले जो शासन-सभा का सदस्य है अथवा शीघ्र ही होनेवाला है। परन्तु उसकी इस आशा पर बिलकुल पानी फिर गया, जब कि डेसडिमोना ने एक काले 'मूर' को अपना पति मान लिया।

जब यह समाचार ब्रेबनसियो के कान तक पहुँचा तब वह सुनते ही मानो क्रोध से भभक उठा। वह शासन-सभा के सम्मुख यह अभियोग लाया कि ओथेलो ने अपनी वशीकरण-विद्या की सहायता से डेसडिमोना को भूतवशी कर विवाह किया है।

किसी लड़की को भुलावा देकर विवाह करना उस समय वेनिस में बड़ा अपराध माना जाता था, तथा उसके लिए भयानक दण्ड भी था।

परन्तु संयोग से उसी समय वेनिस में संवाद आया कि तुर्कियों ने साइप्रास द्वीप पर आक्रमण करने के लिए एक जहाजी बेड़ा भेजा है। साइप्रास उस समय वेनिसवालों के अधिकार में था। इसलिए उसकी रक्षा करना वेनिसवालों के लिए आवश्यक हो गया। सब की दृष्टि ओथेलो पर पड़ी। तुर्कियों को भगाने के लिए उस समय वेनिस में एकमात्र योग्य व्यक्ति ओथेलो ही था। अतएव ओथेलो शासन-सभा के सम्मुख उपस्थित हुआ एक योग्य सेना-नायक के रूप में। इधर वह एक अपराधी भी था। प्रधान विचारपति असमंजस में पड़ गये। फिर भी उन्होंने ब्रेबनसियो के अभियोग सुने। परन्तु ब्रेबनसियो जिस अधीरता के साथ ओथेलो के दोषों को कह गया उससे सभी को ये अभियोग मिथ्या जान पड़े।

विचारपति ने ओथेलो को अपना पक्ष समर्थन करने के लिए कहा। ओथेलो ने सारी घटना का वर्णन इस प्रकार से किया कि सभी को सन्तोष हुआ। विचारपति ने कहा—"यदि इस प्रकार से कोई कहानी सुना सका तो मेरी लड़की भी मुग्ध हो जायगी, ओथेलो ने जादू का प्रयोग नहीं किया, यदि किया भी हो तो उसी जादू का प्रयोग किया है जो सुन्दर ढंग से सुनाये गये कहानियों में छिपा रहता है।"

डेसडिमोना भी विचारपति के सम्मुख बोली—"बड़ी हो जाने पर लड़की पिता की नहीं रहती। मेरी माँ भी अपने पिता को छोड़ कर, मेरे पिता की आज्ञाकारिणी हो गयी थी।"

ब्रेबनसियो को अब क्या कहना था। वह डेसडिमोना को

ओथेलो के हाथ अर्पण कर चला गया। ओथेलो भी साइप्रास जाने के लिए तैयार होने लगा।

सेना लेकर ओथेलो साइप्रास पहुँचा। उसके साथ डेसडिमोना भी गयी। साइप्रास पहुँच कर ओथेलो ने सुना कि तुर्कियों के आक्रमण का कोई भय नहीं रह गया है, क्यों कि तुर्कवालों के जहाज तूफान में पड़ कर नष्ट हो गये हैं। ओथेलो बहुत आनंदित हुआ। परन्तु उसे क्या पता था कि अब भाग्य के साथ युद्ध करने में उसे कौन सा फल भोगना पड़ेगा। उसकी प्रियतमा पत्नी डेसडिमोना के चतुर्दिक ईर्षा की जो आग सुलग रही थी वह अब चक्रान्तकारियों के चक्रान्त से ईंधन पाकर एक विनाशकारी ज्वाला बन कर भभक उठी।

ओथेलो के मित्रों में प्रमुख स्थान था कैसियो का। कैसियो में विश्वास नामक एक आवश्यक गुण था। वह ओथेलो के अधीन एक सैनिक कर्मचारी था। वह एक रूपवान नव युवक के अतिरिक्त विनोदी, नम्र और मधुर-भाषी भी था। इसलिए सभी स्त्रियाँ उसे बहुत चाहती थीं। यहाँ कह देना अच्छा होगा कि, कैसियो उन लोगों में से था जिन लोगों के प्रति वे लोग सदा सन्देहयुक्त रहते हैं जो कि यौवन के अन्तिम भाग में पहुँच कर किसी रूपवती नव-यौवना से विवाह कर लेते हैं। परन्तु ओथेलो के मन में कैसियो के प्रति संशय की भावना कदापि न थी। ओथेलो का हृदय पवित्र था। इसके अतिरिक्त ओथेलो और डेसडिमोना में जब नवीन प्रेम का आदान-प्रदान चल रहा था तब कैसियो ओथेलो के दूत का काम करता था। ओथेलो एक सैनिक था। इसलिए स्वाभाविक रूप से कठोरता उसके अन्दर थी। इसी कारण ओथेलो डेसडिमोना के निकट स्वयं प्रेम-निवेदन करने नहीं जाता था बल्कि कैसियो को अपना दूत बना कर भेजा करता था। इसलिए कैसियो ही एकमात्र

ओथेलो के बाद डेसडिमोना से विशेष रूप से परिचित हो सका था। डेसडिमोना भी उसे अपने मित्र के समान मानती थी तथा स्नेह करती थी। ओथेलो के साथ डेसडिमोना का विवाह हो जाने पर भी कैसियो डेसडिमोना के पास जाता और घंटो वार्तालाप करता था। ओथेलो स्वयं गम्भीर प्रकृति का था। इसलिए उसे यह अच्छा ही लगता था।

ओथेलो ने कैसियो को एक सेनापति का पद दिया था। इस पर इयागो नाम के एक बूढ़े सैनिक कर्मचारी को बहुत क्रोध हुआ। इयागो समझता था कि वह कैसियो से अधिक उपयुक्त है और वह पद उसे ही मिलना चाहिये था। कैसियो को इयागो छैल-छबीला कह कर व्यंग करता था और मन ही मन अत्यन्त घृणा भी करता था। इयागो के मन में यह विश्वास भी पैदा हो गया था कि ओथेलो एमीलिया से प्रेम करता है। एमीलिया इयागो की पत्नी थी।

इयागो पहले से ही हीन प्रकृति का था। अब इन मन-गढ़ंत बातों को लेकर वह व्यर्थ ही माथा-पच्ची करने लगा। उसने एक साथ कैसियो, ओथेलो और डेसडिमोना से बदला लेना चाहा। इसलिए वह एक ऐसा जाल फैलाने लगा जिस में सभी फँस गये।

इयागो अतिशय चतुर था। वह मानवी प्रकृति को भली-भाँति समझता था। वह यह भी जानता था कि मनुष्य को अधिक कष्ट देनेवाला यदि कोई भयानक मानसिक रोग हो तो वह है—सन्देह। वह समझ गया कि यदि किसी प्रकार कैसियो के प्रति ओथेलो के मन में संदेह पैदा कर दिया जाय तो उसका काम बन सकता है। इस प्रकार कैसियो अथवा ओथेलो दोनों में से एक अवश्य मर मिटेगा।

सेनापति और उसकी पत्नी का साइप्रास आना तथा बिना युद्ध के शत्रुओं का विनष्ट होना—दोनों ही प्रसन्नता के विषय थे। साइप्रास के कोने-कोने में आनंद मनाये जाने लगा। वहाँ के अधिवासी तथा आगंतुक सैनिक सभी इस उत्सव में सम्मिलित हुए।

उसी रात ओथेलो ने कैसियो को यह आदेश दिया कि वह नवागत सैनिकों में अवश्य शांति बनाये रखे। मदिरा-पान कर कोई भी सैनिक ऐसा कोई भी कार्य न करे जिससे वहाँ के अधिवासी उन पर असंतुष्ट हों। दुष्ट इयागो के लिए यह एक अच्छा मौका था। वह भली-भाँति सोच-विचार कर षड्यंत्र रचने लगा।

इयागो ने अपनी कुशल चाटुकारिता के द्वारा कैसियो को अपने वश में कर लिया और उसे पीने के लिए अच्छी मदिरा दी। जब नशा भली-भाँति जम उठा तब कैसियो का होश-हवास भी जाता रहा। अब इयागो ने कैसियो के पास एक अल्प-वयस्क सैनिक को भेजा जो कैसियो को व्यर्थ ही छेड़ने लगा। इस पर कैसियो ने तलवार खींच ली। मोन्टानो नामक एक कर्मचारी ने उन दोनों को शांत करना चाहा। परंतु उसका कुछ भी असर उन पर नहीं पहुँचा। वे लड़ते रहे। मोन्टानो उन्हें रोकने गया तो उलटा उसी को चोट खानी पड़ी।

जब धीरे-धीरे बात बढ़ गयी तब इयागो ने किले के विपद-सूचक घंटा बजा दिया। यह घंटा तो उस समय बजाना चाहिये जब सैनिकों में विद्रोह हो जाता है। छोटे-छोटे दंगे-फिसाद में इसे बजाना अनुचित है। घंटे की आवाज से ओथेलो की नींद टूटी। वह शीघ्र ही वहाँ आ पहुँचा। तब तक कैसियो धीरे-धीरे प्रकृतिस्थ होने लगा था। इन सब बातों से उसे बहुत पश्चात्ताप हुआ। ओथेलो ने जब इयागो से उस घटना का विवरण जानना चाहा, तब इयागो धीरे-धीरे कुंठित शब्दों में सब कुछ कह गया। उसने कहते समय ऐसा ढोंग दिखाया मानो उसे विवश होकर

सब कुछ कहना पड़ रहा है। इयागो ने कैसियो का दोष तो भली-भाँति बताया परंतु अपना कुछ न कहा। कैसियो भी चुप रहा। एक तो उसे कुछ याद नहीं आ रहा था, फिर अपनी हरकतों से उसकी आँखें जमीन में गड़ रही थीं।

ओथेलो में विलक्षण नियम-निष्ठा थी। उसने कैसियो को अपने पद से हटा दिया। इस प्रकार इयागो की पहली चाल सफल रही।

पदच्युत होकर कैसियो अपने कपट मित्र इयागो के निकट पश्चात्ताप करने लगा कि अब वह मुँह दिखाने के योग्य नहीं रह गया। सहकारी-सेनापति का पद अब उसे कभी नहीं मिल सकता। क्योंकि ओथेलो उससे घृणा करने लगा है। अब वह एक शराबी है।

इयागो उचित अवसर जान कर कैसियो से बोला कि आज-कल सेनापति की पत्नी डेसडिमोना ही वास्तव में सेनापति है। यदि डेसडिमोना कैसियो के लिए ओथेलो के निकट अनुरोध करती है तो काम अवश्य बन जायगा। डेसडिमोना के कहने पर कैसियो को अपना खोया हुआ पद तथा ओथेलो की मित्रता पुनः मिल सकती है। इयागो का उपदेश साधारण विचार से बहुत ही आकर्षक था परंतु यह उसकी दूसरी चाल थी।

इयागो के कथनानुसार कैसियो ने डेसडिमोना से सब कुछ कहा। डेसडिमोना ने प्रतिज्ञा की कि वह अवश्य कैसियो को उसका अपना पद दिला देगी।

डेसडिमोना ने अपने पति से इस विषय को लेकर कहा। ओथेलो भी अपनी पत्नी के इस आग्रह को ठुकरा न सका, यद्यपि वह कैसियो के व्यवहार से असंतुष्ट था। उसने डेसडिमोना से कुछ दिन और रुक जाने को कहा। क्योंकि अपराधी को शीघ्र क्षमा करना अनुचित है। परंतु डेसडिमोना छोड़नेवाली न थी।

वह कैसियो का पक्ष लेकर आग्रह करती ही गयी। वह बोली कि कैसियो अपने किये पर बहुत अनुताप करता है। उसे क्षमा करना ही उचित होगा। डेसडिमोना ओथेलो को उन दिनों की याद दिलाने लगी जब कैसियो ओथेलो का प्रतिनिधि होकर उसके निकट प्रेम निवेदन करने जाता था। अगर कभी डेसडिमोना ओथेलो के विपक्ष में कुछ कहती थी तो कैसियो अपने मित्र का पक्ष समर्थन करता था। डेसडिमोना कैसियो के लिए इस प्रकार सिफारिश करने लगी कि ओथेलो डेसडिमोना को निराश न कर सका, उसने शीघ्र ही कैसियो को अपने पद पर प्रतिष्ठित करने का वचन दिया।

एक दिन कैसियो डेसडिमोना के निकट अपने बारे में कुछ कहने के लिए आया हुआ था। जब वह लौट जाने लगा तब ओथेलो और इयागो दूसरे रास्ते से वहाँ उपस्थित हुए। इयागो को कैसियो के आने का पता पहले से ही था। उसने धीरे-धीरे ओथेलो को सुनाने के लिए कहा,—"मुझे यह सब बुरा लगता है।" ओथेलो ने पहले उसकी बात पर ध्यान न दिया। लेकिन बाद में यह बात उसके मन में घोर संशय पैदा करने में समर्थ हुई।

डेसडिमोना के चले जाने के बाद इयागो ने यों ही मानो ओथेलो से पूछा कि विवाह के पूर्व ओथेलो और डेसडिमोना में जो प्रेम संघटित हुआ था क्या कैसियो को उसका पता था। ओथेलो ने कहा कि उस प्रेम के व्यापार में कैसियो स्वयं उसका प्रतिनिधि था। प्रेम के आदान-प्रदान में कैसियो ओथेलो के दूत का काम करता था। ओथेलो ने जब यह बात कही तब इयागो ने मानो कुछ भाँप लिया हो इस ढंग से कहा,—"ओफ! इसलिए इतना!"

ओथेलो को इयागो का कहा याद आया—"मुझे यह सब

बुरा लगता है।" ओथेलो को ऐसा जान पड़ा मानो इन शब्दों में कोई विशेष अर्थ छिपा है। वह इयागो को भला आदमी जानता था। इसलिए उसने इयागो से सब कुछ खोलकर बताने को कहा। इस पर इयागोने कहा—"यह सब देखने का भ्रम भी हो सकता है। किसी के कुछ कह देने पर यदि किसी के मन में नाहक सन्देह पैदा हो जाय तो अफसोस की बात है। थोड़े संदेह के बल पर भी किसी के नाम पर धब्बा लगाना अनुचित है।"

इयागो की बातों को सुन कर ओथेलो की उत्सुकता बढ़ती ही गयी। अन्त में वह सारा हाल सुनने के लिए पागल-सा हो उठा। परंतु इयागो ने कुछ भी न कहा। केवल अपनी बातों को व्यर्थ ही पेचीदा करता गया। जिससे ओथेलो की मानसिक शांति में बाधा पहुँचे। जो भी कुछ हो, ओथेलो का संशय डेसडिमोना के आसपास ही मँडराने लगा।

पहले-पहल ओथेलो ने इस द्विधा को अपने मन से हटाना चाहा। वह मन ही मन वाद-विवाद करने लगा। डेसडिमोना सुंदरी है, लोगों से मिलना-जुलना वह पसंद करती है; वार्तालाप में तो वह इतनी निपुण है कि किसी का भी मन आसानी से मोह सकती है। गाने और नाचने में शायद ही उसे कोई प्रतिद्वन्द्वी मिले। परंतु सब कुछ उसी स्त्री को शोभा देता है जिसमें सतीत्व अटूट है। ओथेलो सोचता गया। फिर भी डेसडिमोना के बारे में तब तक कोई किसी प्रकार का संदेह प्रकट नहीं कर सकता जब तक कि कोई विश्वास-योग्य प्रमाण सामने न मिले।

इयागो ने साफ कह दिया कि उसके पास उसके कहे का कोई सबूत नहीं है; किंतु ओथेलो जरूर नारी-चरित्र से परिचित होगा। वह स्वयं इसकी सत्यता का प्रमाण ढूंढ़ ले। जो लड़की अपने बाप को छोड़कर विवाह कर सकती है वह पति को धोखा देकर दूसरे से भी प्रेम कर सकती है।

इयागो की युक्ति ओथेलो को समुचित जान पड़ी।

इयागो ओथेलो को समझाने लगा कि डेसडिमोना का ओथेलो से विवाह करना एक ख्याल मात्र था। ख्याल पूरा हो जाने पर मति पलटते देर नहीं लगती। उसने ओथेलो से यह भी कह दिया कि वह कैसियो के बारे में शीघ्रता न करे। पहले सारी घटना को अच्छी तरह जान ले फिर किसी निश्चय पर पहुँचे। इयागो ने इस प्रकार डेसडिमोना की सरलता और मिलनसारी को ही डेसडिमोना के विनाश का कारण बनाया।

ओथेलो ने इयागो की बात मान ली और जब तक डेस-डिमोना के विरुद्ध कोई उचित प्रमाण नहीं मिले तब तक शांत रहने का निश्चय किया। ओथेलो ने मौन धारण करने की प्रतिज्ञा तो की पर उसकी मानसिक स्थिरता और शांति सदा के लिए जाती रही। किसी भी काम में उसका मन नहीं लगता था। सुसज्जित सेना, फहराती हुई पताका, सुरचित व्यूह, गम्भीर भेरीनाद या घोड़ों की हिनहिनाहट अब उसके वीर हृदय पर कुछ भी प्रभाव न डाल सकती थी। साहस, महत्ताकांक्षा और गर्व आदि एक योग्य सेनानायक के सभी गुण उसके मन से लुप्त होने लगे। उसकी चिन्ता-शक्ति द्विधा में लटकने लगी। एक बार वह सोचता था कि डेसडिमोना पति-परायण है किन्तु दूसरे ही क्षण वह उसे चरित्रहीना मान लेता था। इस प्रकार उसके मन में विरोधी भावों का द्वन्द्व मचा रहा।

एकदिन ओथेलो से न रहा गया। उसने इयागो की गरदन पकड़ कर कहा—"डेसडिमोना का दोष दिखा दे नहीं तो तुझे अभी मार डालूँगा।" इयागो ने इस पर क्रुद्ध होने का बहाना करता हुआ कहा—"क्या तुमने डेसडिमोना के पास एक कामदार रूमाल नहीं देखा ?"

ओथेलो ने उत्तर दिया कि वैसा रूमाल तो उसीने डेसडिमोना को दिया था।

इयागो बोला कि उसने उसी रूमाल से कैसियो को मुँह पोंछते देखा है।

संशय-युक्त मन इस तुच्छ घटना को महान सत्य जान कर विचार-रहित हो उठा। ओथेलो के मन में प्रतिहिंसा की तीव्र भावना जाग उठी। जब उसने कैसियो के हाथ में सचमुच डेसडिमोना का रूमाल देखा तब उसकी बची विचार-शक्ति भी नष्ट हो गयी। उसने यह जानना नहीं चाहा कि यह रूमाल कैसियो को मिला कैसे? वस्तुतः डेसडिमोना ने वह रूमाल कैसियो को नहीं दिया था, क्यों कि वह उसके पति का दिया पहला उपहार था। भला वह उस मूल्यवान उपहार को कैसे दूसरे पुरुष को दे सकती थी। इस बारे में डेसडिमोना और कैसियो समान निरपराध थे। इस घटना के पीछे दुष्ट इयागो का षड्यंत्र था। इयागो के भुलावे में आकर उसकी पत्नी एमीलिया ने डेस-डिमोना से वह रूमाल बेल-बूटे काढ़ने के लिए चुरा लिया था। पत्नी से लेकर इयागो ने उस रूमाल को उस रास्ते पर रख छोड़ा जिधर से कैसियो प्रायः आता-जाता था। इस प्रकार की चाल से रूमाल कैसियो के हाथ में चला गया।

ओथेलो ने घर जाकर डेसडिमोना से मिल कर के कहा कि उसके सिर में दर्द हो गया है इसलिए डेसडिमोना उस रूमाल को उसके माथे पर लपेट दे जिस रूमाल को उसने डेसडिमोना को उपहार के तौर पर दिया था। लेकिन वह रूमाल खो गया था। इसलिए डेसडिमोना दूसरा रूमाल ला कर बाँधने लगी। इस पर ओथेलो ने कहा—"नहीं! नहीं! वह रूमाल लाओ जिसे मैंने तुम्हें दिया था।" परन्तु डेसडिमोना वह रूमाल कैसे ला सकती थी। ओथेलो बोला—"यह बहुत अन्याय है। मिस्र-

देश की एक जादूगरनी ने वह रूमाल मेरी माँ को दिया था। उस जादूगरनी ने मेरी माँ से कहा था कि यह रूमाल अपने पास रखने से किसी भी स्त्री को अपने पति का प्रेम मिल सकता है। लेकिन वह रूमाल खो देने पर अथवा किसी को दे देने पर उसका पति उससे घृणा करने लगेगा। मेरी माँ ने मरते समय मुझे वह रूमाल देकर मेरी भावी पत्नी को देने के लिए कहा था। मैंने वैसा ही किया है। उस रूमाल को तुच्छ न समझना।"

डेसडिमोना रूमाल के इस गुण को सुन कर डर गयी। वह जानती थी कि रूमाल खो गया है। अब ओथेलो का प्रेम घृणा में परिवर्तित होने लगेगा। ऐसी अनिष्ट-चिन्ता से वह मन ही मन घबड़ा उठी।

ओथेलो उत्तेजित हो उठा। वह बार-बार उस रूमाल के लिए हठ करने लगा। डेसडिमोना भी निरुपाय होकर ओथेलो का ध्यान अन्यत्र आकृष्ट करने के लिए बोली—"आप मुझे रूमाल माँग कर भुलावा दे रहे हैं। कैसियो के बारे में आपने क्या किया ?"

ओथेलो यह सुन कर मानो पागल हो उठा और घर से निकल गया। अब डेसडिमोना के मन में भी यह सन्देह पैदा हो गया कि ओथेलो कैसियो पर सन्देह करता है तथा उसके चरित्र पर भी ओथेलो का विश्वास नहीं रह गया। परन्तु दूसरे ही क्षण वह ओथेलो पर किये सन्देह के कारण अपने आपको कोसने लगी और अपने मन को यह कह कर मनाने लगी कि आज ओथेलो का मिजाज किसी अन्य कारण से बिगड़ गया होगा।

पुनः ओथेलो और डेसडिमोना की भेंट हुई। अब ओथेलो डेसडिमोना को यह कह कर तिरस्कृत करने लगा कि वह अवश्य किसी अन्य पुरुष से प्रेम करती है। ओथेलो ने उस व्यक्ति का

नाम नहीं बताया, केवल आकुल हो कर स्वयं रोने लगा। डेसडिमोना ने पूछा—"आप रोते क्यों हैं?" ओथेलो बोला कि, वह सब कुछ सहन कर सकता है लेकिन डेसडिमोना के अविश्वास ने उसे धैर्यहीन बना दिया है।

ओथेलो के इस प्रकार के निरर्थक सन्देह से डेसडिमोना का मन भी क्षुब्ध हो उठा। वह बिलकुल स्तब्ध हो गयी। ओथेलो चला गया। डेसडिमोना की देह भी सोचते-सोचते सून्न हो चली। कुछ सोचने भर की शक्ति अब उसके पास न बची। उसने नौकरानी से शय्या प्रस्तुत करने को कहा। जब शय्या तैयार थी तब उसने उस शय्या पर सुहागरातवाली सुजनी बिछा दी और सो गयी। किसी छोटी बच्ची को डाँटने पर वह जिस प्रकार रूठ कर पड़े-पड़े अपने आप सो जाती है, डेसडिमोना भी उसी प्रकार गहरी नींद सो गयी।

अब ओथेलो ने डेसडिमोना की हत्या करने का ही निश्चय कर लिया। डेसडिमोना जब सो रही थी तब वह उसके घर में घूसा। घर के भीतर पैर रखते ही वह मन ही मन चिन्तित हो उठा कि क्या किया जाय। वह बार-बार डेसडिमोना के निर्दोष मुखमंडल की ओर देखने लगा। हो सकता है कहीं कोई अपराध का चिह्न दिखाई पड़े। परन्तु वह किसी भी प्रकार सफल न हो सका। डेसडिमोना की संगमर्मर-सी शुभ्र और सुन्दर देह से खून बहाना उसके लिए असंभव हो गया। फिर भी वह कर भी क्या सकता था। डेसडिमोना असती है—उसे तो मरना ही होगा। ओथेलो ने उसके कपोल को एक बार चूमना चाहा। परन्तु वह अंतिम चुम्बन इतना मधुर था कि ओथेलो बार-बार उस मुख को चूमने लगा। उसका अंतिम चुम्बन अंत न हो सका। वह रोता गया और चूमता गया—चूमता गया और रोता गया।

चुम्बनों की बौछार से डेसडिमोना जाग गयी। उसके सामने ओथेलो की भयंकर मुखाकृति थी। उसकी आँखों में खून उतरा हुआ था वह होठों को चबा रहा था।

ओथेलो ने उसे मरने के पूर्व ईश्वर के निकट प्रार्थना करने को कहा। लेकिन डेसडिमोना अब भी ओथेलो पर भरोसा रखती थी। वह अपना दोष जानने के लिए ओथेलो के निकट बार-बार प्रार्थना करने लगी। परंतु ओथेलो के मन में अब दया का अवशेष कहाँ था ?

ओथेलो ने अब कैसियो का नाम लिया और उसे रूमाल प्रदान करने की बात कही। यह सुन कर डेसडिमोना सारी घटना कहने ही जा रही थी कि ओथेलो ने उसका बोलना सदा के लिए बंद कर दिया।

इतने में लहू-लुहान कैसियो वहाँ आ पहुँचा। इयागो ने उसे इस संसार से हटा देने के लिए आदमी भेजा था। परन्तु वह आदमी कैसियो को जान से न मार सका। इधर इयागो ने भी पकड़े जाने के भय से उस घातक को मार डाला। परन्तु उस घातक के निकट जो चिट्ठियाँ मिलीं उनसे इयागो का दोष प्रमाणित हो गया। कैसियो अब ओथेलो के निकट क्षमा की प्रार्थना करने तथा यह जानने आया कि ओथेलो ने उसकी हत्या कर देने के लिए क्यों इयागो को नियुक्त किया था।

यह आविष्कार ओथेलो के लिए बड़ा विकट था। अब उसे ऐसा लगने लगा, मानो सिर पर आसमान टूट पड़ा हो। वह जान गया कि डेसडिमोना निर्दोष थी। वरन् वह स्वयं एक हत्यारा है। प्रियतमा पत्नी की हत्या का कलंक उसी के माथे पर है।

क्षोभ और आत्मग्लानि के कारण उसका जीवित रहना कठिन हो गया। उसने उसी क्षण अपनी तीक्ष्ण तलवार से अपना संशयपूर्ण जीवन समाप्त कर लिया।

यह शोक-समाचार वेनिस की शासन-सभा के निकट पहुँचा और इयागो को अपने किये पर प्राण-दंड मिला।



तूफान

इटली में मिलान नाम का एक नगर था। वहाँ के राजा का नाम था प्रोसपारो। उसकी ज्ञान-पिपासा इतनी प्रबल थी कि वह दिन रात पुस्तकों के अध्ययन में डूबा रहता था। अध्ययन करते समय उसे इस दुनियाँ का ज्ञान नहीं रहता था। राज्य के प्रबन्ध का भार उसके छोटे भाई एन्टोनियो के हाथ में था। यदि प्रोसपारो स्वयं कहीं का राजा था तो उसी—ज्ञान-राज्य का।

छोटे भाई के ऊपर प्रोसपारो का बड़ा विश्वास था। वह सोचता था कि उसका भाई भी वैसा ही धार्मिक है जैसा कि वह स्वयं। परन्तु, वास्तव में एन्टोनियो नीच तथा बड़े भाई के सरल विश्वास का सम्पूर्ण अयोग्य था। उसके लिए राज्य का लोभ केवल त्याग करना कठिन ही नहीं, बल्कि असंभव था। नेपलस के राजा को कुछ मूल्यवान उपहारों का लालच धरा कर उसकी सहायता से अपने स्नेहशील भाई को हटा कर उसने मिलान के सिंहासन पर अपना अधिकार कर लिया।

प्रोसपारो मारा तो नहीं गया परन्तु उसकी इकलौती लड़की मिरान्दा के साथ एक टूटे-फूटे पुराने जहाज में बैठा कर सम्बलहीन अवस्था में वह समुद्र में छोड़ दिया गया। मिरान्दा उस समय बहुत छोटी थी। बाप-बेटी के लिए न तो खाने की चीजों और न पीने तक के पानी का ही प्रबन्ध किया गया। जहाज डूब कर अथवा भूख और प्यास के कारण, नहीं तो भयानक

ठंडक से ठिठुर कर बाप और बेटी अपने आप मर जायेंगे—शत्रुओं का ऐसा ही अभिप्राय था।

परन्तु मिलान में प्रोसपारो का एक बूढ़ा सरदार बहुत ही दयाशील तथा धार्मिक था। ज्ञानी तथा धर्मशील राजा और उसकी शिशु-कन्या की ऐसी दुर्दशा देख उसका मन रो उठा। उसने औरों की आँखें बचा कर भोजन-सामग्रियाँ, पानी, वस्त्र और अन्य आवश्यक चीजें तथा प्रोसपारो की पुस्तकें जहाज में भेज दीं। इन पुस्तकों को प्रोसपारो अपने प्राणों से भी अधिक चाहता था।

तेज हवा के कारण जीर्ण और पुराना जहाज एक ओर चलने लगा। बड़ी-बड़ी लहरें जहाज पर टूट पड़ने लगीं। महात्मा प्रोसपारो अपने जीवन के लिए कुछ भी भीत नहीं हुआ, क्योंकि धार्मिक और ज्ञानी मनुष्य सदा मरने के लिए प्रस्तुत रहते हैं। फिर भी, प्राणों से भी प्यारी उस छोटी-सी लड़की के भयानक परिणाम को सोच कर उसकी आँखों से आँसू की धाराएँ उमड़ पड़ीं। किन्तु छोटी मिरान्दा इस संकट को क्या जानती थी। वह तो पिता की गोद में बैठ कर समुद्र की लहरों तथा झागों को देख कर प्रसन्न होने लगी, कभी आनन्द के मारे खिल-खिला-कर हँसने लगी। जहाज भी लहरों के माथे पर आरूढ़ हो चढ़ते-उतरते समुद्र के किनारे एक सुरक्षित स्थान में आकर लगा। मिरान्दा को गोद में लिये प्रोसपारो वहाँ उतरा। वह जिस टापू पर आ पहुँचा था वह किस्म-किस्म के पेड़-पौधों से पूर्ण था। अचानक एक पुराने पेड़ में से रोने की-सी आवाज निकलने लगी। दशों दिशाएँ उससे गूँज उठीं। उस जंगल में जितने शेर थे चौंक उठे और गरजने लगे। भालू तो डर कर इधर-उधर भाग गये।

प्रोसपारो अनेक विषयों का पंडित था। वह जादू भी खूब जानता था। उसने उस जादू की सहायता से उस रोते हुए पेड़

को बीचो-बीच छेद डाला। अब उस पेड़ में से एक छोटी-सी परछाईं निकल आयी। परछाईं के समान शरीरवाले उस अद्भुत जीव का नाम था एरीयल। उसने छुटकारा पाने के कारण आनन्दित हो कर प्रोसपारो के आगे मस्तक नवाया। फिर वह अपनी कहानी सुनाने लगा।

उस टापू पर एक बूढ़ी जादूगरनी रहती थी, जो सदा दूसरों की बुराई किया करती थी। उसीका कहा न मानने पर एरीयल तथा अन्य कई जीवात्माओं की ऐसी दशा हुई थी। बूढ़िया ने उनको बारह साल तक पेड़ों में कैद कर रखा था। अब वह जादूगरनी मर चुकी थी। दयालु प्रोसपारो ने अन्य जीवात्माओं को भी मुक्त कर दिया। वे इस कारण प्रोसपारो के आज्ञाकारी हो कर उस टापू पर रहने लगे।

उस टापू पर एक और प्राणी था। जिसका नाम था कालीबान। वह उस बूढ़िया जादूगरनी का इकलौता बेटा था, जो देखने में अतिशय कुरूप और बड़ा ही निर्बोध था। पहले-पहल प्रोसपारो ने उसके साथ दया का बर्ताव किया और अपने पास रख उसे सिखा-पढ़ा कर हर तरह से शिष्ट और सभ्य बनाने की कोशिश की। परन्तु कालीबान के स्वभाव में कुछ भी परिवर्तन न हुआ। वह वैसा ही उजड्ड और दुष्ट बना रहा जैसा की पहले था। अन्त तक प्रोसपारो ने ऊब कर उसे अपना दास बना लिया तथा रसोई बनाने के लिए लकड़ी और पानी लाने को तैनात किया। प्रोसपारो ने उसे अपनी साफ-सुथरी गुफा में लाकर रखा था लेकिन अब उसे उसकी अपनी पुरानी गंदी गुफा में भेज दिया।

मिरान्दा उस समुद्री टापू में एक शिशु के रूप में आयी थी जहाँ वह धीरे-धीरे सुन्दरी बालिका के रूप में परिवर्तित होने लगी। वहाँ वह अपने पिता के पास पढ़ने लगी और तरह-तरह की शिक्षाएँ पाने लगी। लेकिन उसे एक अभाव बहुत खलता था,

वह है किसी साथी का। प्रोसपारो और एरीयल के सिवाय वहाँ और कोई न था जिससे वह बातें कर सकती थी। कालीबान इतना बदसूरत और भयंकर स्वभाव का था कि मिरान्दा उसके पास जाने का साहस न करती थी।

देखते-देखते मिरान्दा ने कैशोर-सीमा को पार कर यौवन-सीमा में कदम रखा।

अब एक दिन एकाएक आकाश में बादल छाया। काले-काले मेघ चारों दिशाओं से मँडराने लगे। हवाएँ तेजी से बहने लगीं। आकाश की बिजलियाँ एक साथ चमक उठीं। बादल के गरजने से दुनियाँ काँप उठी। मानो प्रलय मच गया हो।

प्रोसपारो ने अपनी जादू-विद्या की सहायता से ऐसा किया था। उसे मालूम हो गया था कि उसका छोटा भाई एन्टोनियो और उसके सहायक नेपलस का राजा तथा राजकुमार उस टापू के पास से जहाज में चढ़ कर कहीं जा रहे हैं।

तेज तूफान के कारण उनका जहाज इस तरह डगमगाने लगा और ऊँची-ऊँची लहरों से टकरा कर पटकनियाँ खाने लगा कि सभी डुब मरने के भय से घबराने लगे। लेकिन उन्हें जान से मारने की इच्छा प्रोसपारो को न थी। उसने तो केवल डराने के लिए ऐसा किया था। बिजली चमकने के साथ-साथ एरीयल भी भयंकर रूप धारण कर जहाज के लोगों को डराने लगा।

इतने में जहाज पर बिजली गिरने की डरावनी आवाज हुई। जहाज के सभी लोग जल मरने के भय से समुद्र में कूद पड़े और न जाने कौन किधर बह गया। एक विपत्ति से उद्धार पाने के लिए उन्होंने एक दूसरी विपत्ति मोल ली जिससे छुटकारा पाने की तनिक भी आशा न रही।

प्रोसपारो और एरीयल अपनी जादूगरी से असम्भव को भी सम्भव बना सकता था। उन्होंने जहाज को और जहाज के

सभी लोगों को सुरक्षित स्थान में पहुँचाने की व्यवस्था की। जहाज के मल्लाह उनके जादू के कारण गहरी नींद सो गये, प्रोसपारो ने उन्हें एक दूसरे जहाज में चढ़ा कर नेपलस भेज दिया। उनको कुछ भी नुकसान उठाना न पड़ा। उनके पहनावे तक भी ज्यों के त्यों रहे।

नेपलस का राजकुमार फार्दिनन्द जहाँ रखा गया था वहाँ से उसके पिता तथा अन्य साथी कुछ दूरी पर रखे गये। फार्दिनन्द के पिता तथा साथियों ने मन ही मन सोचा कि फार्दिनन्द डुब मरा है। इधर फार्दिनन्द ने अनुमान किया कि केवल वही बच गया है, बाकी लोग मर चुके हैं। इस प्रकार से सभी औरों के मरने पर शोकाकुल हुए और रोने-पीटने लगे।

जब सभी अपने साथियों की मृत देहों को ढूँढ़ने के लिए उस टापू का चक्कर काटने लगे तब प्रोसपारो ने एरीयल को परी का रूप धरने के लिए कहा। जब एरीयल ने वैसा किया तब उसे प्रोसपारो के सिवाय कोई दूसरा नहीं देख सकता था। लेकिन उसके मधुर संगीत को सभी सुन सकते थे।

जहाँ फार्दिनन्द पिता की मृत्यु से शोकाकुल हो कर पड़ा था वहाँ एरीयल जा कर मधुर स्वर में गाने लगा। फार्दिनन्द उस-संगीत की मधुर-ध्वनि से चकपका उठा और चारों तरफ देखने लगा कि यह मीठी आवाज आ कहाँ से रही है? एरीयल गा रहा था—"प्यारे! मेरा हाथ पकड़ कर पीले-पीले बलुए किनारे पर आना!"

गीत की मधुर ध्वनि पानी से निकल रही है समझ कर राजकुमार आगे बढ़ा। परन्तु यह नहीं समझ पाया कि यह सुरीला राग आ कहाँ से रहा है? एरीयल गा रहा था—"हे युवक! तुम्हारे पिता समुद्र के नीचे आराम से सो रहे हैं। उनकी हड्डियाँ मूँगा बन चुकी हैं और आँखें सुन्दर मोतियाँ। घबराओ नहीं,

उनकी सुन्दरता में कमी नहीं आ पायी, वरन् सागर की शोभा से उसमें अधिकता आयी है। जल-देवता के आशीर्वाद से समाधि के घंटे कितने मधुर स्वर में रुक-रुक कर बज रहे हैं। सुनो! वे फिर बज रहे हैं—डिं-डं! डिं-डं!"

साथ ही साथ अन्य जीवात्माओं ने दोहराया—"सुनो! वे फिर बज रहे हैं डिं-डं! डिं-डं!"

इतना सुन कर नेपलस के राज-कुमार का शोक चौगुना बढ़ गया। वह जान गया कि अब उसके पिता जीवित नहीं हैं, सागर की देवियाँ यही संदेश सुना रही हैं। फार्दिनन्द जब मन की ऐसी दशा लिये पिता की चिंता में निमग्न था तब प्रोसपारो मिरान्दा को साथ लेकर वहाँ उपस्थित हुआ।

मिरान्दा शैशव से ही मनुष्य-समाज से दूर एक टापू पर पली थी, जहाँ उसके पिता को छोड़ कोई और मनुष्य कभी दिखाई नहीं पड़ा। इसलिए उसने उस सुन्दर युवक को देवता समझा। फार्दिनन्द को भी यह अनुमान हुआ कि लावण्यमयी मिरान्दा उस टापू की देवी होंगी। उसकी अनुपम सुन्दरता को देख कर युवक भ्रम में पड़ गया। युवक ने अपने अनजान में उस देवी के चरणों में हृदय के संचित प्रेम के अर्घ चढ़ाए।

परन्तु जब वे एक दूसरे से बातें करने लगे तब वे समझ गये कि वे इसी दुनियाँ के रहनेवाले हैं। न तो वह युवक देवता है और न वह युवती देवी। तब फार्दिनन्द ने संकोच त्याग कर उस देवी-रूपिणी मिरान्दा के निकट अपना हृदय-द्वार खोल दिया और विवाह का प्रस्ताव किया। प्रोसपारो, जो चाहा था सो हुआ देख कर मन ही मन बहुत प्रसन्न हुआ। लेकिन उसने कुछ भी अधीरता नहीं दिखायी। उसने इस होनेवाली जोड़ी की परीक्षा लेने की सोची! वह जानना चाहता था कि वे किस प्रकार एक दूसरे से प्रेम करते हैं।

प्रोसपारो ने मानो क्रोध में आकर कहा—"देख युवक ! तू मुझे इतना मूर्ख न समझ । मैं जानता हूँ कि तू किसी शक्तिशाली राजा का गुप्तचर बन कर आया है । तू मुझसे इस टापू का अधिकार छीनना चाहता है । तुझे अवश्य इस अपराध का दण्ड भोगना पड़ेगा । चल, मैं तुझे जंजीर से जकड़ता हूँ। यहाँ तुझे जंगली कंदा और अनाज का भूसा ही खाने को मिलेगा। पीने को समुद्र का खारा पानी ही तेरे लिए उचित होगा । चल ! मेरे साथ चल !"

प्रोसपारो के इस प्रकार के व्यवहार से फार्दिनन्द का धीरज टूटता रहा । उसने म्यान से तलवार खींच ली । लेकिन प्रोसपारो की विस्मयकारी जादूगरी के आगे वह कुछ न कर सका । वह तलवार की मूठ पकड़ कर जहाँ का तहाँ खड़ा रह गया, तनिक डोल भी न सका ।

जादू के विस्मयकारी प्रभाव के आगे अपने को हार मानते देख वह चुपचाप खड़ा रह गया । आत्मरक्षा की व्यर्थ चेष्टा उसने नहीं की । प्रोसपारो का कहा मान कर वह उसका अनुगमन करने लगा । यहाँ बन्दी होकर रहने पर वह दिन भर में कम से कम एक बार भी मिरान्दा को देख सकेगा जान कर मन ही मन प्रसन्न हुआ । इसलिए उसने सभी कष्टों के सहने का निश्चय किया ।

दया और सरलता की जीति-जागती प्रतिमा मिरान्दा पिता की इस कठोरता से दुःखित होकर कहने लगी, "पिताजी ! आप ऐसे सुन्दर मनुष्य के साथ क्यों इस प्रकार निर्दय व्यवहार कर रहे हैं ?"

प्रोसपारो ने उस भोली लड़की को डाँट कर कहा,—"पगली ! तू नहीं जानती! तू कालीबान और इसका देख कर ही समझ गयी कि संसार का कोई भी मनुष्य इसके समान सुन्दर नहीं है ।

संसार में तो एक से एक सुन्दर मनुष्य हैं जिनके आगे यह युवक कालीबान से भी कुत्सित जान पड़ेगा।"

मिरान्दा ने सिर झुका लिया और कहा,—"इनसे बढ़ कर हजारों सुन्दर मनुष्य हो सकते हैं लेकिन उन्हें देखने की इच्छा नहीं है।"

तीनों चलने लगे। चलते-चलते प्रोसपारो कुछ आगे बढ़ गया। अवसर पा कर मिरान्दा ने फार्दिनन्द को सान्त्वना देते हुए कहा—"आप निश्चिन्त रहिये! मेरे पिता की बातों से उन्हें आप जिस प्रकार निर्दय और कठोर समझने लगे हैं वास्तव में वे वैसे नहीं हैं! इसके पहले मैंने कभी उनको ऐसे कठोर शब्द कहते नहीं सुना।"

तीनों प्रोसपारो के निवास-स्थान पर पहुँचे। प्रोसपारो ने उस राजकुमार को कालीबान की तरह लकड़ी ढोने के काम में नियुक्त किया। राजकुमार होते हुए भी उसने इसलिए ऐसे कष्ट और अपमान का काम स्वीकार किया कि इतने पर भी वह अपनी प्राण-प्रतिमा मिरान्दा के मुख-सरोज को देख कर अपने को धन्य मान सकेगा। फार्दिनन्द ऐसा ही करता रहा और अपने को संसार के श्रेष्ठ सुखियों में सर्वश्रेष्ठ मानने लगा। मिरान्दा भी कभी-कभी अपने पिता के कहीं दूर चले जाने पर मौका पाकर राजकुमार के कामों में हाथ बँटाने लगी। परन्तु फार्दिनन्द कभी भी उसे ऐसा करने न देता था।

इधर नेपलस के राजा ने अपने प्रिय पुत्र का समुद्र में डूब मरना निश्चय कर लिया। इसलिए वह हमेशा शोकाकुल रहने लगा। नेपलस के राजा के साथ जहाज में चढ़ कर उसके जितने साथी और कर्मचारी समुद्र की सैर करने आये थे सभी राजा के आसपास थे। चतुर एरीयल सभी को एक दूसरे से मिलाने लगा। धीरे-धीरे सभी आ कर राजा के पास जुट गये। वे राजा को यह

कह कर ढाढ़स देने लगे कि राजकुमार को तैरना खूब आता है। सभी ने उसे तैरते हुए किनारे आते देखा है। सभी तरह-तरह की बातें कहकर राजा को शान्त करने लगे। उनकी बातों को सुन कर राजा के मन में भी कभी-कभी यह आशा जाग उठती थी कि पुत्र फार्दिनन्द के साथ कभी न कभी मुलाकात जरूर होगी।

एरीयल भी प्रोसपारो की आज्ञा पा कर अन्य जीवात्माओं के साथ भयानक चीत्कार कर और तरह-तरह के डरावने दृश्य दिखा कर नेपलस के राजा को तथा उसके साथियों को डराने लगा। वे खूँखार शिकारी कुत्तों की तरह भूँकने लगे और राजा अपने साथियों के साथ बेतहाशा भागने लगा। कभी-कभी उनको ऐसा अनुभव होने लगा कि वे कुत्ते अभी अपने तेज नाखूनों तथा नुकीले दांतों से उन्हें फाड़ डालेंगे।

अन्त में जब वे भूख और प्यास के मारे व्याकुल हो उठे, तब जीवात्माओं का वह समूह अद्भुत रूप धारण कर उनके सामने स्वादिष्ठ भोजन और मधुर पानीय लाया और मीठे स्वर में कुछ गाने लगा। जब वे भूख और प्यास के कारण घबरा कर खाने की चेष्टा करने लगे तब एरीयल एक भयानक पक्षी के रूप में आ कर उनके सामने से खाने की सभी चीजें उठा ले गया। भूख से व्याकुल हो कर उन्होंने अपनी-अपनी तलवार खींच कर उस भयंकर पक्षी को मारना चाहा। परन्तु प्रोसपारो के इन्द्रजाल से कोई भी अपना हाथ ऊपर को नहीं उठा सका। तब उस भयानक पक्षी रूपी एरीयल ने उन्हें पुकार कर कहा—"तुमलोगों ने धर्मशील प्रोसपारो पर जो अत्याचार किया है अब उसीका फल भोग रहे हो।"

एरीयल का कथन समाप्त होते ही आकाश में भयानक काले-काले बादल गरजने लगे। अन्य जीवात्मा भी उनको डराने के लिए विकट चीत्कार कर भयानक नृत्य करने लगे।

एन्टोनी, नेपलस का राजा तथा वे सभासद, जिन्होंने प्रोसपारो के राज्य छीनने में सहायता दी थी, बहुत डर गये और व्याकुल होकर पश्चात्ताप करने लगे। केवल वही बूढ़ा दरबारी नहीं डरा जिसने प्रोसपारो के टूटे-फूटे जहाज में आवश्यक सामान पहुँचाये थे। उसका मुख-मण्डल प्रसन्न और अविकृत था।

अन्त में प्रोसपारो उनके सामने आया। उसे देख कर लज्जा के मारे सभी के सिर झुक गये। केवल प्रोसपारो के हितकारी उस बूढ़े सभासद को अधिक प्रसन्न देखा गया। उसने हृदय की सारी प्रसन्नता से अपने पुराने प्रभु का समादर किया। यह देख कर प्रोसपारो का हृदय कृतज्ञता से भर उठा। उसने भी प्रसन्नचित्त हो कर उस सभासद का आदर किया। अब वे जो सचमुच अपराधी थे प्रोसपारो के निकट क्षमा माँगने लगे और पुनः उससे उस राज्य का शासन-भार अपने हाथ में लेने को कहने लगे जो राज्य किसी समय उससे छीना गया था।

नेपलस का राजा पुत्र के शोक में तथा किये गये पापों के पश्चात्ताप की अग्नि से जला जा रहा था। प्रोसपारो को देख कर उसे अपने कुकर्मों की याद आयी तथा साथ ही साथ सारी अनुशोचना उमड़ पड़ी। उसने प्रोसपारो से कहा—"महाशय! मैंने आपके प्रति जो अन्याय किया था उसका योग्य पुरस्कार मुझे मिला है। प्रिय पुत्र फार्दिनन्द से आज हाथ धोना पड़ा है।"

इतना कहते ही नेपलस के राजा की आँखों से आँसू की धारा बहने लगी। दयाशील प्रोसपारो का हृदय करुणा से भर गया। उसकी भी आँखें भर आयीं। उसने नेपलस के राजा के हाथ पकड़ लिये और उसे हृदय से लगा कर कहा—"मैं तुमको अपने हृदय से क्षमा करता हूँ। तुम मेरा खोया हुआ राज्य लौटा रहे हो। लेकिन मैं उसके बदले में क्या दूँगा? हाँ! उसके बदले में एक ऐसा उपहार दूँगा जिसका मूल्य उस राज्य से कम न होगा।"

प्रोसपारो राजा का हाथ पकड़ कर अपनी गुफा की ओर बढ़ा। गुफा के द्वार के पास जा कर एकाएक उसने धक्का देकर द्वार को खोल दिया। अब नेपलस के राजा को जो दृश्य दृष्टिगत हुआ उससे उसे इतना आनन्द, इतना हर्ष हुआ कि वह कुछ समय के लिए कुछ बोल न सका। नेपलस के राजा ने देखा—उसका प्रिय पुत्र फार्दिनन्द राजकुमारी मिरान्दा के साथ एकान्त में बैठकर चौसर खेल रहा है।

नेपलस के राजा को ऐसी आशा न थी। वह भी अपना खोया हुआ ऐश्वर्य वापस पा कर अपने को संसार में सब से अधिक सुखी और भाग्यशाली समझने लगा। उसने मिरान्दा को उद्देश्य कर कहा, "बेटी! तुम देवी के समान हो। मैंने तुम्हारे देवता के समान पिता के प्रति जो दुर्व्यवहार किये हैं उनके लिए आज तुम्हारे निकट क्षमा-प्रार्थना करता हूँ। सब कुछ भूल कर मुझे माफ कर दे बेटी।"

मिरान्दा क्या जवाब दे सकती थी। वह चुपचाप खड़ी रही। फार्दिनन्द बोल उठा, "पिता जी! आज बड़ा आनन्द का दिन है। आपको देख सकने की आशा मुझे न थी। परंतु जब दयामय परमेश्वर की दया से आपको जीवित देख सका तब इससे अधिक आनन्द का कारण क्या हो सकता है! फिर भी आपको एक आनन्द का सन्देश देता हूँ। आप उसे सुन कर अवश्य सुखी होंगे। महाशय प्रोसपारो ने मेरे साथ अपनी अनुपम कन्या मिरान्दा का विवाह कर देने की इच्छा प्रकट की है। ऐसा करने से अब वे भी मेरे लिए पिता के समान हो गये। आइये! हम इस सौभाग्य के लिए ईश्वर के निकट प्रार्थना करें।"

तब चारों घुटने के बल बैठ कर ईश्वर की प्रार्थना करने लगे।

प्रार्थना समाप्त होने पर नेपलस के राजा ने प्रोसपारो का संबोधन कर कहा, "महाशय! इस संसार में यदि कोई देवता

कहनेके योग्य हों तो आप जैसे बिकारहीन साधु व्यक्ति ही उस नाम के उचित पात्र हैं। मैंने आपके प्रति अन्याय किया था, न जाने क्यों आज उसके बदले में मुझे इतना अनुग्रह मिला। धार्मिक मनुष्यों की संगति में सचमुच वह शक्ति है जिससे बड़े-बड़े पापियों की भी मुक्ति आसान हो जाती है। मेरा जीवन ही इसका अच्छा उदाहरण है। मेरे जीवन ने अब नया रूप धारण कर लिया है।

इतना कह कर नेपलस का राजा प्रोसपारो के पावों पर गिर पड़ा। प्रोसपारो ने उसे आदर से उठा कर कहा, "भाई! मुझे अब अधिक लज्जित न करो। चलो! हम अपने देश को लौट चलें और देश-माता का दर्शन कर अपने को कृतार्थ करें।"

एरीयल की सहायता से जहाज के सभी लोग जाग उठे। वे सारे वृत्तान्त सुन कर बहुत प्रसन्न हुए।

दूसरे दिन सवेरा होते ही सभी नेपलस के लिए रवाना हो गये। वहाँ मिरान्दा और फार्दिनन्द का विवाह हो गया। अब प्रोसपारो ने एरीयल को मुक्त कर दिया। वह स्वतन्त्र हो कर गाता हुआ दौड़ा, "जहाँ मधुकर मधुपान करता है मैं भी वहाँ मधुपान करते हुए झूम-झूम कर गाऊँगा। फूलों की गोद में सो कर उल्लू के गाने सुनते-सुनते सो जाऊँगा। गर्मी के दिनों में चमगादड़ के रथ पर बैठ कर आसमान की सैर करूँगा। और,—वहाँ बसूँगा जहाँ फूलों की कलियाँ सदा आनन्द के हिलोरें लेती हैं।"

अब जादूगरी की आवश्यकता न रही। इसलिए प्रोसपारो जादू के सब सामान तथा उन जीवात्माओं को उसी टापू पर छोड़ आया था। लड़की की शादी करा कर उसने फिर मिलान नगर के राजपाठ का भार सँभाला। छोटा भाई एन्टोनियो हर प्रकार से उसको सहायता करने लगा। राज्य के सभी लोग सुख से दिन बिताने लगे।

ईश्वर धार्मिक व्यक्तियों की परीक्षा सदा लेते रहते हैं।

रोमियो-जूलियेट

वेरोना नगर में मान्टेग और केपूलेट नाम के दो परिवार रहते थे। वेरोना-राज के अतिरिक्त उस राज्य में उनके समान कोई और ऐश्वर्यशाली मनुष्य नहीं था। वर्षों से उन दोनों परिवारों में बैर चल रहा था। अंत में उस बैर ने ऐसा विकट रूप धारण कर लिया कि दोनों कुलों के लोग दूसरे कुलवालों से रास्ते में साक्षात्कार होने पर भी मार-काट मचा देते थे। उनकी इस शत्रुता से प्रायः नगर में शांति-भंग हो जाया करता था।

एक बार लार्ड केपूलेट ने बड़े समारोह के साथ एक रात्रि भोज का आयोजन किया! उसमें नगर के बड़े-बड़े परिवार के स्त्री-पुरुष निमंत्रित हुए। केवल मान्टेग कुल के किसी के निकट निमंत्रण नहीं भेजा गया। नगर की श्रेष्ठ सुंदरियों के आगमन से केपूलेटवालों का वास-भवन जगमगा उठा।

लार्ड मान्टेग को केवल एकमात्र पुत्र रोमियो था। उसके समान सुशील, ज्ञानी, परोपकारी तथा धार्मिक युवक बहुत कम दिखाई पड़ता था। उस समय वह सुंदरी रोजेलिन के प्रेम में इतना मग्न था कि उसकी चिंता से उसे नींद भी नहीं आती थी। वह अपने साथियों से भाग कर एकांत में उस युवती के ध्यान में डुबा रहता था। लेकिन वह संगदिल युवती उसके प्रेम से सदा ही उदासीन रहती थी। कभी कभी उसे पागल कह कर उसकी हँसी भी उड़ाती थी।

रोमियो का एक परम हितैषी मित्र था जिसका नाम था बेन-

वोलियो। वह अपने मित्र को प्रेम के कंटकमय पथ से लौटाने के लिए अनेक चेष्टाएँ करता था। परन्तु किसी प्रकार वह सफल न हो सका।

केपूलेटवालों के महल में जो सुंदरियाँ आयी थीं उनमें से किसी एक को दिखा कर उसने अपने मित्र को प्रेम-रूपी बीमारी के हाथ से छुड़ाने का एक अच्छा उपाय सोचा। उसने रोमियो से कहा, "चलो, आज हम वेश बदल कर उनके यहाँ चलें। इससे वे हमें पहचान न सकेंगे और कोई विपत्ति का भी भय नहीं रहेगा। वहाँ तुम्हारी प्राण—रोजेलिन भी आयी है। और भी अनेक सुंदरियाँ आयी हैं। सुनता हूँ—ऐसी अप्सराएँ आयी हैं जिनकी तुलना में तुम्हारी हृदय-प्रतिमा कबूतरियों के बीच कौवा-परी-सी दीख पड़ेगी।"

रोजेलिन ऐसी और भी कोई सुंदरी हो सकती है—यह बात रोमियो को उचित न जान पड़ी। फिर भी रोजेलिन में मुखार-विंद को देख सकने के लिए उसने बेनवोलिया की बात मान ली।

बेनवोलिया और मार्कुसियो—इन दोनों मित्रों के साथ वेश बदल कर रोमियो केपूलेट परिवार के उस उत्सव-स्थान पर पहुँचे। बूढ़ा केपूलेट उनको निमंत्रित अतिथि जान कर उनका खूब आदर किया। तीनों मित्रों के मुख पर आवरण देख कर उसने कहा, "मैं भी जब तुम लोगों के समान युवक था तब मुखावरण पहन कर अपनी प्रणयिनी के कानों चोरी-चोरी मन की बातें कहा करता था।"

तीनों मित्रों ने सुंदरियों के साथ नृत्य में योगदान किया। उस परी समाज में एक के रूप से रोमियो की आँखें चौंधिया गयीं। उसने अतिशय विस्मय के कारण स्थान और काल को भूल कर कह दिया, "अहा! कितना सुंदर! मनुष्य भी क्या इतना सुंदर हो सकता है! कौन है यह देवी जो सचमुच सुंदरियों के

समुदाय में कौवों के बीच कबूतरी-सी शोभा पा रही है। क्या दीपमालाएँ इसी की छटा उधार लिये इतनी उज्ज्वल हो उठी हैं। अहा! भौंरे से काले मनुष्य के गले में जगमगाते हीरे के समान रात की अँधियारी में यह कैसी शोभा दे रही है!"

बूढ़े केपूलेट का भ्रातृपुत्र टाइबाल्ट अतिशय क्रोधी था। वह रोमियो की बातों को सुन कर आग-बबूला हो उठा। आवाज से उसने रोमियो को पहचाना और उसे उस कथन का योग्य पुरस्कार देने के लिए तलवार खींच ली। बूढ़ा केपूलेट तुरंत दोनों के बीच में आ खड़ा हो गया। उसने कहा, "बेटा, ऐसा न करो। इस उत्सव-स्थान को रणक्षेत्र में बदल देने से सभी की शांति नष्ट होगी। फिर देखो, रोमियो ने शिष्टता के विरुद्ध कुछ भी नहीं किया। रोमियो हमारा शत्रु है तो क्या—वह साधु और धार्मिक है, यह तो मानना ही पड़ेगा।"

चाचा के कहने पर टाइबाल्ट को शांत होना ही पड़ा। उसने समय आने पर उचित प्रतिफल देने की प्रतिज्ञा की। बूढ़ा यदि बीच में न पड़ा होता तो उस दिन वहाँ रक्तपात निश्चित था।

नृत्य समाप्त होने के पश्चात् रोमियो ने अपनी हृदय-हारिणी को कहीं एकान्त में ढूँढ़ ही लिया। तब वह उससे वार्तालाप करने का लोभ न रोक सका। धीरे-धीरे पास जाकर उसने उसका हाथ अपने हाथों में लिया। इस पर वह सुंदरी असंतुष्ट न जान पड़ी। अब दोनों परस्पर वार्तालाप करने लगे। परन्तु उनके भाग्य में वह सुख अधिक क्षण स्थायी न हुआ। माँ की पुकार सुन कर वह नवीन नायिका जीवन के उस सुखद स्वप्न को अधूरा ही छोड़ कर चली गयी। उस युवती की माँ कौन है—इसका अनुसंधान करने पर रोमियो को पता लगा कि, उसकी प्रेम-पात्री मान्टेग-कुल के परम शत्रु बूढ़े केपूलेट की एकमात्र संतान जूलियेट है। तब उसने मन ही मन सोचा कि यह ठीक न हुआ।

जूलियेट भी अनुमान से जान गयी कि जिसके प्रेम में वह बँध चुकी है वह उसके वंश का बैरी है। किंतु वह नदी जो समुद्र से मिलने को चल पड़ी—क्या वह लौट सकती है? अपने पथ-भ्रष्ट मन को जूलियेट किसी भी प्रकार मना न सकी।

रात अधिक हो जाने पर तीनों मित्र वहाँ से चलने लगे। किन्तु रोमियो के पाँव नहीं उठ रहे थे। जहाँ उसकी कामना की वस्तु रह गयी उसका हृदय भी वहीं रह गया। रोमियो का शरीर घर को लौट चला पर मन नहीं। अन्त तक मन ही विजयी हुआ। वह मित्रों की आँखों में धूल झोंक कर फिर केपूलेटवालों के प्रसाद की ओर लौट चला। वह प्रसाद की चहारदीवारी को लाँघकर भीतर चला गया। वह जिस जंगले के नीचे झुरमुट में छिप गया वह जँगला जूलियेट के शयन-कक्ष का था। उसने देखा—एकाएक उस कमरे का झरोखा भीतर से खुल गया और झरोखे में प्रभातकालीन सूर्य-किरण की निन्दा करनेवाली सुषमा-मयी रूपराशि एकत्रित हो गयी। उस समय आकाश में चाँद था। रोमियो की आँखों में उसकी स्निग्धता और उज्ज्वलता हीन प्रतीत हुईं। जूलियेट अपने सुकुमार कर-कमलों पर जूही के समान सुन्दर और कोमल कपोलों को टिका कर मन ही मन आकुल हो चिन्ता कर रही थी। रोमियो सोचने लगा—हाय! उस सुन्दरी के हाथों का यदि मैं हस्तावरण होता तो उन गोरे-गोरे गालों को चूम कर आज धन्य हो जाता।

गंभीर मनन के कारण लावण्यमयी अपने भावावेगों को रोक न सकी; बोल उठी—"हाय यह मैंने क्या किया।"

इतना कह कर जूलियेट फिर चिन्ता-समुद्र में डुब गयी। अब रोमियो अतिशय पुलकित हो कर धीरे-धीरे बोला—"रुक क्यों गयी मेरे कानों में फिर से सुधा की धार बरसाओ। तुम स्वर्ग की देवी हो स्वर्गीय सुषमा से मंडित हो कर मेरी आँखों

के आगे विराजित हो। मेरे अतृप्त नयन तुम्हें देख देख कर आकुल हो रहे हैं। क्या तुम मेरी आशा को न पूर्ण करोगी ?"

पुनः जुलियेट का अधर काँप उठा। वह आवेश में आकर बोल उठी– "रोमियो! रोमियो! तुम रोमियो क्यों हो! तुम अपने पिता को—अपने नाम को अस्वीकार करो। यदि तुम ऐसा नहीं करते तो मुझे अपने चरणों की दासी बना लो—भविष्य में मैं एक केपूलेट-कुमारी नहीं रहूँगी।"

आवेग के इस प्रवाह में रोमियो के चित्त की स्थिरता बह गयी। उसने कहा—"तो देवी! यदि रोमियो नाम तुम्हें इतना अप्रिय लगता है तो मैं भविष्य में रोमियो नहीं रहूँगा। मुझे तुम जिस नाम से इच्छा पुकार सकती हो।"

जूलियेट अपने जँगले के नीचे मनुष्य का कंठ-स्वर सुन कर वक्ता कौन है—जान गयी। उसने उत्सव-स्थान में रोमियो की मधुर बातें सुनी थीं। जिनका ललित झंकार अब भी उसके कानों में गूँज रहा है। वह सहज ही रोमियो का स्वर पहचान गयी।

जूलियेट रोमियो का साहस देख कर डर गयी। वह रोमियो को सावधान कर कहने लगी—"यदि मेरे परिवार का कोई तुम्हें यहाँ देख ले तो तुम्हारा बचना कठिन होगा।"

रोमियो ने उत्तर दिया—"प्रिये! उनके अस्त्रों से तुम्हारे नेत्र अधिक तीखे हैं। तुम्हारी दया-दृष्टि पाने पर मैं उनकी शत्रुता से नहीं डरता। तुम्हारे समान रत्न को पाकर यदि कृतार्थ न हो सका तो उनकी घृणा की आग में मेरा जल मरना ही श्रेयस्कर होगा।"

जूलियेट ने पूछा—"तुम यहाँ आये कैसे? किसने तुम्हें राह दिखायी ?"

रोमियो बोला—"तुम्हारे प्रेम ने मुझे राह दिखायी है। मैं

नाविक नहीं हूँ। फिर भी, यदि तुम सागर के उस पार होती तो मैं अपने प्राणों को तुच्छ कर वहाँ भी प्रेम का वाणिज्य करने जाता।"

जूलियेट का हृदय भी रोमियो के प्रेम से भरपूर था। किन्तु जूलियेट उसे उतना शीघ्र प्रकट करना नहीं चाहती थी। वह अतिशय लज्जित हुई। लज्जा के कारण उसकी मुख-कांति गुलाबी राग से रंजित हो गयी। भावावेग से विचलित हो कर उसने स्वतः मन की जो बात व्यक्त कर दी क्या उसे लौटाया नहीं जा सकता! यदि लौटाने का कोई उपाय रहता तो जूलियेट अवश्य वैसा करती। परन्तु अब कुछ सोचने का अवसर ही कहाँ था?

जूलियेट बोली—"मैंने सहज सरलता से अपना हृदय-पटल खोल दिया है। क्या मेरी इस लघुता की हँसी तो न उड़ाओगे? रात की आश्चर्य घटना-परम्परा मेरे मन में जो उथल-पुथल लायी है उससे मैंने मन की विचार-शक्ति खो दी है। मेरे इस प्रकार के व्यवहार देश की दूसरी स्त्रियों की आँखों में मूर्खता के परिचय हो सकते हैं। परन्तु मुझे आशा है—तुम मुझे वैसा न समझोगे! जो नारियाँ प्रेम के फन्दे में फँस कर भी सरलता से आत्मसमर्पण नहीं करतीं उनसे तुम मुझे अवश्य विश्वासयोग्य पाओगे!"

रोमियो ने कहा कि जूलियेट के पवित्र प्रेम में उसका तनिक भी संशय नहीं है। जूलियट ने उसे रोक कर कहा कि प्रतिज्ञा की क्या आवश्यकता है—पहले ही जूलियट ने अपना सब कुछ अर्पण कर दिया है।

अब वे दोनों नये अनुरागी दीर्घकाल तक एक दूसरे से बातें करते रहे। मानो उनका प्रेमालाप कभी समाप्त होनेवाला न था।

रात गत हो रही थी। जूलियेट की धाई उसे सोने के लिए बार-बार बुलाने लगी। किन्तु उसका मन जाना नहीं चाहता था। फिर भी उसे जाना ही पड़ा। जाते समय भी जूलियेट सतृष्ण-नयनों से रोमियो को बार-बार देखती रही। उसने जाते समय कहा—"प्रियतम! यदि इस गुणहीना को अपने चरणों की दासी बनाना उचित समझते हो तो कहो! मैं सवेरा होते ही तुम्हारे पास सन्देश लाने के लिए किसी को भेज दूँगी। आयोजन प्रस्तुत रखना। विवाह के पश्चात् मैं तुम्हारे साथ रसातल को जाने में भी न डरूँगी।"

दूसरे ही दिन विवाह होगा ऐसा निश्चय कर दोनों चले गये।

रोमियो के जूलियेट के भवन से चले आने के अनन्तर ही ऊषा की नवीन आलोक-छटा को पा कर संसार हँसने लगा। रोमियो के नेत्रों पर निद्रा अपना प्रभाव विस्तार न कर सकी। वह घर को न जा कर एक आश्रम में गया। वहाँ एक संन्यासी रहता था। जिसका नाम था फ्रायर लारेन्स। प्रातःकालीन उपासना समाप्त होने पर वह भजनालय से बाहर आ रहा था। उस समय उसका रोमियो से साक्षात्कार हुआ। संन्यासी युवक का मुँह देख कर ही जान गया कि गत रात निद्रा देवी उसके प्रति प्रसन्न न थी। उसने अनुमान किया कि रोजेलिन की निष्फल प्रेम-चिन्ता ही युवक की अनिद्रा का कारण है। संन्यासी रोमियो को अपने पुत्र के समान मानता था। रोजेलिन की चिन्ता से उसके मन को अलग करने के लिए उसने अनेक चेष्टाएँ की थीं, किन्तु सफल न हो सका। रोमियो के निकट आज उसके नये अनुराग की बात सुन कर लारेन्स विस्मित हुआ। उसने कहा—"वत्स! देख रहा हूँ युवावस्था में प्रेम का कोई मूल्य नहीं है। युवावस्था में प्रेम केवल आँखों तक ही सीमित रहता है। हृदय तक वह पहुँच नहीं पाता।"

रोमियो बोला—"पितः ! स्मरण कीजिये, अंधा हो कर रोजेलिन के लिए पागल होने के कारण आपने मेरा कितना तिरस्कार किया था। वहाँ मुझे हृदय देकर उपेक्षा मिली थी। परन्तु यहाँ मुझे हृदय के बदले हृदय मिला है।"

संन्यासी लारेन्स रोमियो के मत-परिवर्तन का संगत कारण जान कर हर्षित हुआ। वह मान्टेग और केपूलेट वंशों में सद्भावना लाने के लिए अनेक प्रयत्न किया करता था, परन्तु सदा ही असफल रहा। अब रोमियो और जूलियेट के मिलन से दोनों कुलों की शत्रुता दूर होगी और मित्रता स्थापित होगी जान कर वह सानन्द इस विवाह में पौरोहित्य करने को तैयार हुआ।

दूत के निकट समाचार पाकर जूलियेट संन्यासी के आश्रम में गयी। वहाँ वे दोनों सदा के लिए सम्मिलित हुए। संन्यासी लारेन्स ने उनका विवाह-कार्य सम्पन्न कराया और उनके इस मिलन को सुखमय बनाने के लिए ईश्वर के चरणों में अशेष प्रार्थनाएँ कीं। जूलियेट अपने घर को लौट गयी और अधीर हो कर रात की राह देखने लगी। आज उसे दिन अधिक दीर्घ और दुःखदायी लगने लगा।

उसी दिन दुपहर को रोमियो के मित्र मार्कुसियो और बेनवोलियो वेरोना के राज-पथ में भ्रमण कर रहे थे। उसी समय टाइबाल्ट अपने साथियों के साथ वहाँ उपस्थित हुआ और गत-रात की बात छिड़ कर मार्कुसियो को गाली देने लगा। मार्कुसियो इस पर क्रुद्ध हो उठा। वह भी उत्तर का प्रति-उत्तर देने लगा। बेनवोलियो दोनों को शांत करने लगा। परन्तु उससे झगड़े का निबटारा नहीं हुआ। इतने में रोमियो वहाँ आ पहुँचा। अब टाइबाल्ट मार्कुसियो को छोड़ रोमियो पर झपटा। उसने रोमियो को बहुत सी गालियाँ भी दीं। परन्तु रोमियो उतना झगड़ालु

न था। फिर टाइबाल्ट जूलियेट का भाई था। इसलिए वह सब कुछ सहने लगा। किन्तु बे-लगाम जंगली घोड़े के समान टाइबाल्ट किसी भी प्रकार वश में न आया। मार्कुसियो को यह बहुत बुरा लगा। क्यों रोमियो इतना संयत व्यवहार कर रहा था मार्कुसियो न समझ पाया। उसने रोमियो के व्यवहार में इस प्रकार की मृदुता देख उसमें भीरुता ढूँढ़ निकाली और मन ही मन बहुत क्रोधित हुआ। उसने अवसर पा कर पुनः टाइबाल्ट के साथ वाद-विवाद आरम्भ कर दिया। तब रोमियो को छोड़ वह फिर मार्कुसियो पर झपटा। रोमियो और बेनवोलियो दोनों को शांत करने लगे। परन्तु सब कुछ व्यर्थ हुआ। टाइबाल्ट के अस्त्राघात से मार्कुसियो पृथ्वी पर गिर पड़ा। अब रोमियो अपने को रोक न सका। उसकी तीक्ष्ण तलवार के एक आघात से टाइबाल्ट की मृतदेह धरातल चूमने लगी।

दिन-दहाड़े ऐसी दुर्घटना के होने से वहाँ बहुत से लोग जुट गये। बूढ़ा मान्टेग और केपूलेट भी अपनी-अपनी पत्नी के साथ वहाँ पहुँच गये। राजा भी सच्चे अपराधी को दण्ड देने के लिए वहाँ उपस्थित हुआ। प्रधान साक्षी बेनवोलियो ने अपने मित्र के अनुकूल उस घटना को सही वर्णना दी। केपूलेट-पत्नी अपने देवर-पुत्र के वियोग से अधीर हो उठी था। उसने कहा—"बेनवोलियो अपने मित्र के लिए पक्षपात-पूर्ण विवरण दे रहा है।" वह हत्याकारी के प्राणदण्ड के लिए राजा के निकट अनुरोध करती गयी। वह क्या जानती थी कि वह अपने जामाता के विरुद्ध विचार की प्रार्थना कर रही है। इधर नर-हत्या के कारण टाइबाल्ट का जीवन भी वध-योग्य हो गया था—ऐसी युक्ति दिखा कर मान्टेग-पत्नी अपने पुत्र की जीवन-भिक्षा करने लगी।

यह समाचार जूलियेट के लिए बिजली गिरने का सा भयानक था। आज ही उनके प्राणों का मिलन हुआ है और आज

ही चिर-वियोग होगा। पहले तो जूलियेट को अपने भाई के निधन पर क्रोध हुआ। परन्तु दूसरे ही क्षण रोमियो के मधुर प्रेम की याद कर इसे सौभाग्य समझने लगी कि रोमियो की मृत्यु टाइबाल्ट के हाथ नहीं हुई। पति के देश-निकाले की वार्ता सुन कर उसकी आँखों से आँसू की धारा बह चली। लाखों टाइबाल्ट का शोक भी उस आँसू की धारा में बह सकता था।

रोमियो उस अभावित हत्याकाण्ड के बाद वहाँ से भागा और संन्यासी लारेन्स के आश्रम में आ पहुँचा। वहाँ उसने अपने देश-निकाले का आदेश सुना। यह आदेश उसके लिए मृत्यु के समान भयानक था। वह बहुत शोकाकुल हो उठा और पश्चात्ताप करने लगा। संन्यासी लारेन्स ने उसे अनेक समझाए परन्तु वह शांत न हो सका। इतने में जूलियेट के निकट से एक पत्र आया। उस पत्र को पढ़ कर रोमियो कुछ शांत हुआ। लारेन्स ने भी उसे ढाढ़स देते हुए कहा—"वत्स! संकट में अधीर होना यथार्थ मानवता का लक्षण नहीं है। वीरों के समान साहस-पूर्वक विपत्ति से लड़ते रहो। देखोगे विपत्ति भागने लगेगी। आज रात को जूलियेट से विदा लेकर प्रस्तुत हो जाओ। कल प्रातःकाल मान्टुआ नगर के लिए प्रस्थान करना। इधर मैं तुम दोनों के विवाह की बात लोगों के निकट प्रकट कर दोनों कुलों का विवाद दूर करूँगा और दोनों कुलों में मित्रता लाने की चेष्टा करूँगा। वे जब आपस में मित्रता कर लेंगे तब राजा अवश्य प्रसन्न हो कर तुम्हें क्षमा करेंगे। तब अदृष्ट के आशीर्वाद से तुम दोनों के हृदय प्रफुल्ल हो उठेंगे। तब तुम दोनों के लिए संसार सुख का आवास होगा और तुम दोनों सुख से दिन बिताओगे। सर्वदा तुम्हारे निकट समाचार भेजता रहूँगा और तुम्हारी जूलियेट के साथ पत्र-व्यवहार की सुविधा भी कर दूँगा।"

गत रात जिस कमरे के झरोखे में खड़ी जूलियेट एकांत में अपने मन की बातें व्यक्त कर रही थी और जिस कमरे के नीचे छिप कर खड़े रोमियो ने उदित-यौवना जूलियेट के व्यक्त मनोभावों को सुन लिया था, आज रात बढ़ते ही रोमियो उस कमरे में छिप कर घुसा। वहाँ उसकी जूलियेट थी। अब उस रात के एकांत में एक दूसरे से मिल कर उन दोनों को जो सुख और आनन्द मिला उसे भाषा नहीं प्रकट कर सकती। यह तो अनुभव की बात है। बीते दिन की दुर्घटना या आये दिन का वियोग उन्हें विचलित न कर सका। उनके सुख-सागर के हिलोरे भी न मन्द पड़े। परन्तु उनके मधुर मिलन के सुहाग-भरी रात की दो-चार घड़ियाँ बहुत ही शीघ्र बीत गयीं। सुख का समय शीघ्र ही बीतता है। धूँधली ऊषा में जाग जानेवाली चिड़ियाँ अपने कल-कूजन से दिवस का आगमन और रजनी का विदाय संसार को सुनाने लगीं। पहले-पहल जूलियेट उसे निशाचर पक्षियों की कलरव समझ कर शांत हुई परन्तु शीघ्र ही अमल-वरणी ऊषा की सुनहली रश्मि से नभ-पट को झिलमिलाते देख उसका भ्रम छूटा। अब एक दूसरे से बिछुड़ने का समय आ गया। दोनों के हृदय इस विरह से विदीर्ण होने लगे। परन्तु विलम्ब से रोमियो का जीवन संकट में पड़ सकता है। इसलिए उन्होंने एक दूसरे से विदा माँग लिया। इस विदाय के बाद फिर उनका मिलन न हो सकेगा—ऐसी अशुभ चिन्ता दोनों हृदयों को आकुल करने लगी। मान्टुआ से प्रत्येक क्षण पत्र लिखने का वचन देकर रोमियो अपने दुःखों को लिये विदा हो गया।

रोमियो के मान्टुआ गमन के कुछ दिन बाद जूलियेट के पिता ने जूलियेट को बुला कर पेरिस नामक एक युवक के साथ विवाह करने के लिए प्रस्तुत होने को कहा। रूप-गुण, कुल-शील, बल-

बिक्रम तथा धन-सम्पद के विचार से काउन्ट पेरिस जूलियेट का योग्य वर था। यदि जूलियेट ने रोमियो को न देखा होता तो उसे ही अपना पति मनोनीत कर लेने में उसे कोई बाधा न होती।

जो भी कुछ हो, जूलियेट इस संकट से घबड़ा उठी। वह क्या करेगी, किसका परामर्श लेगी—कुछ भी निश्चय न कर सकी। पिता-माता की अनुमति न लेकर उसने गुप्त रूप से शत्रु-तनय के साथ विवाह कर लिया है—यह बात प्रकट करने की इच्छा उसे न हुई। फिर माता-पिता के प्रस्तावित इस विवाह को यदि न रोक सकी तो उसे द्विचारिणी होना पड़ेगा। लेकिन जीते जी वह वैसा नहीं कर सकती। अनेक सोच-विचार के बाद उसने पिता से कहा कि अभी उसकी विवाह करने की इच्छा नहीं है। एक तो उसकी अवस्था इतनी कम है जिस कारण उसका विवाह करना ही अनुचित होगा। फिर भाई के मरे अधिक दिन नहीं बीते। उस वियोग का शोक अभी तक सभी के मन में ताजा है। परिवार के किसी के मरने के उपरांत ही विवाह-उत्सव में सम्मिलित होने से परिवार के किसी को भी सुख नहीं मिल सकता। फिर पड़ोसियों की आँखों में भी यह बात बहुत खलेगी। जूलियेट इस प्रकार पिता के निकट विनती करने लगी कि उसका विवाह स्थगित कर दिया जाय।

परंतु जूलियट की प्रार्थना पर उसके पिता ने ध्यान न देकर कुछ झुँझलाहट के साथ कहा—"बेटा तू तो मूर्खों की सी बातें कर रही है। अपनी लड़की के लिए माँ-बाप दुलहे का जैसा रूप-गुण चाहते हैं उसके अनुसार काउन्ट पेरिस जैसा दुलहा दुर्लभ है। मैं निश्चय कर कहता हूँ कि वेरोना नगर की हरेक लड़की पेरिस जैसा पति पाने के लिए लालायित होगी। क्या मैं इतना निर्बोध हूँ कि तेरे कहने पर ऐसा सुयोग हाथ से निकल जाने

दूँगा—ऐसा न होगा। आगामी बृहस्पति वार तेरे विवाह का निर्धारित दिन है। उस दिन तुझे विवाह करना ही होगा, मैं तेरा कुछ भी सुनना नहीं चाहता—विवाह के लिए तैयार रहोगी, यह मेरा आदेश है।"

जब परिस्थिति इस प्रकार की हो चली तब जूलियेट ने निरूपाय होकर संकट का एकमात्र सहाय स्नेहशील लारेन्स के पास जाकर सभी बातें खोल कर कहीं। संन्यासी ने क्षण भर विचार के पश्चात् कहा—"वत्से! मैंने सोच कर एक उपाय निकाला है। इसके अतिरिक्त तो कोई और उपाय नहीं दिखाई पड़ता। परंतु इस उपाय के अनुसार काम करने के लिए बहुत ही साहस और निर्भीकता की आवश्यकता है। तुम तो अभी बालिका हो—क्या वैसा कर सकोगी।"

जूलियेट ने साग्रह उत्तर दिया—"क्यों नहीं! यदि सतीत्व की रक्षा के लिए मुझे जीते-जी समाधि के नीचे जाना पड़े तो मैं सुख से जाऊँगी।"

संन्यासी ने कहा—"तो सुनो! तुम्हें एक पात्र में कुछ औषधि देता हूँ। उसे साथ ले जाओ। पिता के साथ विवाह के विषय में किसी भी प्रकार का वादानुवाद न करो। केवल विवाह की पूर्व-रात्रि में इस औषधि को पी लेना। इस औषधि के गुण से तुम बयालिस घंटे अचेत रहोगी। जीवन का एक भी लक्षण नहीं रहेगा। दूसरे दिन तुम जीवित हो—ऐसा अनुमान कोई नहीं लगा सकेगा। किसी आकस्मिक पीड़ा से तुम्हारी मृत्यु हुई है जान कर घर के लोग तुम्हें कौलिक रीति के अनुसार पारिवारिक समाधि-क्षेत्र के खुले शवाधार में रख देंगे। मैं यथा समय संदेश भेज कर रोमियो को यहाँ लाऊँगा। तुम्हारी चेतना लौटने के पूर्व ही वह आकर तुम्हारा उद्धार करेगा।"

रोमियो के प्रेम से चालित होकर तथा द्विचारिणी होने के

भय से जूलियेट ऐसा भयानक कार्य करने को तैयार हुई और उस औषधि को लेकर घर चली गयी। मार्ग में पेरिस के साथ उसकी भेंट हुई। पेरिस ने विवाह के बारे में उसका मत पूछा। जूलियेट ने मानो लज्जित होकर सिर झुका लिया, लेकिन कुछ मौखिक उत्तर न दिया। पेरिस के निकट यह सुन कर बूढ़ा केपूलेट तथा उसकी पत्नी बहुत ही आनंदित हुई। उन्होंने सोचा कि जूलियेट की इस विवाह में सम्मति है। जूलियेट के प्रति उनके मन में जो क्षोभ था वह भी दूर हो गया।

अब इस प्रकार आड़म्बर के साथ विवाह का आयोजन होने लगा मानो वेरोना नगर ने इसके पूर्व ऐसा उत्सव कभी भी न देखा होगा।

बुध की रात आयी। जूलियेट उस औषधि को लेकर सोचने लगी, क्या संन्यासी हमारा विवाह करा कर डर तो नहीं गया और मुझे विष देकर मारना चाहता है। किंतु नहीं! ऐसा कभी नहीं हो सकता। ऐसा सोचना भी पाप है। उसके समान साधु और धार्मिक के द्वारा ऐसा अन्याय कदापि संभव नहीं हो सकता।

दूसरे ही क्षण केपूलेटवालों की समाधि-भूमि का चित्र उसकी आँखों के आगे खींच गया। थोड़े दिन पूर्व वहाँ टाइबाल्ट की मृत देह समाधि के नीचे रखी गयी थी। जूलियेट अपनी माँ तथा परिवार की अन्य स्त्रियों के निकट भूत-प्रेतों की अनेक कहानियाँ सुन चुकी थी। आज उन्हें याद कर उसका शरीर भय से काँप उठा। यदि रोमियो निश्चित समय पर आ न सका तो चेतना लौट आने पर वह किस प्रकार उस भयानक स्थान में पड़ी रहेगी। न जाने भय के कारण उसका चित्त कितना अस्थिर हो उठेगा। यह चिंता भी उसके मन में आयी। परंतु भोर होते ही काउन्ट पेरिस के साथ विवाह करना पड़ेगा। इस चिंता के आगे जूलि-येट की अन्य सभी चिंताएँ तुच्छ हो गयीं। चित्त में किसी भी

प्रकार की बाधा न लाकर वह अमृत जान कर उस भयानक औषधि को पी गयी। धीरे-धीरे उसके शरीर से जीवन के सभी लक्षण लुप्त हो गये।

दूसरे दिन प्रातःकाल उत्सव के सभी आयोजनों से संपन्न होकर मूल्यवान विवाह-वेश में सज्जित हो काउन्ट पेरिस मन में अगणित आशाएँ लिये जूलियेट के निवास-स्थान पर पहुँचा। परंतु हाय! उसने आकर अपनी मानस-प्रतिमा की प्रतीयमान मृत्यु की रेखाओं से कलंकित देह-लता देखी। यदि कोई व्यक्ति अमृत की आशा लिये विष के घड़े में हाथ डालता है, तो उसकी जो दशा होती है आज पेरिस की भी वही दशा हुई। उसके आँसुओं ने धीरज की बाधा न मानी।

नयनों की पुतली-सी इकलौती पुत्री जूलियेट के वियोग से उसके माँ-बाप की जो दशा हुई वह किसी से देखी नहीं जा रही थी। उस प्रकांड वास-भवन में उत्सव के स्थान पर हाहाकार गूँजने लगा। यह प्रचुर आयोजन जिसके विवाह के शुभ अवसर पर हुआ था आज उसीकी अंतिम क्रिया में लगा। विवाह की उल्लसित वाद्य-ध्वनि के स्थान पर समाधि के उदास सुर बजने लगे। जो सुंदर और सुरभित पुष्पराजि वधू जूलियेट की सज्जा के लिए लायी गयी थी आज उससे जूलियेट की शव-सज्जा हुई। जो पुरोहित मिलन का मंत्र पढ़ने आया था उसे समाधि का मंत्र उच्चारण करना पड़ा। अदृष्ट का परिहास ऐसा ही दारुण होता है।

अच्छे समाचारों की अपेक्षा बुरे समाचार अति द्रुत फैल जाते हैं। जूलियेट की मृत्यु वास्तव में मृत्यु की नकल मात्र थी। यह समाचार रोमियो के निकट संन्यासी लारेन्स ने दूत द्वारा भेजा था। किंतु उस दूत के मान्टुआ पहुँचने के पूर्व ही रोमियो ने वह समाचार सुना। उस समय उसके मन की जो दशा हुई उसकी

वर्णना नहीं हो सकती। गत रात रोमियो ने एक बड़ा ही मजेदार सपना देखा था। मानो वह मर गया है, जूलियेट आकर उसके शरीर पर अपनी मृत-संजोवनी हथेली फेर रही है, रोमियो जी उठा और सम्राट बन गया। कहाँ उस सुख का स्वप्न और कहाँ वियोग का वास्तविक सत्य! क्या वह भी अपनी प्रेयसी के शरीर पर हाथ फेर कर उसे जीवित बना सकेगा। नहीं, ऐसा सर्वथा असंभव है। यह तो अदृष्ट का निष्ठुर परिहास है।

रोमियो का हृदय जलते-जलते खाक हो गया। जिसे उसने जीवन का सब कुछ मान लिया था अब वह इस संसार में नहीं है। अब रोमियो का जीवन से क्या तात्पर्य है? उसने एक बार समाधि-स्थान में जा उस स्वर्गीय देवी मूर्ति को देख कर शांति से मरने का निश्चय किया। वेरोना जाने के लिए घोड़ा कस कर तैयार होने पर उसे याद आया कि उसने नगर में एक दरिद्र औषध-विक्रेता को काँच के कुछ पात्र सामने रख कर दवा बेचते देखा है। उस औषध-विक्रेता की दशा रोमियो ने भली-भाँति देखी थी। इसलिए उसने अनुमान किया कि अधिक धन पाने पर वह विष भी बेच सकता है। तब उसने उसके पास जा धन का लोभ दिखा कर तीव्र विष माँगा। पहले तो वह व्यक्ति राजदण्ड के भय से आगा-पीछा करने लगा, किन्तु अन्त तक लोभ ही जीत गया। रोमियो को विष मिला। अब वह वेरोना के लिए चल पड़ा। उसने एक बार जी भर कर जूलियेट की पार्थिव प्रतिमा को देख लेने के बाद विष पान करने का निश्चय किया। रोमियो के मन में यह आशा थी कि वह इस प्रकार से परलोक में जूलियेट का साथी बन सकेगा।

आधीरात को वह वेरोना पहुँचा और काल-विलंब न कर केपूलेटवालों के समाधिस्थान को गया। वह अपने साथ मशाल और शवाधार खोलनें का औजार लाया था। वह उसकी सहायता

से जूलियेट का शवाधार खोलने लगा। इतने में किसी ने पीछे से ललकारा—"दुराचारी मान्टेग! यदि अपना कुशल चाहता है तो ऐसा काम न कर।"

काउन्ट पेरिस भी जूलियेट के शवाधार को फूलों से सजाने आया था। उसने रोमियो को उस शवाधार को खोलते देख अनुमान किया कि वह अपनी प्रतिहिंसा चरितार्थ करने के लिए उस मृत देह को अपवित्र कर रहा है। इसी सन्देह पर उसने उन शब्दों का प्रयोग किया।

पेरिस रोमियो की तरफ बढ़ गया और उसे भली-भाँति देख कर बोला—"कौन हो? रोमियो! क्या तुम नहीं जानते कि तुम वेरोना से निर्वासित हो। यदि मैं तुम्हें कैद करता हूँ, तो तुम्हारा प्राण-दण्ड निश्चित है। यदि अपनी भलाई चाहते हो तो तुरन्त यहाँ से चले जाओ।"

रोमियो बोला—"देखो पेरिस! मुझे न छेड़ो। मैं यहाँ मरने आया हूँ। तुम अपनी खैर चाहो तो अभी यहाँ से चले जाओ। क्यों मुझे एक और हत्या के पाप का भागी बनाओगे!"

इस पर पेरिस बहुत क्रुद्ध हो उठा और अपनी तलवार निकाल कर रोमियो पर झपटा। अब रोमियो को भी तलवार निकालनी पड़ी। दोनों लड़ने लगे और अंत तक पेरिस पृथ्वी पर गिर पड़ा।

पेरिस को जूलियेट का प्रेमी जान कर रोमियो के मन में सहानुभूति उत्पन्न हुई। उसने उसकी मृत देह को जूलियेट के पास सुला दिया। उसके बाद उसने टाइबाल्ट की समाधि के पास जा कर क्षमा माँगी, फिर सौंदर्य-प्रतिमा जूलियेट की अतुल-नीय रूपराशि को देखता हुआ वह उस तीव्र विष का पान कर अपनी प्रणयिनी के समीप गिर पड़ा। क्षण भर में उस प्रेममय पवित्र जीवन का भी दीप बुझ गया। अब रोमियो इस संसार

में न रहा। वह उस लोक को चला गया जहाँ भाई भाई के साथ नहीं लड़ता, जहाँ हिंसा और द्वेष नहीं है। अब रोमियो उस स्वर्ग का अधिवासी था जिसका निर्माण प्रेमियों के प्रेम से हुआ है।

इधर संन्यासी लारेन्स ने रोमियो के निकट जो दूत भेजा था वह विशेष कारणवश वहाँ पहुँच न सका। यह संदेश पाकर लारेन्स बहुत चिंतित हुआ। अन्त में वह जूलियेट के उद्धार के लिए स्वयं चल पड़ा। उसने जाकर देखा समाधि-स्थान में मशाल जल रहा है। उसका कारण जानने के लिए अग्रसर होते ही उसने रोमियो और पेरिस की मृत देहों तथा तलवारों को देखा। भय से उसका शरीर काँप उठा। वह समझ गया कि उसका प्रेरित दूत रोमियो को संवाद न दे सका जिस कारण यह भयानक कांड संघटित हुआ है। उसने—'ईश्वर की इच्छा पूरी हो'—ऐसी प्रार्थना की और देखा जूलियेट की चेतना-शक्ति लौट आयी है। उसने जूलियेट से कहा—"वत्से! सर्व-शक्ति मान ईश्वर की इच्छा से हमारे सभी प्रयत्न विफल हुए हैं। अब शीघ्र बाहर आकर अपना जीवन बचाओ। देखो निकट ही मशालों का प्रकाश दिखाई पड़ रहा है। बहुत से लोगों का कोलाहल भी इधर आता हुआ प्रतीत हो रहा है। तुम शीघ्र बाहर आओ। मुझे भी अपना जीवन बचाना आवश्यक है—मैं चला।"

इतना कह कर संन्यासी पकड़े जाने के भय से दौड़ने लगा; परन्तु शीघ्र ही लोगों द्वारा पकड़ा गया।

जूलियेट घबड़ा कर चारों तरफ देखने लगी। उसने रोमियो और पेरिस की मृत देहों, तलवारों और उस विष के पात्र को देख कर घटना का अनुमान किया। जब उसने देखा कि उसका रोमियो अब इस संसार में नहीं है तब मन में विचार किया कि

अब जीवित रहना व्यर्थ है। उसने विष का पात्र देखा। परन्तु उसमें विष न था। रोमियो उसे पी चुका था। वह आकुल होकर रोमियो के होंठों को चूमने लगी। हो सकता है वहाँ विष का कुछ अवशेष हो। किन्तु वह सफल न हो सकी। कोलाहल समीप आ रहा था। लोग शीघ्र ही वहाँ आ पहुँचेंगे। पवित्रता की प्रतिमूर्त्ति जूलियेट से अब रहा न गया। उसने तुरन्त रोमियो की तलवार खींच ली और उसे अन्तर में समा लिया। इस प्रकार से वह रोमियो का अनुगमन कर गयी।

जब पेरिस और रोमियो लड़ रहे थे। उस समय परिस्थिति को प्रतिकूल जान कर पेरिस का नौकर दौड़ कर केपूलेटवालों के निवास-स्थान पर गया था। उसकी चिल्लाहट से मान्टेग के घर के लोग भी जाग गये। अब दोनों परिवारों के प्रधान तथा अन्य अनेक लोग शीघ्र ही केपूलेटवालों के समाधि-स्थान पर गये। पथ में संन्यासी लारेन्स को भागते हुए देख कर उन्होंने पकड़ लिया। राजा भी समाचार पा कर वहाँ उपस्थित हुआ। सभी वहाँ उस विषाद-पूर्ण और आश्चर्य-जनक घटना को देख चकित हुए। राजा ने उस संन्यासी से उस घटना के विषय में पूछा। संन्यासी ने नेत्रों को पोंछते हुए सभी घटनाएँ व्यक्त कीं। उसने कुछ भी न छिपाया। रोमियो के अनुचर के कथन से तथा रोमियो द्वारा लार्ड मान्टेग के निकट लिखे गये पत्र से संन्यासी का बयान समर्थित हुआ। बाद की घटना पेरिस के नौकर ने बतायी। तब उस रहस्य के समझने में सभी समर्थ हुए।

अन्त में राजा ने लार्ड मान्टेग तथा केपूलेट को संबोधित कर कहा—"माननीय मान्टेग! माननीय केपूलेट! सर्वनियंता ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध किये कार्यों का क्या परिणाम होता है, वह तो आप लोग देख ही रहे हैं। भगवान ने मनुष्यों की सृष्टि

इस कारण नहीं की कि वे सदा परस्पर पशुओं की भाँति लड़ते रहें। वे अपने में सद्भावना प्रतिष्ठित करें और संसार की हित-चिन्ता में अपना जीवन व्यतीत करें—ऐसा ही ईश्वर का अभिप्राय है। विवेक इस निर्देश की ओर सदा संकेत करता है। परन्तु हम अज्ञान से आच्छन्न हो कर परस्पर लड़ते रहते हैं। यह बहुत ही अनुताप का विषय है। आज वेरोना नगर के दो श्रेष्ठ रत्नों के बलिदान से आप लोगों के संचित पापों का प्रायश्चित्त हुआ। क्या अब भी आप परम-पिता के अभिप्राय के विरुद्ध ऐसे कार्यों में निरत रहेंगे ? नहीं, अब ऐसा नहीं होना चाहिये। आज से मैं मान्टेग और केपूलेट वंशों के पुराने शत्रु-भाव को विनष्ट और उनमें भ्रातृभाव को प्रतिष्ठित देखना चाहता हूँ।"

इतना कह कर राजा ने दोनों कुलों के प्रधानों के हाथों को मिला दिया। उन्होंने आँसू बहाते हुए एक दूसरे को गले लगाया। उस दिन से दोनों कुलों की पुरानी वैरता समाप्त हो कर स्थायी मित्रता स्थापित हुई।

लार्ड केपूलेट ने अपने जामाता की तथा लार्ड मान्टेग ने अपनी पुत्र-वधू की स्वर्ण-निर्मित प्रतिकृति वेरोना के राज-पथ में स्थापित की। उन्होंने अपनी-अपनी प्रिय सन्तानों के बलिदान से ही अपने किये पापों का प्रायश्चित्त किया। विधाता के इच्छा-विरुद्ध कार्य करने से किसी को उसके कुपरिणाम के हाथ से छुटकारा नहीं मिलता। इसके समान कठोर तथा अभ्रांत सत्य और क्या है ?

—❀—

टाइमन

यह संसार आनन्द-निकेतन है, यहाँ का वातावरण ऋषियों का तपोवन जैसा शान्त और मनोरम है, यहाँ के अधिवासी अकपट और उदार हैं क्यों कि इनके निर्माता परमेश्वर महान और सदानंद के प्रतीक हैं। परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। लोगों का यह विश्वास भ्रांत अनुमान पर आधारित है। परमेश्वर महान और सदानंदमय हो सकते हैं, परन्तु उनकी सृष्टि न तो महान है और न आनन्दमय। संसार का अन्तर्निहित तत्त्व है स्वार्थ। प्रेम, प्रीति, श्रद्धा, भक्ति, स्नेह आदि मानव-मन की सभी कोमल वृत्तियों के पीछे जो भयानक दानवी शक्ति काम कर रही है—वह है स्वार्थपरता। कोई भी महात्मा स्वार्थपरता की जड़ को उखाड़ नहीं फेंक सकते। इस कारण जब इस संसार में रहना ही है तब स्वार्थ के प्रति ध्यान देना अति आवश्यक है। जो ऐसा नहीं करते वे भारी भूल करते हैं। आगे चल कर उन्हें पछताना पड़ता है।

टाइमन ने भी यही भूल की थी।

टाइमन एथेन्स नगर का एक धनवान भूमिपति था। वह बहुत ही प्रसिद्ध दानी था। उसके समान उदार और महान व्यक्ति उस समय एथेन्स में कोई दूसरा न था। धनी और निर्धन सभी उसके बड़प्पन से प्रसन्न थे। क्यों कि एथेन्स नगर के सभी अधिवासी उसकी दान-शीलता से परिचित हो सके थे।

टाइमन का दरवाजा सभी के लिए सदा खुला रहता था।

उसके घर में दिन रात सदाव्रत की धूम मची हुई रहती थी। निर्मंत्रित, अ-निर्मंत्रित, धनी, निर्धन सभी का वहाँ सत्कार होता था। इसलिए बच्चे-बूढ़े सभी उसकी प्रशंसा किया करते थे।

टाइमन के वास-भवन में दिन रात लोगों की चहल-पहल रहती थी। तरह-तरह के अगणित मनुष्य उसका गुणगान करने आया करते थे।

इन गुणों के अतिरिक्त टाइमन में एक दोष भी था। वह बहुत ही खुशामद-प्रिय था। यश की लिप्सा उनमें प्रबल थी। वह अपने नाम के लिए सब कुछ कर सकता था। लोग टाइमन की इस दुर्बलता से भली-भाँति परिचित थे। इसलिए अनेक ख्याति-हीन कवि, प्रसिद्धिहीन लेखक और प्रतिभाहीन शिल्पी वहाँ जुटा करते थे। टाइमन की कृपा पाने के लिए वे अपना-अपना ग्रंथ उसके नाम पर उत्सर्ग करते थे, अपना-अपना चित्र उसे उपहार में देते थे। इस प्रकार उन सबों का काम बन जाता था। वे अपनी-अपनी योग्यताओं से बहुत अधिक पुरस्कार पा जाते थे।

बड़े-बड़े सौदागर, जवाहिरातों के व्यापारी जब अपना-अपना माल बेच नहीं पाते तब अवश्य टाइमन के पास आते। वह उन सामग्रियों को दूने मूल्य पर खरीद लेता था।

जो भी कुछ हो, टाइमन ने जो चाहा था वह नहीं हुआ। वह समझता था कि वह लोगों का उपकार कर रहा है। लोग उसका यश गा रहे हैं। वह सोचता था कि आज वह जिनकी विपत्तियों को दूर कर रहा है वे उसे कभी न भूलेंगे। आवश्यकता पड़ने पर वे उसकी सहायता करेंगे। लेकिन संसार के लोग इतने निःस्वार्थ कब हुए। प्रतिभाहीन लेखक, कवि, चित्रकार, चतुर व्यवसायी और झूठी प्रशंसा करनेवाले कपट मित्र धीरे-धीरे उसके पास आने लगे। वह उन चाटुकारों की मिथ्या प्रशंसा से अपने आपको भूल गया। उसकी आँखों के आगे आवेश छा

गया। संसार का सच्चा रूप अब वह कैसे देख सकता था उसके छोटे-बड़े मुसाहिब और पार्श्वचर अपनी मधुर चाटुकारिता के द्वारा उसे परमेश्वर तक की उपाधि देने लगे और उस सरल मनुष्य को भुलावा देकर अपना स्वार्थ ऐंठने लगे।

प्राय: प्रतिदिन ही टाइमन के निकट इस प्रकार के लोग आया करते थे, जिनमें कुछ धनी बाप के निर्धन बेटे भी थे। जो अपनी अदूरदर्शिता तथा विलास-व्यसन के कारण भिखारी और ऋणी बने थे। टाइमन अपने धन से उनकी रक्षा करता था। इस प्रकार टाइमन का प्रचुर वैभव इन लोभियों में वितरित होने लगा। इन लोगों में सब से अधिक बुद्धिमान था विन्टीडियस। इसका प्रचुर ऋण टाइमन ने चुकाया था।

धीरे-धीरे टाइमन की दान-शीलता की ख्याति बढ़ने लगी। देश-विदेश के लोग उसकी महत्ता को देख कर आश्चर्य-चकित हो गये। सभी टाइमन को प्रसन्न करने के लिए विभिन्न उपाय सोचने लगे। जब कभी टाइमन किसी वस्तु की प्रशंसा करता था, तब वे वह वस्तु उसे उपहार में देते थे। इससे टाइमन सन्तुष्ट हो कर उन्हें दश गुना उपहार देता था। इस प्रकार लार्ड लूसीयस ने एक बार टाइमन के पास चार सफेद रंग के घोड़े भेजे, क्यों कि टाइमन ने एक दिन ऐसे घोड़ों की प्रशंसा की थी। एक दिन लार्ड ल्यूकुलस ने कई शिकारी कुत्ते उपहार स्वरूप दिये क्यों कि टाइमन वैसे कुत्तों की प्रशंसा किया करता था। टाइमन अपने कपट मित्रों की दुष्ट अभिसंधियों को क्या जानता था। वह उन्हें उन उपहारों के बदले में प्रचुर धन और अनेक मूल्यवान उपहार देता था।

टाइमन का दातापन अपनी मात्रा पार कर गया। कोई यदि टाइमन के निकट किसी वस्तु की प्रशंसा करता था तो टाइमन तुरन्त उसे वह वस्तु दे देता था। वह कहता था कि लोग उसी

वस्तु की प्रशंसा करते जिसे कि वे पाना चाहते हैं। टाइमन की इस कमजोरी का पता लोगों को था। वे भी अवसर पा कर अक्सर उसके सामने उसकी वस्तुओं की प्रशंसा करते थे। एक दिन किसी ने टाइमन के कुत्तों की प्रशंसा की। उसने तुरन्त उसे अपने कुत्ते दे दिये। एक दिन किसी ने उसके घोड़ों की प्रशंसा की। टाइमन ने सुनते ही उसे घोड़े दे दिये। टाइमन की धारणा थी कि लोग सच्चे दिल से उसी वस्तु का गुण-गान कर सकते हैं जिसे पाने के लिए उनके मन में तीव्र लालसा है। टाइमन अपने हृदय को सामने रख कर दूसरे हृदयों का विचार करता था। यह उसकी कमजोरी थी। कभी किसी का विचार इतना पवित्र और निर्मल नहीं हो सकता कि वह जो सोचेगा वही कहेगा। वास्तव जगत में योग स्वार्थ-साधन के लिए कुछ सोचते और कुछ कहते हैं।

टाइमन का धन भले-बुरे सभी लोगों को सुख देता था। जब वह दान करता था, तब वह यह नहीं देखता था कि दान उचित पात्र को दिया जा रहा है या नहीं। फिर भी उसका दान कभी-कभी उचित पात्र को भी मिल जाता था। उसका एक नौकर था जो एक धनी बाप की बेटी से प्रेम करता था। परन्तु एक धनी-पुत्री का विवाह एक निर्धन से सम्भव नहीं था। इसलिए वह नौकर दिन रात दुःखी रहता था। जब टाइमन ने यह सुना तब उसने उस नौकर को प्रचुर धन दिया। अब उस नौकर का विवाह उसी लड़की से हुआ। फिर भी उसके धन का अधिकांश उसके कपट मित्र ही लूटते थे। जब टाइमन हँसता था तब वे हँसते थे और जब टाइमन रोता था तब वे रोते थे। टाइमन उनकी धूर्तता को भलमनसी समझता था। इसलिए वह मन ही मन यह सोच कर बहुत ही सुखी होता था कि संसार के लोग बड़े सच्चे और बड़े नेक हैं। वह अपने को बड़ा ही

भाग्यवान मानता था क्यों कि उसे अगणित हितैषी मित्र मिले हैं जो उसके सुख से सुखी और उसके दुःख से दुःखी होते हैं; टाइमन इस संसार को स्वर्ग समझता था, और कहा करता था—'मैं सुखी हूँ, भाग्यशाली हूँ !'

परन्तु सब दिन एक समान नहीं बीतते। स्वर्ग का अतुलनीय ऐश्वर्य भी निरन्तर व्यय से समाप्त हो जाता है। टाइमन तो एक साधारण धनी था। अब धीरे-धीरे टाइमन का धनागार भी खाली होने लगा किन्तु टाइमन को उतना अवसर कहाँ था कि उधर ध्यान दे। फिर किसी को इतना साहस भी नहीं था कि यह बात उससे कहे। उसके ठगनेवाले प्रशंसक, उसके स्वार्थी अनुचर उसके चतुर तथा लोभी मित्र सभी चुप रहे।

टाइमन जैसे व्यक्ति का भी एक मित्र था। जिसका नाम फ्लेवीयस था। फ्लेवीयस उसके धनागार का अध्यक्ष था। वह बहुत ही सज्जन और विश्वासी पुरुष था। वह सचमुच अपने प्रभु का हित चाहता था। उसने अपने प्रभु टाइमन को अनेक प्रकार से समझाया। परन्तु फल कुछ न हुआ! उसने आय और व्यय का ब्यौरा बनाया और उस ब्यौरे को सामने उपस्थित कर अपने प्रभु को समझाना चाहा, परन्तु उसके प्रभु ने उसकी एक न सुनी। टाइमन उस समय सचमुच बहरा हो गया था। उसने फ्लेवीयस का अनुरोध या उपदेश अनसुनी करके टाल दिया। सभी धनवानों की दशा एक सी है, वे अपनी दुर्दशा के समीप पहुँच कर भी उसे स्वीकार करना नहीं चाहते। अन्त तक फ्लेवीयस को भी हार माननी पड़ी। वह भी थक कर बैठ गया।

टाइमन अभी भी स्वप्न-जगत में विचरण कर रहा था। संसार उसकी आँखों के आगे सरल और सुन्दर था। संसार की सभी वस्तुएँ उसके लिए सुन्दर और स्वाभाविक थीं। फ्लेवीयस देखा करता था, उसके प्रभु का विलास-भवन अगणित लोगों

से भरा है, मानो आनन्द और उल्लास का फुहारा छूट रहा है। वहाँ किसी के मन में किसी भी प्रकार की बाधा की भावना न थी। सम्मिलित हँसियों से वातावरण गूँज रहा है। मदिरा की धाराएँ सुराहियों से प्यालियों तक द्रुत प्रवाहित हो रही हैं। मानो सुरा की मतवाली धाराओं में बाढ़ आयी है। दीप-मालाओं की छिटकती छटाओं से रात लजा रही है। जीवन! जीवन टाइमन के लिए एक सुख है मानो वह उसका अनुभव हाथोंहाथ कर सकता है।

टाइमन सुखी था, परन्तु उसका हितैषी मित्र फ्लेवीयस दुःखी था, सचमुच दुःखी। टाइमन की दशा देख कर उसकी आँखों से आँसू की धाराएँ बहती थीं। उस आनन्द-कोलाहल में भाग लेना उसके लिए सर्वथा असम्भव था। वह टाइमन तथा उसके साथियों से दूर रहता था। एकांत में बैठ कर अनुताप करना और आँसू बहाना उसका नित्य का काम था। वह जानता था कि ये सुख ये चैन दो-चार दिनों में समाप्त हो जायेंगे। जब गर्मी की जलती हवा बहने लगेगी तब न तो वसन्त के ये दिन रहेंगे और न सुख के साथी कोयल ही कूकेंगे!

वास्तव में टाइमन के अब वे दिन न रहे। शीघ्र ही टाइमन अपनी वास्तविक दशा समझ गया। वह जान गया कि उसकी आर्थिक-दशा दिन-प्रति-दिन बिगड़ती जा रही है। किन्तु उसका आड़म्बर कम न हुआ। इसलिए उसकी रुपयों की आवश्यकता ज्यों की त्यों बनी रही। एक दिन टाइमन ने फ्लेवीयस को बुला कर कहा—"जैसे भी हो—'मेरी सम्पत्ति बेच कर भी रुपयों का प्रबन्ध करो।"

अब फ्लेवीयस ने दुःखित हो कर कहा—"महाशय, आपकी सम्पत्ति का अधिकांश बिक चुका है। मैंने बार-बार आपको समझाना चाहा, परन्तु आपने उधर ध्यान ही न दिया। अब

जो थोड़ा-बहुत बचा है उसे बेच कर आपके ऋण का आधा भी चुकाया नहीं जा सकता। आपका ऋण इतना अधिक हो चुका है।"

टाइमन यह सुन कर कुछ विस्मित हुआ, बोला—"क्या मेरे ऊपर ऋण का भार है! एथेन्स से लासीडिमन तक मेरी जमींदारी फैली हुई है। क्या मेरा ऐसा परिणाम सम्भव है!"

फ्लेवीयस ने उत्तर दिया—"महाशय, इस पृथ्वी की भी कोई सीमा है। यदि समस्त पृथ्वी भी आपके अधिकार में होती तो कुछ दिनों में आप उसे भी दान कर देते।—आप की सम्पत्ति तो बहुत थोड़ी थी।"

अब टाइमन कुछ दुःखित हुआ। परन्तु दूसरे ही क्षण उसने अपने आप को सांत्वना देते हुए कहा—"मेरी अतुल धन-राशि समाप्त हो चुकी है तो क्या—"वह अच्छे कामों में लगी है। मैंने उसका वितरण अपने मित्रों में किया है। मेरे हितैषी मित्रों की सेवा में मेरा धन लगा है। इस कारण अनुताप करना अनुचित है। मैंने उनका उपकार किया है अब वे मेरा उपकार करेंगे।"

फ्लेवीयस बीते दिनों की याद में रोने लगा। टाइमन ने उसे समझा कर कहा—"तुम्हारा रोना अकारण है। मैं प्रचुर व्यय के कारण निर्धन हो गया हूँ। परन्तु मेरे धन का सद्व्यय ही हुआ है। अब तक मैं उन लोगों का उपकार करता आया, अब आवश्यकता पड़ने पर वे अवश्य मेरी सहायता करेंगे। मेरे दुःख के दिनों में वे मुझे कभी न निराश करेंगे। धनोपार्जन का यदि कोई दूसरा उपाय न रहा तो मैं अपने मित्रों से उधार माँगूँगा। वे मुझे कभी न निराश करेंगे।"

टाइमन यह सोच कर कुछ निश्चिंत हुआ। उसने सोचा कि, उसे अवश्य उपकारों के बदले में उपकार मिलेंगे। जिनके लिए

उसका धनागार सदा खुला रहता था वे आज अपनी कृतज्ञता निभायेंगे। परन्तु उसका अनुमान गलत था। संसार एक महान प्रपंच है। यहाँ मित्रता के विनिमय में शत्रुता और भलाई के बदले में बुराई मिलती है। यहाँ यदि कोई कुछ दे कर कुछ पाने की आशा करे तो वह उसकी महान भूल है। टाइमन ने भी अन्त तक यही भूल की।

टाइमन धन-संग्रह करने के लिए अपने मित्रों के निकट दूत भेजने लगा। लार्ड लूसीयस, लार्ड ल्यूकुलस, लार्ड सीम्प्रोनियस आदि उसके अनेक मित्र उसके द्वारा उपकृत हुए थे। उसने उन लोगों के निकट अपना दूत भेजा। उसने लार्ड विन्टीडियस के पास भी दूत भेजा। थोड़े दिन पूर्व जब विन्टीडियस के जेल जाने की नौबत आयी थी तब टाइमन ने अपना धन देकर उसे बचाया था। अब विन्टीडियस अपने पिता के मरने पर प्रचुर धन-राशि का स्वामी बन गया है। वह यदि चाहता तो टाइमन को ऋण से मुक्त कर सकता था।

टाइमन का दूत पहले ल्यूकुलस के पास गया।

ल्यूकुलस ने गत रात को एक शुभफलदायक सपना देखा था। मानो उसे एक चाँदी का बना पात्र मिला है। उस दूत को देख कर उसने मन में सोचा कि सपने के अनुसार धन-प्राप्ति में अब कौन-सी देर रह गयी! टाइमन का दूत आया है। वह अवश्य कुछ न कुछ मूल्यवान उपहार साथ लाया होगा। उसने दूत का बड़ा ही आदर किया। परन्तु जब दूत ने कहा कि उसके प्रभु टाइमन ने उसे कुछ रुपये के लिए भेजा है तब ल्यूकुलस के के चेहरे पर से दोस्ती का नकाब भी हट गया। उसने टाइमन के किये उपकारों को भूल से भी मन में न ला कर दूत से साफ कह दिया—"तुम्हारे प्रभु की वर्तमान दशा से मैं सचमुच दुःखी हूँ। मैं तुम्हारे प्रभु को मितव्ययी बनने के लिए प्रायः कहा

करता था। क्यों कि मैं तुम्हारे प्रभु के निरर्थक व्ययों से सदा ही असंतुष्ट रहता था। इस कारण मैंने उन्हें अनेक समझाया परन्तु उन्होंने मेरी एक भी न सुनी। वे अपनी मूर्खता का फल भोग रहे हैं। मैं उनके लिए क्या कर सकता हूँ ?"

फिर ल्यूकुलस ने जरा सोच कर दूत से कहा, "देखो भाई ! तुम जाकर अपने प्रभु से कहना कि मेरे साथ तुम्हारी भेंट हुई ही नह । कहो ! ऐसा ही ठीक होगा न ?"

दूत के मुँह से इतना बड़ा मिथ्या समाचार कहलवाने के लिए उसने दूत के हाथ में कुछ दे भी दिया।

अब दूत लार्ड लूसीयस में निकट गया। लार्ड लूसीयस ने कभी टाइमन के दान से अपना पेट पाला था और उसकी आज की प्रचुर प्रसिद्धि भी लार्ड टाइमन की ही कृपा है। फिर समय आने पर लार्ड लूसीयस अपनी कृतज्ञता भूल गया। पहले तो वह लार्ड टाइमन की दरिद्रता की बात पर विश्वास न कर सका। क्योंकि उस समय लोगों में यह धारणा फैली हुई थी कि टाइमन का धन अपार है। परन्तु जब उसे विश्वास करना ही पड़ा तब वह बहुत दुःखी होने का सा चेहरा बना कर कहने लगा, "क्या कहते हो दूत ! महान दानी टाइमन की यह दशा है ! मैं बहुत ही अभागा हूँ। मैं उनके द्वारा अनेक बार उपकृत हो कर भी आज उनका उपकार न कर सका। हाय ! मेरे दुःखों को कौन समझेगा ? उनकी दुरवस्था का समाचार यदि मुझे कल तक मिला होता तो मैं आज उनकी सेवा में आ सकता। क्यों कि कल एक मूल्यवान वस्तु के खरीदने में मेरा सारा धन खर्च हो चुका है। अभी मेरे पास कुछ भी नहीं बचा कि उनकी सहायता करूं। महाशय टाइमन को यह कह कर मेरा हार्दिक अभिवादन देना।"

चतुर लूसीयस ने दूत को यह कह कर विदा किया।

पिता अपने पुत्र की रक्षा जिस प्रकार से करता है टाइमन ने

भी लूसीयस की रक्षा उसी प्रकार से की थी। टाइमन की दया से वह आज जीवित है। उसकी प्रसिद्धि, उसकी समृद्धि सब कुछ टाइमन की दया से है। टाइमन के धन-संपद से आज भी उसका भंडार भरा पड़ा है। उसके मनोहर वास-भवन, मनोरम उद्यान, तरह तरह के विलास-व्यसन की वस्तुएँ आदि सब कुछ के पीछे टाइमन का महान दान है। परंतु आज लूसीयस ने उसकी छोटी सी प्रार्थना को भी ठुकरा दिया।

इस प्रकार सभी ने टाइमन के दूत को निराश किया। किसी-किसी ने सहायता करने से साफ इनकार किया और किसी-किसी ने अपना दुखड़ा रो कर अपनी असमर्थता जतायी।

अब टाइमन समझ गया कि आव-आदर के व्यवहार से ही सच्ची मित्रता नहीं होती। संसार में सच्ची मित्रता संभव नहीं है। अब तक टाइमन बुराई के बारे में ज्ञात न था परंतु अब वह जान गया कि आलोक की आड़ में अंधकार और प्रकाश के पीछे परछाईं भी है। यह आविष्कार टाइमन के निकट भयंकर प्रतीत हुआ। वह डर गया।

वासंती शोभा की चंचल हँसी से संसार दिन दो-चार हँसता है, परन्तु देर न लगती दिवा-भास्कर के क्रोध के कारण उसके तपने में और जलने में। कुंज-निकुंज में खिले फूलों की मुख-कांतियाँ मलिन होने लगती हैं उस भयानक परिवर्तन से।

टाइमन का वास-भवन सुख और शांति का आगार था। उस भवन के कोने-कोने में आनंद का कोलाहल गूँजा करता था परंतु आज वहाँ सब-कुछ नीरव है। जो महल सदा अतिथियों की चहल-पहल से भरा रहता था आज वहाँ पैर धरनेवाला कोई नहीं है। जो लोग टाइमन की प्रशंसा में सदा मुक्त-कंठ रहते थे आज वे उसी का निंदावाद करने लगे। जो लोग उसे 'महा-

उदार' 'महा-दाता' आदि विशेषणों से शोभित करते थे वे आज उसे 'मूर्ख' और 'पागल' कहने लगे।

आज टाइमन का प्रासाद सुनसान है। आज वहाँ न तो आनंद का महोत्सव है और न आतिथेयता का सदाव्रत। आज उस का विलास-भवन उसके लिए कारागार बन गया। अब उसके आस-पास उसकी मित्र-मंडलियाँ न थीं वरन् उसके पास झुंड के झुंड कर्ज देनेवाले महाजन भटक रहे थे। विभिन्न द्रव्यों के व्यवसायी अपने-अपने द्रव्यों के दामों के लिए टाइमन को दिन रात कष्ट देने लगे। अब जीवन उसके लिए मृत्यु से भी भयंकर हो गया।

वर्तमान दुर्दशा से मानो टाइमन का मस्तिष्क विकृत हो गया। न जाने उसने क्या सोच कर एक हास्यकर किंतु बहुत ही करुण परिहास की बात सोची। उसने एक कल्पित महा-भोज का आयोजन किया, जैसा कि उसके यहाँ प्रायः हुआ करता था। उसने पूर्व की भाँति सभी इष्ट-मित्रों के निकट निमंत्रण भेजा। सभी यह निमंत्रण पाकर विस्मित हुए। वे इस निमंत्रण को सविश्वास ग्रहण न कर सके। प्रतीची रेखा के उस पार ढलते हुए सूरज को देख कर कौन विश्वास कर सकता है कि उसकी मलिन ज्योति पुनः जल उठेगी। फिर भी टाइमन के बंधु-बांधव निमंत्रण पा कर टाइमन के निवास-स्थान पर जुटने लगे। ल्यूसीयस, ल्यूकुलस आदि सभी कपट मित्र आये, जिन्होंने किसी समय टाइमन के दूत को निराश किया था। वे टाइमन की निमंत्रण-सभा में एकत्र होकर अपने मन में सोचने लगे कि टाइमन का ऐश्वर्य सचमुच अक्षय है। उसका क्षय या विनाश कभी नहीं हो सकता। दरिद्रता टाइमन की कपोल-कल्पना थी। वे मन में सोचने लगे कि टाइमन ने अवश्य उनकी परीक्षा लेने के लिए ऐसा किया था। वे पछताने लगे कि यदि उस समय वे टाइमन की सहायता

करते तो न जाने आज उसके बदले में कितने अधिक उपहार मिलते !

सूखी सरिता पुनः कूल-प्लाविनी कल्लोलिनी हो उठी है जान कर वे सुखी हुए। अभी तक उन लोगों के मन में कुछ पाने की आशा थी। वे पुनः कुशल चाटुकारिता के द्वारा टाइमन की प्रशंसा करने लगे। वे टाइमन के सम्मुख अतिशय विनीत होकर कहते गये, "जब आपने मेरे निकट दूत भेजा था। उस समय मैं दुर्भाग्यवश ऐसे संकट में पड़ा था कि आपकी थोड़ी सी सेवा भी न कर सका। इसलिए मैं इतना दुःखी हूँ कि उस दुःख की वर्णना भी असंभव-सी है। आप स्वयं महान और उदार हैं। आप अवश्य मुझे क्षमा करेंगे।"

अब दोनों चतुर सामने आये। टाइमन ने इसके उत्तर में कहा, "आप इस छोटी सी बात के लिए दुःखी हो रहे हैं ? मैं तो अपने नौकर को क्यों भेजा था भूल चुका हूँ।"

एक के बाद एक, टाइमन के सभी नीच और स्वार्थी अनुचर जुटने लगे। मधुर संगीत ध्वनि से पुनः टाइमन का गृह गूँज उठा। स्वादिष्ट भोजन सामग्रियों से भरे विविध आकार और प्रकार के पात्र एकत्र सज्जित होने लगे। परंतु सभी भोजन-सामग्रियाँ ढँकी हुई थीं। सभी आश्चर्य-चकित होकर देखने लगे और मन में सोचने लगे कि यदि टाइमन सचमुच धनहीन हो गया होता तो इस प्रकार के आयोजन कैसे संभव होते !

लोग अपने नेत्रों पर भी विश्वास न कर सके। परन्तु जब टाइमन के कहने पर पात्रों के आवरण हटा लिये गये तब सभी टाइमन का अभिप्राय समझ गये। टाइमन सचमुच धनहीन हो गया था। अब उसकी दशा एक कंगाल से भी बुरी थी। फिर भी उसने अपने कपट मित्रों को इसलिए अंतिम बार निमन्त्रण देकर बुलाया था और ऐसे करुण परिहास की व्यवस्था की थी कि वे

दुष्ट समझ जायँ कि उन पर अब कोई नकाब नहीं है। टाइमन ने उनको भली-भाँति पहचाना है।

टाइमन का क्रोध भी अपनी सीमा पार कर गया वह सभी को भय-भीत कर कहने लगा, "दुष्टो! ढक्कन हटा कर देखो पात्रों में क्या है। मेरे धन के लोभ से अंधे तो नहीं हो गये?"

पात्रों में केवल गर्म पानी था। टाइमन की वर्तमान दशा के अनुसार उसका भोज भी उचित हुआ था।

टाइमन अब पागल-सा हो गया। वह उन लोगों पर खौलता हुआ जल छिड़काने लगा। सभी लोग डर के मारे भागने लगे। गिरते-पड़ते सभी स्त्री-पुरुष भाग खड़े हुए। टाइमन भी उनके पीछे दौड़ा। वह गरज रहा था—"दुष्ट! लोभी! शैतान! हृदय में विष भर कर मुख पर हँसी लिए मुझे ठगने आये हो! तुम लोगों ने इतने दिन अपना स्वरूप छिपा रखा था। परन्तु आज सब कुछ प्रकट हो गया है। लोभी! चाटुकार! मेरी आँखों के सामने से दूर हो जा! तुम लोगों को देखने से भी किसी पर पाप लग सकता है।"

वे समझ गये कि टाइमन अब पागल हो गया है। वे घबड़ा कर इधर-उधर भागने लगे। इस प्रकार टाइमन के जीवन रूपी नाटक का पहला अंक समाप्त हो गया।

सारी मानव जाति के प्रति टाइमन के मन में दारुण घृणा उत्पन्न हो गयी। मनुष्यों के स्वार्थ-पूर्ण व्यवहारों से उसका जी उचट चुका था। असहनीय घृणा और विरक्ति के कारण उसका संसार में रहना दूभर हो गया। वह सदा के लिए मनुष्यों का संसर्ग त्याग कर जंगल को चला गया। मानव-सभ्यता और संस्कृति पर वह पूर्ण रूप से श्रद्धा-हीन हो गया।

वह जाते समय मानव-जाति को अभिशाप देता गया। टाइमन का क्षुब्ध हृदय शांत होता यदि मानव-समाज का ध्वंस हो

जाता, घर-घर हाहाकार गूँजने लगता, मनोहर प्रसाद-श्रेणियाँ रसातल को जातीं और दुःख-दरिद्रता, युद्ध-विसव, शोक तथा अत्याचार से एथेन्स के स्त्री-पुरुष, बच्चे-बूढ़े आदि सभी जन-प्राणी नष्ट हो जाते।

अब टाइमन के लिए घना बन स्वर्ग के समान मनोरमा था। क्योंकि वहाँ संसार के स्वार्थी मानव न थे। वन हिंसक पशुओं का आवास था, फिर भी वहाँ के हिंसक पशु संसार के अहिंसक मनुष्यों से कम ही भयंकर थे।

अब टाइमन स्वयं अपने प्रति घृणा करने लगा। वह स्वयं अपनी आकृति से डरता था। यह बोध भी उसके लिए दुःख-दायी था कि वह एक मनुष्य है। उसने अपने को मानव जाति से पृथक करने के लिए शरीर को अनावृत रखा। अब उसे न तो लज्जा थी और न संकोच। वह नग्न होकर पशुओं के साथ पशुओं के समान विचरने लगा। उसने अपना आचरण भी पशुओं का सा बना लिया। उसने शीतातप से देह की रक्षा के लिए भूमि में एक गुहा खनी। अब उसे एक कुटिया की भी आवश्यकता न थी। अब उसकी अपनी परछाईं ही उसकी एकमात्र संगिनी थी। वह उसी के साथ निर्जन वन में अपना दिन बिताने लगा। कभी-कभी वह उससे भी डरता था। क्योंकि उसकी शक्ल मनुष्यों की सी थी, जिस मनुष्य जाति के लिए उसके हृदय में किसी समय प्रेम था, श्रद्धा थी, आज उसी मनुष्य जाति के लिए उसके मन में अनंत घृणा थी। मनुष्यों के दुष्ट व्यवहारों से मनुष्य भी इतना परिवर्तित हो सकता है।

अब टाइमन वनवासी बन गया। जंगली फल-मूल उसका एकमात्र खाद्य था। नदी का जल उसका पानीय था। कभी कदाचित किसी मनुष्य से साक्षात्कार हो जाने पर वह तुरंत अपना मुँह फेर लेता था। अब वह एक भयंकर पशु था। पशु

उसके साथी थे। उसने उन्हीं के साथ जंगल में रह कर अपना अवशिष्ट जीवन बिताने का निश्चय किया।

एक दिन बड़ी ही विचित्र घटना घटी। टाइमन शीत-काल के लिए खाद्य संचय करने के वास्ते एक पेड़ की जड़ को खोद रहा था। इसी बीच उसका औजार किसी कठिन वस्तु से टकराया। तब वह उस कठिन वस्तु के चारों बगलों से खोदता गया। अन्त में उसने जब उस कठिन वस्तु को उठा कर देखा तब वह जान गया कि वह पदार्थ सोना है। संभवतः किसी कृपण ने अपनी धन-राशि को सुरक्षित रखने के लिए उसे इस जंगल में लाकर इस प्रकार से रखा था। उसकी आशा थी कि बाद में वह उस धन-राशि को निकालेगा। परन्तु उसकी आशा न पूर्ण हो पायी। इसके पहले ही वह अभागा इस संसार से चल बसा। आज धरती वह अपार धन-राशि टाइमन को उपहार दे रही है।

टाइमन को जो सुवर्ण-राशि मिली उससे वह पुनः पूर्व की अवस्था प्राप्त कर सकता था। फिर उसे प्रशंसकों की प्रशंसाएँ सुनने को मिल सकतीं या उसके लिए सुख का जीवन फिर सुलभ होता। परन्तु अब उसके मन में उसके लिए लोभ न था। जीवन उसके लिए झूठ का प्रपंच था और संसार स्वार्थ से भरा हुआ एक भयानक स्थान। संसार के नर-नारियों के प्रति घृणा से उसका मन भर गया था। अब उसे पुनः सांसारिक जीवन में लौट आने की इच्छा न हुई।

वह उस सुवर्ण-राशि को देख कर मन ही मन डरने लगा। उसने सोचा कि उस धन राशि को फिर से ढाँक दिया जाय। क्यों कि स्वर्ण संसार की सभी बुराइयों का मूल कारण है। इसी के कारण संसार में हिंसाएँ और हत्याएँ हैं। इसी के कारण मानव अपने को खो देते हैं। उसने एकबार तो उस स्वर्ण को उसी जगह छोड़ देना चाहा। परन्तु दूसरे ही क्षण उसने सोचा

कि संसार से बदला लेने का यही उचित अवसर है। वह जानता था कि स्वर्ण ही एक मात्र ऐसी वस्तु है जिनके कारण संसार के सभी लोग आपस में लड़ कर मर मिट सकते हैं। उसने उस स्वर्ण को मानव जाति के ध्वंस का उपाय बनाना चाहा।

टाइमन मन ही मन सोचने लगा कि कैसे उस स्वर्ण से बहुत से लोगों का अनिष्ट हो सकता है। वह जानता था कि यदि वह ऐश्वर्य संसार में पहुँच जाय तो संसार के लोग अवश्य उसके स्वामित्व के लिए आपस में पशुओं की भाँति लड़ते रहेंगे। धन के कारण मनुष्य क्या कर सकते हैं उसका परिचय उसे एथेन्स-वालों के व्यवहारों से भली भाँति मिला है। हिंसा, हत्या, क्रोध विद्वेष, लोभ की अग्नि से एथेन्सवाले जल मरेंगे जान कर उसे परम संतोष मिला।

संयोगवश एक दिन एक सेनादल उस जंगल के रास्ते एथेन्स को जा रहा था। उस सेना का नायक प्रसिद्ध योद्धा अलसीबाय-डिस था, जो पहले एथेन्स का ही रहनेवाला था। परन्तु एथेन्स के नेताओं, धनिकों तथा दूसरे बड़े-बूढ़े लोगों के अत्याचारों से से क्षुब्ध होकर वह उनके विरुद्ध युद्ध करने के लिए जा रहा था। अलसीबायडिस एथेन्स पर आक्रमण करने को जा रहा है सुन कर टाइमन बहुत आनंदित हुआ। कभी एथेन्स में टाइमन का मनोरम प्रसाद था, धन से भरा धनागार था, पुष्पों से सजे उद्यान थे तथा सुखों की सभी दुर्लभ वस्तुएँ उसके लिए सुलभ थीं। परन्तु आज वह पथ का भिखारी है। एथेन्स-वासियों की लोलुपता और स्वार्थपरता के कारण उसके सभी वैभव नष्ट हो गये हैं। आज उसी एथेन्स-वासियों की अहित-चिंता से उसे परम सुख मिला।

टाइमन ने उस सेनापति को बुला कर सानन्द वह धनराशि दी। उसने सुवर्णराशि सेनापति को देते समय कहा—"तुम इस

अपार ऐश्वर्य को अपने सैनिकों में बांट दो। मैं इसके बदले में कुछ भी नहीं चाहता—केवल यही देखना चाहता हूँ कि तुम्हारे सैनिक एथेन्स को ध्वंस करने में समर्थ हुए हैं। वे एथेन्स-वासियों की निष्ठुरता के साथ हत्या कर दें, वे नगर के महलों और अटारियों में आग लगा दें, एथेन्स-नगर के अन्तिम अवशेष को भी मिट्टी में मिला दें—तो मुझे आनन्द मिलेगा। जिस बूढ़े के सभी बाल सफेद हो गये हैं—उसे भी न क्षमा करो। वह अवश्य कभी एक लोभी और अत्याचारी रहा होगा। शिशु की सुन्दर मुख-शोभा से भी न भूलो, उसके होठों पर खिलसनेवाली हँसी को देख कर भी उसे क्षमा न करो। वह बड़ा होने पर अवश्य एक अत्याचारी और स्वार्थपर होगा! बालिकायों के क्रन्दन से, बच्चों को गोद में छिपाई हुई माताओं के आर्तनाद से तथा और भी अगणित करुण दृश्यों से तुम अपने हृदय को विचलित न होने दो। प्रतिहिंसा के द्वारा तुम अपने हृदय को लोहे के समान कठोर बना लो। अत्याचारी मानव-जाति के किसी एक पर भी दया दिखाना अन्याय है, पाप है, विचार-शक्ति की दुर्बलता है। सेनापति अलसीबायडिस! तुम एथेन्स-वासियों की हत्या करना, ऐथेन्स नगर का नाश करना—इस प्रकार से ध्वंस करना कि ध्वंसावशेष भी न रह जाय। फिर अलसीबायडिस, ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ तत्पश्चात् तुम्हारी भी मृत्यु हो जाय!"

सेनापति अलसीबायडिस टाइमन की दशा देख कर भयभीत हुआ।

टाइमन के साथ सभी ने विश्वासघात किया था, परन्तु उसका कोषाध्यक्ष फ्लेबीयस ने नहीं। टाइमन के परिचित सभी लोगों में वह एकमात्र विश्वासी और सच्चा था। वह टाइमन को सदा श्रद्धा की दृष्टि से देखता था तथा उसकी हित-चिंता में लगा रहता

था। उसने अपने प्रभु को व्यय-संकोच करने के लिए अनेक प्रकार से समझाया तथा उसके अनुचित व्ययों को रोकना चाहा परन्तु कभी भी सफल न हो सका। अन्त में उसे श्रेष्ठ धनी टाइमन की बुरी दशा देखनी पड़ी।

फ्लेवीयस टाइमन को खोजते-खोजते उस वन में उपस्थित हुआ। जब उसने टाइमन को देखा तब उसकी आँखों से आँसू की धाराएँ बह चलीं। वह अपने को रोक न सका। वह रोने लगा। वह अपने प्रभु के सम्मुख खड़ा हो कर रोने लगा।

टाइमन अपनी गुहा के सम्मुख एक मनुष्य को देख कर मन में सोचने लगा कि यह कौन है ? क्यों यहाँ आया है ? वह अवश्य एक विश्वासघाती और अत्याचारी होगा। वह अवश्य अपने मन में बुरी भावनाएँ ले कर आया है। उसने देखा फ्लेवीयस रो रहा है। उसे रोते देख वह समझ गया—अवश्य इन आँसुओं में कुछ भेद छिपा है। क्यों कि उसके मन में यह धारणा दृढ़ हो गयी थी कि मनुष्य रोता भी है तो दूसरों के अहित के लिए। यह अनुमान उसके अन्तर का एक विश्वास बन गया था कि मनुष्यों के प्रति मनुष्यों की वेदना, दया, प्रीति, ममता आदि सुकुमार वृत्तियों की मानसिक अनुभूतियाँ केवल झूठी कल्पनाएँ हैं। इन में कोई वास्तविक तत्त्व नहीं है।

अन्त तक उसने अपने पुराने कर्मचारी फ्लेवीयस को पहचाना। किन्तु उसके मन का सन्देह ज्यों का त्यों बना रहा कि फ्लेवीयस अवश्य कोई अभिसन्धि ले कर आया है। वह संशय-भरी दृष्टि से फ्लेवीयस को घूरने लगा।

फ्लेवीयस टाइमन का मनोभाव जान गया। उसने कातर हो कर अपने प्रभु से कहा—"महाशय ! आप मेरा अविश्वास न कीजिये। मैं आपकी यथार्थ रूप से सेवा करने आया हूँ। मेरे मन में स्वार्थ की कोई भावना नहीं है। मुझे किसी ने आपके

पास नहीं भेजा, मैं स्वयं आपकी सेवा में आया हूँ। आप मुझे निराश न कीजिये।"

टाइमन फिर भी उस पर विश्वास न कर सका। फ्लेवीयस टाइमन के सम्मुख नतजानु होकर प्रार्थना करने लगा। अब टाइमन बोला—"फ्लेवीयस, मैं जानता हूँ, तुम सज्जन हो। मैं मानता हुँ संसार में एक धार्मिक, कृतज्ञ और निःस्वार्थ मनुष्य आज भी बाकी बचा है। फिर भी यदि तुम मेरे सामने मनुष्य के रूप में न आकर किसी दूसरे प्राणी के रूपमें आते तो मैं तुम्हें अपने पास रहने देता। परन्तु तुम्हारी आकृति मनुष्यों की सी है जिसके लिए मेरे मन में दारुण घृणा है। मैं उस आकृति को देख नहीं सकता, उसका चिंतन भी नहीं कर सकता। मनुष्यों की दृष्टि में स्वार्थपरता है, उनकी बातों में स्वार्थपरता है, उनके हर काम में स्वार्थपरता ही दृष्टिगत होती है। मानवता की स्मृति मेरे लिए एक ज्वाला है। फ्लेवीयस, जब मैं मानवता के बारे में सोचता हुँ तब मेरा हृदय जल उठता है—एक भयानक ज्वालामुखी बन जाता है। फ्लेवीयस, मैं एक पशु हूँ। मुझे पशुओं के बीच पशु बन कर ही रहने दो। तुम लौट जाओ। मैं नहीं लौट सकता। मानव-समाज मेरा शत्रु है।"

फ्लेवीयस फिर भी विनती करता गया, किन्तु उसे असफल हो कर लौट जाना ही पड़ा।

संसार में गुण का सम्मान होता ही है। गुणी व्यक्ति कभी न कभी और कहीं न कहीं पूजा पाता ही है। इस नियम का अपवाद होना सर्वथा असंभव है।

जब अलसीबायडिस ने एथेन्स पर आक्रमण किया तब सभी को टाइमन की याद आयी। जब विपक्षी दल का सेनापति एथेन्स नगर का ध्वंस करने के लिए तत्पर हो उठा तब सभी टाइमन के लिए पश्चात्ताप करने लगे। टाइमन केवल धनियों में

ही सर्वश्रेष्ठ नहीं बल्कि एक श्रेष्ठ योद्धा भी था। अलसीबायडिस से लड़ने के लिए उस समय एक भी योग्य सेनापति एथेन्स में न था। टाइमन ही एकमात्र व्यक्ति था जो अलसीबायडिस के समान शूर और वीर था। इसलिए एथेन्सवासियों को टाइमन की शरण में आना ही पड़ा।

इसके पूर्व भी ऐसा अवसर आया था। एथेन्स पर बाहरी शत्रुओं का आक्रमण हुआ था और टाइमन ने अपनी वीरता से नगर की रक्षा की थी। इस बार भी एथेन्सवासी अपनी प्रार्थना लेकर उसके पास गये। वे टाइमन के पास उस समय गये जब उसके दुःख की घड़ियाँ बीत रही थीं। टाइमन की वर्तमान दशा के लिए एथेन्सवासी ही उत्तरदायी थे। उन्हीं के अनुचित व्यवहार से आज उसे वनवासी होना पड़ा। उन्हीं की लोलुपता और स्वार्थपरता की आग में जल कर उसका अपार ऐश्वर्य नष्ट-भ्रष्ट हो चुका है। फिर भी वे उसके पास इसलिए गये कि देश की दुर्दशा पर उसकी दया हो सकती है।

एथेन्स नगर की नगर-सभा के सदस्यों तथा नगर के दूसरे बड़े-बूढ़े प्रधानों ने टाइमन के पास जा कर उसे अपना सेनापति बनाना चाहा और उसे देश को लौट चलने के लिए अनेक अनुरोध किये। वे टाइमन से कहने लगे—"महाशय, देश आपका है। आप अपने देश की रक्षा कीजिये। यदि आप देश की रक्षा नहीं करते तो आपके देश का ध्वंस हो जायगा। आप यदि इस संकट में हमारा सहायक नहीं होते तो हम विनष्ट हो जायेंगे हम लोगों ने आपके प्रति जो अन्याय किया है आप उन्हें भूल जाइये। हम आपकी पूर्व-समृद्धि और पूर्व-सम्मान लौटा रहे हूँ। अब से हमारी भक्ति-श्रद्धा सदा आपके प्रति अविचलित रहेगी। आप हमारी रक्षा कीजिये।"

परंतु टाइमन ने उनकी बातों पर तनिक भी ध्यान न दिया।

पेड़ को जड़ से काट कर उसके मस्तक पर जल-सेचन करने से फिर से वह पेड़ जीवित नहीं हो सकता। टाइमन भी अब पूर्व का टाइमन नहीं था। मानव जाति की अकृतज्ञताओं से उसका हृदय पीड़ित है। अब वह मनुष्य नहीं बल्कि एक पागल पशु है। जन-मानवों से पूर्ण संसार अब उसका निवास स्थान नहीं है, अब उसका निवास स्थान घना जंगल है, जहाँ सूर्य-किरण भी नहीं प्रवेश पाती।

अब टाइमन एक भयानक मानव-विद्वेषी था। यदि एथेन्स मिट्टी में मिल जाय अथवा वहाँ के स्त्री-पुरुष बच्चे-बूढ़े आदि सभी अधिवासी नष्ट हो जायँ तो उसकी कौन सी हानि होगी! उसने निर्विकार होकर उत्तर दिया—"यदि अलसीबायडिस एथेन्स के सभी अधिवासियों की हत्या करता है तो मुझे तनिक भी कष्ट न होगा। एथेन्स के किसी भी प्रतिष्ठित व्यक्ति के मस्तक से नके शत्रु की तलवार मुझे अधिक प्यारी लगती है। दुष्टो! ःसी के लिए अब टाइमन के हृदय में दया नहीं है।"

उसके निकट आये सभी एथेन्स-वासी आँसू बहाने और अपने अपने किये पर पश्चात्ताप करने लगे। परंतु जब उनकी प्रार्थनाओं की उपेक्षा टाइमन बार-बार करता है तब वे दुःखी होकर लौट चलने लगे।

इतने में न जाने क्यों टाइमन को एक दिल्लगी सूझी। यह उसके जीवन का अंतिम परिहास था। न जाने वह क्या सोच कर उन लोगों से कहने लगा—"उपस्थित सज्जनों, आप सभी अपनी रक्षाके लिए व्याकुल हो उठे हैं किंतु इसलिए चिंतित होने की क्या आवश्यकता है। इस संसार से रक्षा पाने के लिए आपलोगों के सामने एक अच्छा उपाय विद्यमान है। यदि आप उस उपाय को ग्रहण करना चाहते हैं तो बोलिये!"

अचानक टाइमन के इस प्रकार के भाव-परिवर्तन से सभी विस्मित हुए। वे उसके इस प्रकार के कथन से उत्साहित हो उठे और बड़ी उत्सुकता से उस उपाय को जानने के लिए खड़े हो गये।

टाइमन ने एक बड़े पेड़ की ओर संकेत करते हुए कहा— "उस पेड़ को शीघ्र ही काट डालना है परंतु इतना बड़ा पेड़ कदाचित् देखने को मिलता है। इसकी अगणित शाखाएँ हैं। यदि आप सचमुच शत्रुओं से रक्षा पाना चाहते हैं तो आप सभी आइये और सभी एथेन्स वालों को बुला कर लाइये फिर सभी एक साथ फाँसी लगाकर उस पेड़ की अगणित शाखाओं से लटक जाइये। बस देखियेगा सभी की रक्षा हो जायगी। यदि आप सचमुच संकटों और कष्टों से छुटकारा पाना चाहते हैं तो उस वृक्ष रूपी महान उपाय को ग्रहण कीजिये।"

टाइमन की बातें सुन कर सभी के मस्तक झुक गये। सभी समझ गये कि दारुण घृणा और मर्म-पीड़ा से पीड़ित होकर टाइमन उन्हें आत्महत्या का परामर्श दे रहा है। टाइमन ने जो कहा वह मनुष्य-जाति के प्रति केवल मात्र व्यंग है अथवा वास्तविक सत्परामर्श है—कोई न समझ सका।

टाइमन के जीवन-नाटक का यहाँ अंत होता है। इस घटना के बाद फिर किसी ने टाइमन को नहीं देखा।

....बहुत दिनों बाद एक दिन एक सैनिक जब उस वन के समीप समुद्र के किनारे भ्रमण कर रहा था, तब उसने वहाँ एक अद्भुत समाधि देखी। उस समाधि के फलक पर लिखा था— 'मानव-विद्वेषी टाइमन यहाँ सुख से सो रहा है।'

कृतघ्न मनुष्यों के हृदयहीन व्यवहारों से जर्जर टाइमन अशांत और क्षुब्ध हो उठा था। वह अंत तक मनुष्यों को अभिशाप देता गया।—अब वह सो रहा है! मृत्यु उसके लिए शांति

ही तो है। न जाने कितने लोग युग-युग उस समाधि को देखेंगे और उस लिपि को पढ़ेंगे। कोई उसे अविश्वासी कहेगा तो कोई अहंकारी अथवा कोई उसे मूर्ख कहेगा तो कोई पागल। परंतु मानव जाति के किये अथवा किये जानेवाले पापों का अंतिम परिणाम टाइमन है—इसे कौन अस्वीकार करेगा? क्या कभी संसार के सभी लोग तो टाइमन नहीं बन जायेंगे?



जैसी आपकी मर्जी

उस समय फ्रांस अनेक भागों में बँटा हुआ था। हर-एक विभाग का शासक एक ड्यूक था। ऐसे ही एक ड्यूक को उसके भाई ने सिंहासन से उतार कर राज्य से निकाल दिया था। जिसने अब सिंहासन पर अनुचित अधिकार स्थापित किया उसका नाम था फ्रेडरिक।

जो ड्यूक सिंहासन से उतार दिया गया वह अपने राज्य से निर्वासित होकर एक वन को चला गया। उस वन का नाम आर्डेन था। वह उस वन में अपने कुछ विश्वासी अनुचरों के साथ सुख से रहने लगा। राजधानी के विलासपूर्ण जीवन में सुख नहीं था, था केवल एक अदृश्य भय—न जाने कौन कब हत्या कर डाले, न जाने कौन कब सिंहासन छीन ले। परन्तु वन-वास में आकर ड्यूक की वे चिन्ताएँ न रहीं। इसी जीवन को अब वह यथार्थ में सुखमय जीवन समझने लगा।

राज्य के बदले में अब उस ड्यूक को सच्चा सुख मिलने लगा। पेड़ों की घनी छाँहों में सोया-सोया वह हिरनों को देखता था। उनके नन्हें-नन्हें बच्चे कैसे उछल-उछल कर खेलते थे। रंग-विरंगे चितकबरे हिरन जब दौड़ते थे तब वन की शोभा भली-भाँति निखर उठती थी। हिरनों के अतिरिक्त उस वन में और भी अनेक प्रकारों के पशु थे। वे भी अपने-अपने रंग-ढंग के निराले थे। मानो प्रकृति देवी ने उन्हें अपने हाथों से अपने

प्रमोद-वन के लिए ही विशेष रूप से बनाया हो। धीरे-धीरे ड्यूक जंगल के पशुओं से प्रेम करने लगा।

सिंहासन से उतारे जाने के कारण उत्पन्न हुए दुःख को वह धीरे-धीरे भूलता गया। अब वह प्रायः कहा करता था कि दरिद्रता में भी सुख है और वही सच्चा सुख! वह कहता था—"मेरी इस दशा को दुर्दशा कैसे कहूँ? जीवन का वास्तविक आनन्द जो मुझे इसी दशा में मिल रहा है—लोग चाहे दुःख और दुर्दशा को कितनों ही न कोसे मैं तो इसी में प्रसन्न हूँ।"

ड्यूक के जीवन में समग्र रूप से एक महान परिवर्तन आ गया था। संसार की सभी वस्तुएँ अब उसके लिए अच्छी थीं। वह हर वस्तु में केवल अच्छाई को ही देखता था। राजधानी के कलरवों से अब वह दूर था परन्तु उसे एकाकीपन का अनुभव कभी न दुःख दे सका। वह पेड़ों और पौधों से बातें करता था। न जाने जंगल के वे पेड़-पौधे उसे कितनी अच्छी-अच्छी बातें सुनाते थे! नदियाँ उसे निशदिन संगीत सुनाती थीं। मिट्टी के छोटे-बड़े टीलों पर वह जीवन का मर्म लिखित देखता था। उसका मन पूर्ण रूप से शांत हो चुका था।

निर्वासित ड्यूक की एक लड़की थी, जिसका नाम रोजालिंड था। वह पिता के साथ जंगल में जाकर नहीं बसी थी। वह नये ड्यूक की पुत्री सिलिया के साथ राज-प्रासाद में ही रहती थी। वे एक दूसरे को खूब चाहती थीं। सिलिया के पिता और रोजालिंड के पिता में जो विवाद चल रहा था उसका तनिक भी प्रभाव उन दो लड़कियों पर नहीं पड़ पाया था। सिलिया जानती थी कि उसके पिता ने रोजालिंड के पिता को राज्य से निर्वासित किया है तथा उसका राज्य छीन लिया है। इस कारण वह रोजालिंड से बहुत मित्रतापूर्ण व्यवहार करती थी। हो सकता है उसने अपने

पिता के किये पापों का प्रायश्चित्त इसी प्रकार से करने को ठाना था !

रोजालिंड कभी-कभी अपनी वास्तविक परिस्थिति पर मनन करती थी और अपनी पराधीनता के बारे में सोचती थी। जब उसके मन में ऐसी भावना की लहरें उठती थीं तब उसका बाह्रिक प्रभाव भी उसके मुखमण्डल पर पड़ता था—उसके हँसी से भरे मुख पर उदासी छा जाती थी। जब रोजालिंड एकान्त में बैठ कर अपने बारे में सोचा करती थी तब सिलिया अवश्य उसके पास पहुँच जाती और उसे मनाती। सिलिया उस समय उससे तरह-तरह की बातें करने लगती थी जिससे कि रोजालिंड का ध्यान दूसरी तरफ आकर्षित हो।

एक दिन ऐसी बात हुई। रोजालिंड अपनी चिन्ता में डुबी हुई थी। सिलिया उसे मनाते-मनाते हार गयी, परन्तु उसकी चिंता का तार टूटा नहीं। इतने में वहाँ एक दूत आ पहुँचा, उसने दोनों लड़कियों से कहा कि राज-प्रासाद के सम्मुख एक मल्लयुद्ध (दंगल) होनेवाला है यदि वे देखना चाहती हैं तो शीघ्र चली जायँ। सिलिया तुरन्त अपनी बहिन को साथ लिये वहाँ पहुँची।

उस समय मल्लयुद्ध (दंगल) राजाओं तथा महाराजाओं के मनोरंजन का एक साधन था। रनिवास की सुन्दरियाँ इस मल्लयुद्ध को अधिक पसंद करती थीं। विशेष रूप से मल्लयुद्ध उन्हीं को दिखाने के लिए हुआ करता था। परंतु आज का मल्लयुद्ध सचमुच कुछ अद्भुत था। लड़नेवाले दोनों मल्ल (पहलवान) समान बल के नहीं थे। एक तो देखने में दैत्य के समान लगता था जो वास्तव में बहुत ही पराक्रमी और बलशाली था। उसे देखने से ही पता चलता था कि मल्लयुद्ध का अभ्यास वह नित्य करता है। परन्तु उसका प्रतिपक्षी एक नवयुवक था। जिसकी अवस्था और अभिज्ञता दोनों ही कम थीं।

इस मल्लयुद्ध का परिणाम सभी के निकट स्पष्ट था कि वह युवक मारा जायगा। मल्लयुद्ध देखने के लिए आयी हुई सभी स्त्रियाँ यह सोचकर दुःखित हुईं।

ड्यूक भी स्वयं वहाँ उपस्थित था। वह सिलिया और रोजालिंड को निकट बुला कर बोला, "तुम लोग यहाँ क्यों आई हो। इस मल्लयुद्ध का परिणाम बहुत ही दुःखदायी होगा। तुम लोग उसे नहीं सह सकोगी। हाँ! यदि तुम लोग उस युवक को समझा-बुझाकर लड़ने से रोक सकती हो तो देखो।"

सिलिया ने सर्वप्रथम उस युवक से न लड़ने के लिए अनुरोध किया। परन्तु उस युवक ने उसकी बातों पर कुछ भी ध्यान न दिया। अब रोजालिंड उसे समझाने लगी। वह पूर्ण आंतरिकता के साथ उस युवक को समझाती गयी कि वह अपने से अधिक बलशाली व्यक्ति से लड़ता है तो उस पर संकट आ सकता है। रोजालिंड की बातों में सहानुभूति और सहृदयता घुली हुई थीं। उसकी बातें केवल अनुरोध मात्र नहीं जान पड़ीं। इसलिए उसकी बातों का प्रभाव उस युवक पर भली-भाँति पड़ा। परंतु वह युवक लड़ने से विमुख होने के बजाय लड़ने के लिए और भी उत्साहित हो उठा।

उस युवक ने बड़ी नम्रता से रोजालिंड से कहा कि वह उसके अनुरोध की रक्षा नहीं कर सकता क्योंकि जब उसने एक बार लड़ने का निश्चय कर लिया है, तब वह कैसे उस निश्चय को बदल सकता है! यदि वह अपना निश्चय बदलता भी है तो वह उसके लिए बड़ी लज्जा और अपमान की बात होगी। उस युवक ने यह भी कहा कि उसके बारे में महिलाओं का चिंतित होना निरर्थक है क्योंकि इस संसार में उसका कोई भी अपना नहीं है। यदि वह मरता भी है तो उसके वियोग में कोई नहीं आँसू बहायेगा।

युवक की बातों से उसके प्रति रोजालिंड की ममता और भी बढ़ गयी। वह धीरे-धीरे युवक के प्रति आकृष्ट होने लगी।

मल्लयुद्ध आरम्भ हुआ। सिलिया चाहती थी कि उस युवक को कोई आघात न लगे। परन्तु रोजालिंड बहुत ही व्याकुल हो उठी। वह मन ही मन उस युवक की रक्षा के लिए ईश्वर के निकट प्रार्थना करने लगी। वास्तव में रोजालिंड उस युवक को प्रथम बार देखते ही उससे प्रेम करने लगी थी।

सुन्दरी महिलाओं द्वारा उत्साहित होकर उस युवक की शक्ति दूनी हो गयी और पूर्व का साहस लौट आया। वह पूर्ण पराक्रम के साथ लड़ता गया। अन्त तक उसका प्रतिद्वन्द्वी हार गया।

ड्यूक तथा अन्य सभी दर्शक उस युवक की वीरता से प्रसन्न हुए। दर्शक महिलाएँ उसके अद्भुत साहस की प्रशंसा करने लगीं। ड्यूक ने उस युवक से उसका परिचय पूछा। युवक ने अपना परिचय देते समय कहा कि महाशय रोलंड-डी बैज का वह छोटा लड़का है। उसका नाम ओरलैंडो था। उस समय उसका पिता रोलंड-डी-बैज जीवित नहीं था। यह रोजालिंड के पिता—जो पहले ड्यूक था—का घनिष्ट मित्र था।

वर्तमान ड्यूक फ्रेडरिक यह सुन कर बहुत ही अप्रसन्न हुआ। परंतु रोजालिंड ने ड्यूक की अप्रसन्नता का ख्याल नहीं किया। उसने पुरस्कार-स्वरूप अपने गले से हार उतार कर उस युवक को दिया और उससे कहा—महाशय, आप मेरे इस साधारण उपहार को ग्रहण कीजिये। मैं बड़ी ही अभागिनी हूँ, नहीं तो आपको इससे भी अधिक मूल्यवान उपहार देती!"

रोजालिंड वास्तव में ही ओरलैंडो से प्रेम करने लगी थी—यह बात सिलिया के निकट छिपी नहीं!

इधर महाशय रोलंड-डी-बैज का नाम सुनते ही फ्रेडरिक मन

ही मन कुढ़ रहा था। वह और भी यह सोच कर जलने लगा कि बड़े-बड़े सभी सम्मानित व्यक्ति उस निर्वासित ड्यूक के मित्र हैं, किंतु उसके नहीं! उसके मन में धीरे-धीरे द्वेष की भावना उत्पन्न होने लगी। जब फ्रेडरिक ने सुना कि रोजालिंड ओरलैंडो पर मोहित हो चुकी है तब वह और भी जल-भुन उठा। उसने रोजालिंड को राज महल से निकल जाने को कहा।

सिलिया अपने पिता की निष्ठुरता पर बहुत दुःखी हुई। वह रोने लगी। उसने रोजालिंड के लिए अपने पिता के निकट अनेक मिन्नतें कीं किंतु उसकी प्रार्थना से निर्दयी फ्रेडरिक का हृदय नहीं पसीजा।

रोजालिंड का राज-प्रसाद से चले जाना ही स्थिर हुआ। जब रोजालिंड जाने लगी तब सिलिया ने भी उसके साथ चलने का निश्चय किया। उसी रात को दोनों बहिनों ने छद्मवेश धारण किया। रोजालिंड वेश बदल कर ग्रामीण पुरुष बन गयी और सिलिया बनी ग्रामीण स्त्री। अब देखने में वे दोनों भाई बहिन ऐसे लगती थीं। रोजालिंड ने अपने लिए एक नया नाम चुना—गैनिमिड और सिलिया ने अपना नाम रखा एलियाना।

उन्होंने इस प्रकार छद्मवेश धारण कर अपने साथ पाथेय के रूप में कुछ धन और रत्न लिये। वे आर्डेन के वन में जाना चाहती थीं जहाँ रोजालिंड का पिता निर्वासित ड्यूक रहता था। आर्डेन का वन राजधानी से बहुत दूर था। फिर भी वे उसी वन को जाने के लिए तैयार हो गयीं।

यात्रा के प्रथम भाग में उनको पथ में पांथशालाएँ मिलीं। परंतु ज्यों-ज्यों वे आगे बढ़ती गयीं त्यों-त्यों पथ अधिक संकटमय होने लगा। अब उन्हें कोई सराय नहीं मिली। फिर भी वे उस लंबे और संकटपूर्ण पथ को तय करते हुए जंगल के समीप आ पहुँची रोजालिंड—अब गैनिमिड—शुरू से ही बड़ी खुशदिल थी।

उसका चित्त सदा ही प्रसन्न रहा करता था। परंतु अभी वह इतनी थक गयी थी कि थकावट के मारे वह रो पड़ी और रोकर कहने लगी कि अब उसका जी एक स्त्री की भाँति रोने को चाहता है यद्यपि वह एक पुरुष के वेश में थी।

धीरे-धीरे वे आर्डेन के वन में आकर उपस्थित हुईं। अब उन्हें निर्वासित ड्यूक को ढूँढ़ना था। वे केवल इतना जानती थीं कि ड्यूक इसी वन में रहता है लेकिन उसके निवास-स्थान का ठीक पता वे नहीं जानती थीं। वे थकेमादे एक पेड़ के नीचे बैठ गयीं।

वे जिस पगडंडी के किनारे पेड़ के नीचे बैठी थीं उसी पगडंडी से एक चरवाहा गुजरा। गैनिमिड-वेशिनी रोजालिंड ने उस चरवाहे को देखते ही पास बुलाया। उसने उस चरवाहे से पूछा, "भाई चरवाहा, तुम तो इसी वन में रहते होगे। क्या बतला सकते हो इस वन में धन देकर विश्राम का स्थान तथा भोजन मिल सकता है? मेरी बहिन की ओर देखो, चलते-चलते बेचारी थक गयी है। आखिर एक बच्ची ही तो है।"

उस चरवाहे ने यह सुन कर कहा कि वह जिसका नौकर है वह अपनी कुटिया बेचना चाहता है। यदि वे उसके साथ चले तो वहाँ उनको भोजन और रहने का स्थान मिल सकता है।

गैनिमिड और एलियाना को उस चरवाहे के साथ उस कुटिया के मालिक के पास चलना पड़ा। उन्होंने अपने लिए कुटिया खरीद ली। उस कुटिया के मालिक के पास बहुत सी भेड़ें थीं। गैनिमिड और एलियाना ने उससे भेड़ों का झुंड भी मोल लिया और उस चरवाहे को अपने पास रख लिया। वह चरवाहा उनके पास उनके नौकर के रूप में रहने लगा।

अभी तक रोजालिंड और सिलिया ने केवल मात्र छद्मवेश धारण किया था। किन्तु अब उनके छद्मवेश मानो उनके सच्चे

वेश हो गये। रोजालिंड और सिलिया अब इस जंगल में सचमुच भेड़ पालनेवाले गड़ेरिये स्त्री-पुरुष की भाँति रहने लगीं। अब उन्हें देख कर कौन जान सकता था कि वे राजकुमारियाँ हैं। रोजालिंड गैनिमिड नाम का एक पक्का चरवाहा बन गयी। वह दिन भर अपनी भेड़ों को चराया करती थीं। अब उसे देख कर कौन कह सकता था कि वह एक स्त्री है! उसने अभ्यास से अपना बाहरी आचरण तो पुरुषों का सा बना लिया परन्तु उसका भीतरी आचरण एक नारी के समान ही था। अभी तक उसके मन में रोलंड-डी-बैज के पुत्र ओरलैंडो के लिए प्रेम था। वह मन ही मन दिन रात उसकी चिंता में लवलीन रहती थी। परन्तु वे एक दूसरे से दूर थे। गैनिमिड-वेशिनी रोजालिंड नहीं जानती थी कि उसका प्रियजन उसी आर्डेन के वन में रहता है।

ओरलैंडो रोलंड-डी-बैज नामक एक प्रतिष्ठित व्यक्ति का पुत्र था। इस कारण उसका वनवासी होना भी कुछ अस्वाभाविक लगता है। उसके वनवासी होने के पीछे भी एक दर्दभरी लम्बी दास्तान मौजूद है। जब ओरलैंडो के पिता का देहांत हुआ तब वह बहुत ही छोटा था। इस कारण उसका बड़ा भाई ओलिवर हुआ उसका पालन-पोषण करनेवाला। ओलिवर बहुत ही खल और क्रूर था। रोलंड- डी-बैज ने मरते समय अपने बड़े लड़के ओलिवर से ओरलैंडो की पढ़ाई-लिखाई पर ध्यान देने के लिए कहा था; लेकिन ओलिवर ने अपने भाई की पढ़ाई-लिखाई पर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। फिर भी ओरलैंडो का आचरण एक शिक्षित युवक का सा हुआ। यह देख कर उसका बड़ा भाई ओलिवर बहुत जलता था। उसने अंत तक ओरलैंडो की हत्या कराने के लिए एक षड़यंत्र रचा। उसने एक मल्लयुद्ध (दंगल) का प्रबंध किया और उस मल्लयुद्ध में छोटे भाई को एक ख्याति-प्राप्त मल्ल (पहलवान) के विरुद्ध खड़ा किया। वह चाहता था कि किसी

प्रकार से ओरलैंडो उस मल्लयुद्ध में मारा जाय। परन्तु मल्लयुद्ध का फल विपरीत हुआ। ओरलैंडो जीता और वह नामी मल्ल हार गया।

अपनी क्रूर अभिसंधि को असफल होते देख ओलिवर और भी क्रुद्ध हो उठा, उसने किसी भी प्रकार से ओरलैंडो के विनाश करने की प्रतिज्ञा की। उसने बहुत सोच-विचार के बाद स्थिर किया कि ओरलैंडो जिस कमरे में सोता है उस कमरे में आग लगा दी जाय। ऐसे करने से ओरलैंडो का जल कर मरना निश्चित था।

ओलिवर ने जब ओरलैंडो को इस प्रकार से मारने की प्रतिज्ञा की तब महाशय रोलंड-डी-बैज का एक पुराना बूढ़ा नौकर पास ही खड़ा था। उसने ओलिवर की प्रतिज्ञा सुन ली। वह बूढ़ा नौकर ओरलैंडो को अपने प्राणों से भी अधिक चाहता था। जब ओरलैंडो मल्लयुद्ध समाप्त होने के पश्चात् ड्यूक के प्रासाद से अपने घर को लौट रहा था तब उस बूढ़े नौकर ने, जिसका नाम ऐडम था, ओरलैंडो से रास्ते में मिल कर सारा वृत्तांत बताया और ओलिवर के हाथ से बचने के लिए ओरलैंडो को शीघ्र ही कहीं भाग चलने को कहा।

ओरलैंडो के लिए उसी क्षण कहीं भाग चलना वास्तव में असंभव सा था, क्योंकि उसके पास लम्बी यात्रा के लिए किसी प्रकार का पाथेय नहीं था। बूढ़ा ऐडम यह जानता था। इसलिए वह अपना संचित धन पाँच सौ क्राउन साथ लाया था। यह धन था उसके वर्षों से एकत्र किये हुए वेतन। उसने ओरलैंडो को वह धन देते समय कहा—"बेटा तुम मेरे लिए चिन्ता न करो! ईश्वर सब की रक्षा करते हैं। वे मेरी भी रक्षा करेंगे। जो ईश्वर एक कौवे का भी पालन-पोषण करते हैं वे मेरे बुढ़ापे में मेरा पालन-पोषण भी करेंगे। यदि तुम मुझे एक नौकर के रूप में

अपने साथ रखते हो तो मैं तुम्हारा सारा काम सुचारु रूप से करता रहूँगा, जैसा कि एक युवक करता है।"

ओरलैंडो ने उस हितकारी नौकर को अपने साथ ले लिया। उसने उस बूढ़े से कहा कि वह स्वयं दोनों के पालन-पोषण के लिए प्रचुर धन कमा लेगा। उसके धन के खर्च करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। वे दोनों भी इधर-उधर भटकते-भटकते अंत तक आर्डेन के वन में उपस्थित हुए। लम्बी यात्रा के बाद वे दोनों बहुत थक गये। उनको बहुत जोरों की भूख भी लगी थी। बूढ़ा ऐडम तो इतना थक गया था कि उसके लिए अब आगे चलना असंभव था। वह अवसन्न हो कर पथ के किनारे बैठ गया। उसने ओरलैंडो से कहा—"बेटा मुझे इतनी प्रचंड भूख लगी है कि मैं अभी मर जाऊँगा!" यह सुन कर ओरलैंडो ने उसे अपनी गोद में उठा लिया और पेड़ की शीतल छाया में ले जा कर बैठा दिया। वह स्वयं कुछ खाद्य का संग्रह करने के लिए चला गया।

ओरलैंडो इधर-उधर घूमता हुआ उस स्थान पर पहुँचा जहाँ निर्वासित ड्यूक और उसके साथी भोजन करने के लिए बैठे हुए थे। ओरलैंडो उनके सम्मुख रखी भोजन-सामग्री को देख कर उनके समीप गया और बोला—"रुको! खाओ नहीं; मैं तुम लोगों की भोजन-सामग्री ले लूँगा।"

निर्वासित ड्यूक उसकी दशा देख कर समझ गया कि वह बेचारा बहुत ही भूखा है और असह्य भूख के कारण एक पशु के समान खूँखार हो उठा है। उसने ओरलैंडो को अपने पास बैठने को कहा और अपने साथ भोजन करने के लिए अनुरोध किया। ओरलैंडो ड्यूक के भद्र आचरण से लज्जित हुआ। उसने कहा कि, उसने उन लोगों को जंगली समझ कर ऐसे कठोर शब्दों का प्रयोग किया है। वह लज्जित होकर उन लोगों के पास क्षमा माँगने लगा। ओरलैंडो ने कहा कि वह अकेला भोजन

नहीं कर सकता क्यों कि उसके साथ एक और बूढ़ा आदमी है जो केवल स्नेह के वशीभूत हो कर उसके साथ इस भयंकर जंगल को आया है। इसलिए जब तक वह बूढ़ा नहीं खाता तब तक वह नहीं खा सकता !

तब ड्यूक ने ओरलैंडो से उस बूढ़े को लाने के लिए कहा। ओरलैंडो ड्यूक के कहने पर बूढ़ा ऐडम को उठा कर वहाँ लाया।

भोजनादि समाप्त होने के बाद ड्यूक ने ओरलैंडो से उसका परिचय पूछा ! ओरलैंडो ने जब अपना परिचय दिया तब ड्यूक जान गया कि वह युवक उसके प्रिय मित्र रोलंड-डी-बैज का पुत्र है। ड्यूक अपने पुरातन मित्र के पुत्र को देख कर बहुत ही प्रसन्न हुआ। उसने उस युवक को अपने पास रखना चाहा। युवक इस पर सहमत हो गया। ओरलैंडो और बूढ़ा ऐडम अब निर्वासित ड्यूक के साथ रहने लगे।

ओरलैंडो अदृष्ट के वशीभूत हो कर एक वनवासी के समान आर्डेन के वन में रहने लगा। वह नहीं जानता था कि उसे कब तक उस वन में रहना पड़ेगा। जो भी कुछ हो, वह धीरे-धीरे नागरिक जीवन के बहुत कुछ भूलने लगा। परन्तु साथ ही साथ एक याद उसके मन में सदा के लिए अमिट बनती गयी। उस याद ने उसके अनजाने में उसीके मन में घर बना लिया था। वह याद थी रोजालिंड की !

ओरलैंडो का सारा समय रोजालिंड की चिंता में बीतता था। वह अपने कामों से अवकाश पाते ही किसी पेड़ के तने को खुरच कर उस पर रोजालिंड का नाम लिखता था अथवा उसकी स्मृति में अर्पित की गयी कोई प्रणय-कविता ! इस प्रकार से उसने अगणित पेड़ों को अपनी प्रिया के नामों तथा उसके लिए लिखी गयी प्रणय-कविताओं से भर दिया।

रोजालिंड और सिलिया भी इसी वन में गेनिमिड और

एलियाना के छद्म नाम से रह रही थीं। वे विस्मित हो कर जंगल के हर पेड़ पर रोजालिंड का नाम तथा गुण-गान खुदा हुआ देखती थीं। लेकिन कुछ ही दिनों बाद उनके विस्मय का अन्त हुआ। एक दिन ओरलैंडो वन में घूम रहा था। उसी समय एलियाना और गैनिमिड ने उसे देखा और उसके गले के हार को देख कर भली-भाँति पहचाना। यह हार रोजालिंड ने उसे मल्ल-युद्ध में विजयी होने के कारण दिया था।

गैनिमिड-वेशिनी रोजालिंड ओरलैंडो को पहचान गयी परन्तु ओरलैंडो गैनिमिड के वास्तविक रूप को पहचान न सका फिर भी गैनिमिड की आकृति उसकी प्रेमिका रोजालिंड से मिलती-जुलती थी इसलिए वह गैनिमिड के प्रति कुछ आकृष्ट हुआ। गैनिमिड ने ओरलैंडो से कुछ हँसी-दिल्लगी करने के लिए कहा कि इस वन में कोई एक महाशय निराश प्रेमिक आये हैं जो नन्हे-नन्हे पेड़ों पर अपनी प्रेमिका के नाम तथा गुणगान खुरच-खुरच कर लिखते हैं और इस प्रकार से वह महान प्रेमिक पेड़ों का सत्यानाश कर रहे हैं। गैनिमिड ने यह भी कहा कि यदि उस प्रेमीवर के दर्शन उसे मिल जायँ तो वह अवश्य उस प्रेमी सज्जन को कुछ उचित परामर्श देगी जिससे उन महोदय को प्रेम की इस बीमारी से छुटकारा मिल जाय।

यह सुनकर ओरलैंडो ने मुस्कुरा कर उत्तर दिया कि वह स्वयं वही निराश प्रेमी है और वह सचमुच उससे उचित परमर्श चाहता है। तब गैनिमिड ने ओरलैंडो से कहा, "यह कोई मुश्किल की बात नहीं है। दो-चार दिनों में तुम्हारा यह रोग दूर हो जायगा किंतु प्रतिदिन तुम्हें मेरे घर पर आना होगा। वहाँ तुम मुझे ही कुछ समय के लिए रोजालिंड समझ लेना और मुझसे अपना प्रेम जताना। मैं रोजालिंड बन कर तुम्हारे प्रेम की हँसी उड़ाऊँगा और तुम्हें इस प्रेम के लिए तिरस्कृत करूँगा। देखना धीरे-धीरे

तुम अपने निराश प्रेम के कारण लज्जित होने लगोगे और थोड़े दिनों में तुम्हारा यह रोग दूर हो जायगा।"

ओरलैंडो के निकट गैनिमिड ने निर्वासित ड्यूक के बारे में सुना और उसे ओरलैंडो से ही निर्वासित ड्यूक के ठीक निवास स्थान का पता मिला। गैनिमिड ने उस ड्यूक से साक्षात्कार किया। ड्यूक ने जब गैनिमिड से उसका परिचय पूछा तब गैनिमिड ने कहा कि उसका जन्म भी ड्यूक के समान एक प्रतिष्ठित कुल में हुआ है परंतु ड्यूक ने उसकी बातों पर विश्वास नहीं किया इस कारण वह अपनी बेटी का वास्तविक परिचय जान न सका।

इसी बीच एक विचित्र घटना घटी। एक दिन ओरलैंडो गैनिमिड से मिलने जा रहा था। उसने जाते समय एक व्यक्ति को पगडंडी के किनारे सोया हुआ देखा। आश्चर्य की बात तो यह थी कि उस व्यक्ति के गले में एक साँप लपेटा हुआ पड़ा था। ओरलैंडो उस व्यक्ति की तरफ बढ़ा। ओरलैंडो के पैरों की आहट पाकर वह साँप वहाँ से भाग गया। अब ओरलैंडो ने उस सोये हुए को भली भाँति देखा। वह पहचान गया कि वह उसीका बड़ा भाई ओलिवर है। परंतु अदृष्ट का ऐसा संयोग था कि पीछे की ओर मुड़ते ही ओरलैंडो ने देखा कि एक शेरनी ओलिवर के लिए घात लगा कर बैठी है। उसने उस शेरनी को देख कर एक बार मन में सोचा कि वहाँ से भाग चलना ही उचित होगा। परंतु दूसरे ही क्षण उसके भ्रातृप्रेम ने उसे रोका। उसने तुरंत अपनी तलवार निकाल कर उस शेरनी पर आक्रमण कर दिया। शेरनी मारी गयी परंतु ओरलैंडो का एक हाथ शेरनी के तेज नाखुनों से जख्मी हो गया।

निद्रित ओलिवर जाग गया था। ओरलैंडो के व्यवहार से उसकी मानवता लौट आयी। वह अपने भाई के साथ किये

बर्ताव पर बहुत ही लज्जित हुआ। पश्चात्ताप की अग्नि से मानो उसका हृदय जल-जल कर भस्म होने लगा। उन्होंने एक दूसरे को गले लगाया।

इधर घाव से अत्यधिक खून बहने के कारण ओरलैंडो का शरीर धीरे-धीरे दुर्बल होने लगा। इसलिए ओरलैंडो गैनिमिड से मिलने के लिए उसके घर पर न जा सका। उसने ओलिवर को गैनिमिड के निकट भेजा। ओलिवर ने गैनिमिड से जा कर ओरलैंडो पर आयी विपत्ति के बारे में कहा ओरलैंडो के शेरनी के द्वारा भयानक आघात प्राप्त होने के समाचार से गेनिमिड-वेशिनी रोजालिंड बहुत ही व्याकुल हो उठी। वह अचेत हो कर गिर पड़ी परंतु उसकी चेतना लौट आने पर उसने कहा कि वह वास्तविक मूर्छा नहीं थी। उसने यों ही वैसा किया था। किंतु ओलिवर समझ गया कि यह वास्तविक मूर्छा ही थी।

ओरलैंडो ने किस प्रकार से अपने जीवन को संकट में डाल कर उसकी रक्षा की थी उसका बहुत ही रोचक वर्णन अब ओलिवर गैनिमिड और एलियाना के सम्मुख करने लगा। केवल यही नहीं ओलिवर ने दोनों भाइयों की शत्रुता तथा अंत में उनके मिलन का वर्णन भी बहुत ही आकर्षक ढंग से किया। ज्यों-ज्यों ओलिवर अपने किये पापों का विवरण सुनाता गया और पश्चात्ताप के आँसू बहाता गया त्यों-त्यों एलियाना उसके प्रति आकृष्ट होती गयी। अंत तक ओलिवर और एलियाना में, जिसका वास्तविक नाम सिलिया था, प्रेम उत्पन्न हो गया।

ओलिवर ओरलैंडो के पास लौट गया। उसने ओरलैंडो को गैनिमिड के मूर्छित होने की अद्भुत घटना सुनायी, फिर एलियाना और उसके बीच उत्पन्न हुए नवीन प्रणय के बारे में कहा। ओलिवर ने यह भी कहा कि वह उस भेड़ पालनेवाली लड़की से

विवाह कर इसी वन में अपना अवशिष्ट जीवन अतिवाहित करेगा और अपनी सारी संपत्ति का ओरलैंडो को दान कर देगा।

इधर गेनिमिड-वेशिनी रोजालिंड ओरलैंडो को देखने के लिए ओरलैंडो के निवास-स्थान पर पहुँची। ओरलैंडो ने गेनिमिड से ओलिवर और एलियाना के प्रेम के बारे में कहा। उसने गेनिमिड से यह भी कहा कि वे प्रेम के बंधन में एक दूसरे से पूर्ण रूप से बँध चुके हैं। केवल यही नहीं आगामी दिन उनका विवाह होना भी निश्चित हो गया है इसी अवसर पर ओरलैंडो ने गेनिमिड से अपने मनोभाव को स्पष्ट रूप से प्रकट कर कहा कि वह सचमुच रोजालिंड को भूलना नहीं चाहता बल्कि वह उस को पाना चाहता है। गेनिमिड ने यह सुनते ही हँस कर प्रतिज्ञा की कि वह भी अवश्य ओरलैंडो के सम्मुख रोजालिंड को ला कर उपस्थित करेगा और आनेवाले दिन ओरलैंडो तथा रोजालिंड का विवाह भी होगा! ओरलैंडो यह सुन कर बहुत ही आश्चर्यान्वित हुआ। परंतु गेनिमिड ने कहा कि यह असंभव कार्य उसकी विचित्र जादूगरी के द्वारा ही केवल संभव होगा।

परंतु इस पर भी ओरलैंडो का संशय दूर नहीं हुआ। तब गेनिमिड ने ओरलैंडो से कहा कि यदि वह सचमुच रोजालिंड से विवाह करना चाहता है तो वह अवश्य ड्यूक तथा उसके साथियों को भी निमंत्रित करे।

दूसरे दिन ओलिवर एलियाना को साथ लिये ड्यूक के निवास-स्थान पर उपस्थित हुआ। ओरलैंडो भी आया था। दुलहे दो थे। विवाह भी दो होनेवाले थे किंतु वहाँ केवल एक ही दुलहिन को उपस्थित देख कर सभी विस्मित हुए। इतने में वहाँ गेनिमिड का आगमन हुआ। उसने आकर ड्यूक से पूछा कि यदि ड्यूक की लड़की रोजालिंड ओरलैंडो से विवाह करना चाहती है तो क्या ड्यूक अपनी लड़की का विवाह ओरलैंडो से नहीं कर

देंगे । ड्यूक ने कहा कि, इस विवाह में उसका भी समर्थन है। वह ओरलैंडो को रोजालिंड का योग्य पति समझता है।

जब ड्यूक उस विवाह में सम्मत हो गया तब गेनिमिड-वेशिनी रोजालिंड एलियाना याने सिलिया का हाथ पकड़ कर बाहर गयी। वहाँ दोनों बहिनों ने छद्मवेश त्याग दिया और वे पुन सिलिया और रोजालिंड के स्वाभाविक वेश में प्रकट हुईं। अब सिलिया और रोजालिंड सभी व्यक्तियों के सम्मुख आ कर खड़ी हो गयीं। रोजालिंड ने नत हो कर अपने पिता को प्रणाम किया तथा उसका आशीष मांगा। निर्वासित ड्यूक दीर्घ समय के पश्चात् अपनी पुत्री को देख कर बहुत प्रसन्न हुआ। रोजालिंड ने अपने पिता से सारा विवरण प्रकट कर कहा।

ओलिवर से सिलिया का विवाह हुआ तथा ओरलैंडो से रोजालिंड का। आर्डेन के वन में इस विवाह के अवसर पर कोई विशेष धूमधाम नहीं हुई। फिर भी ये विवाह बहुत ही सुखमय हुए। नगर के कोलाहल में संभवतः कोई विवाह ऐसा सुखमय नहीं होता। विवाह के उपरांत सभी एकत्र हो कर खुशियाँ मनाने लगे। उन्होंने इस अवसर पर एक सम्मिलित भोज का प्रबंध किया। वे पेड़ों की घनी छाया में बैठ कर हरिण का मांस पका कर बड़ी तृप्ति से खाने लगे। जब वे भोजन कर रहे थे तब वहाँ एक दूत उपस्थित हुआ। उस दूत ने आकर ड्यूक से कहा कि ड्यूक के छोटे भाई फ्रेडरिक ने उसे उसका राज्य लौटा दिया है।

फ्रेडरिक के अद्भुत परिवर्तन से सभी आश्चर्यचकित हुए। फ्रेडरिक के इस अद्भुत परिवर्तन के पीछे भी एक अद्भुत घटना छिपी थी। वह इस प्रकार है।

फ्रेडरिक अपनी पुत्री सिलिया के चले जाने से बहुत ही क्रुद्ध हो उठा था। राज्य के सभी सम्मानित व्यक्ति निर्वासित ड्यूक के मित्र हैं तथा वे आर्डेन के वन में जा कर ड्यूक से

मिलते हैं जान कर फ्रेडरिक का क्रोध और भी बढ़ गया। वह निर्वासित ड्यूक की हत्या कर देने के लिए एक सेना ले कर उस वन की ओर चलने लगा। परन्तु रास्ते में उसे एक महात्मा के दर्शन मिले और महात्मा की दया से उसके मन की सारी असदिच्छाएँ दूर हुईं। उसने निर्वासित ड्यूक को राज्य समर्पण कर एक मठ में रह कर अपने जीवन का अवशिष्ठ भाग अतिवाहित करने का निश्चय किया।

निर्वासित ड्यूक के सौभाग्य-सूर्य के पुनः उदित होने पर राज्य के सभी लोग सुखी हुए। ड्यूक को अब अपने विश्वासी अनुचरों को पुरस्कृत करने का सु-अवसर मिला—उसने उसका सदुपयोग किया।

इसी प्रकार से ईश्वर धार्मिक व्यक्तियों को सदा पुरस्कृत करते रहते हैं।

———

हैमलेट

विश्व-निर्माण को पवित्र और मनोरम वे कहते हैं जो उसके अंतस्थल में प्रवेश हीं कर सके। बाह्यदृष्टि से संसार तो सुन्दर और शान्ति-निकेत प्रतीत होता है परन्तु उसके अन्तर में अशांति की जो ज्वाला भभकती है उसके आगे भाव-भरे मन की सभी सौंदर्य-कल्पनाएँ बाध्य हो कर हार मानती हैं।

जटिल और पेंचीदे जीवन-पथ पर अनन्त अँधेरा छाया हुआ है। ज्ञानी और विचारशील कहलानेवाले अगणित जीवन-पथिक अनादि काल से इस पथ पर अग्रसर हो रहे हैं। परन्तु अफसोस ! पलक झपते ही पथ-भ्रष्ट हो कर कौन किधर चला जाता है उसका निर्णय कोई नहीं कर पाता।

हैमलेट, डेनमार्क का राजकुमार भी एक ऐसा ही पथिक है, जिसे विवेक पथ का निर्देश नहीं दे पाता, नियति-नियन्त्रित पथ पर अदृष्ट जिसे इच्छानुसार परिचालित करता है। उसकी बुद्धिमत्ता, सैनिक-चातुरी और रण-निपुणता व्यर्थ होती हैं—भाग्य के निष्ठुर परिहास के आगे। हैमलेट क्या करता है वह नहीं जानता। कोई उसे समझ नहीं सकता केवल अनुमान का आश्रय लेता है। फिर भी वह जीवित है और इसलिए अतिशय स्वाभाविक भी। संसार के सभी लोग अपने में हैमलेट की कल्पना करते हैं, करते आ रहे हैं और करते जायेंगे।

डेनमार्क के राजा की मृत्यु अचानक ही हुई। उसका भाई क्लाडियस सिंहासन पर बैठा जो किसी भी बात में मृत राजा से

अच्छा न था। अब मृत राजा की विधवा पत्नी गारट्रूड क्लाडियस से शादी कर लेती है और पुनः रानी बन जाती है। यह सभी को बुरा लगता है। क्योंकि लोगों के मन में पहले से ही यह सन्देह था कि भूतपूर्व राजा की मृत्यु मृत्यु नहीं बल्कि हत्या थी और उस चक्रांत का नायक स्वयं क्लाडियस था। राज्य के सभी लोग रानी को धिक्कारने लगे।

राजकुमार हैमलेट माँ के इस व्यवहार से बहुत ही क्षुब्ध हुआ क्योंकि पिता को वह अपने प्राणों से भी अधिक चाहता था। पिता के देहांत के थोड़े ही दिन बाद माँ ने पुनः विवाह कर लिया—यह चिन्ता हैमलेट के लिए इतनी दुखःदायी थी कि धीरे-धीरे सारे मनुष्य समाज के प्रति उसके मन में घृणा उत्पन्न हो गयी। वह क्रमशः इस जीवन से विरक्त होने लगा। अब उसे खेल-तमाशे अच्छे नहीं लगते—पढ़ने-लिखने में उसका मन नहीं भाता—वह दिन रात मृत्यु के लिए ईश्वर के निकट प्रार्थना करने लगा।

हैमलेट अपने पिता की मृत्यु के बारे में विशेष कुछ नहीं जानता था। वह केवल इतना ही जानता था कि यह मृत्यु जहरीले साँप के काटने से हुई है। परन्तु हैमलेट यह विश्वास नहीं करता था। वह सोचता था कि क्लाडियस ने ही उसके पिता को मारा है क्योंकि उसके समान दुष्ट के लिए कोई भी पाप असंभव नहीं था। अब रानी के इस व्यवहार से वह रानी पर भी संदेह करने लगा।

इसी बीच एक रात हैमलेट के प्रिय मित्र होरेशियो ने मृत राजा के प्रेतात्मा को राजप्रासाद के सामने टहलते देखा। होरेशियो उस समय राजप्रासाद के सम्मुख पहरा दे रहा था। उसके साथ अन्य पहरेदार भी थे। उन्होंने भी उस प्रेतात्मा को देखा। दूसरे दिन होरेशियो ने हैमलेट से सब कुछ कहा। उसने यह

भी कहा कि उस प्रेतात्मा के मुखमण्डल पर क्रोध के बजाय दुःख के चिह्न ही स्पष्ट अंकित थे। वह प्रेतात्मा कुछ कहने जा रहा था परन्तु इतने में भोर का मुर्गा बाग उठा।

हैमलेट समझ गया कि वह आत्मा अवश्य कुछ कहना चाहता है क्योंकि अकारण वे लोगों के सामने प्रकट नहीं होते। हैमलेट उस रात को अपने मित्र होरेशियो और मारसेलस के साथ राजप्रासाद के सम्मुख उस आत्मा के दर्शन पाने के लिए प्रतीक्षा करने लगा।

उस रात को ठंडक अधिक थी। बर्फीली हवा मानो बदन में सूई चुभो रही थी। वे समय बिताने तथा मानसिक स्थिति को सँभालने के लिए आपस में गपशप करने लगे। थोड़ी देर बाद प्रेतात्मा का आगमन हुआ। होरेशियो ने अपने मित्र हैमलेट को इसलिए चौकन्ना कर दिया।

हैमलेट तो पहले बहुत डर गया। वह भय और विस्मय से स्तम्भित होकर उस आत्मा को एकटक देखने लगा। धीरे-धीरे उसके मन का साहस लौट आया। उसने देखा उस प्रेतात्मा की आँखें करुणा से भरी थीं मानो उस दृष्टि में वर्षों की दीनता टपक रही थी। हैमलेट ने अच्छी तरह उस प्रेतात्मा को पहचाना। यह सचमुच उसी के पिता का प्रेतात्मा था। अब हैमलेट ने उस आत्मा को संबोधित कर कहा—"पिता जी! आप परलोक के शांतिपूर्ण वातावरण को छोड़ कर पुनः इस दुनियाँ में क्यों आये? बताइये, आपको शांति कैसे मिलेगी?"

प्रेतात्मा ने हैमलेट को अपने साथ चलने के लिए संकेत किया। मारसेलस अथवा होरेशियो ने उसे न रोका। क्योंकि ऐसा करने से हैमलेट पर कोई दैवी संकट आ सकता था।

अब प्रेतात्मा हैमलेट को एकांत में ले जा कर कहने लगा—"मैं तुम्हारा पिता हूँ। एक दिन मैं बगीचे में सो रहा था जब मेरे

भाई क्लाडियस ने अवसर पाकर मेरे कान में जहर डाल दिया और मेरी मृत्यु हो गयी। मेरी पत्नी गारट्रुड से विवाह करने के लिए तथा डेनमार्क के सिंहासन पर आरोहण करने के वास्ते उसने ऐसा किया था। तुम मेरे प्रिय पुत्र हो। यदि अपने पिता के लिए तुम्हारे हृदय में श्रद्धा वर्तमान हो तो तुम अवश्य इस हत्या का बदला लोगे। तुम केवल उस अन्यायी को दण्ड देना। रानी के लिए तुम्हें कुछ करना नहीं है, स्वयं परमेश्वर उसे दण्ड देंगे!"

हैमलेट ने प्रतिशोध लेने की प्रतिज्ञा की। उसने अपने मन में इसका दृढ़ संकल्प कर लिया कि जब तक वह इस हत्या का बदला नहीं चुकाता तब तक वह चैन की साँस नहीं लेगा। हैम-लेट ने अपने मित्र होरेशियो और मार्सेलस को सब कुछ बताया तथा अन्य किसी से इस बारे में कुछ न कहने की उनसे प्रतिज्ञा करायी।

हैमलेट पहले से ही पिता के शोक में कातर था। उसका चित्त चंचल और विक्षिप्त हो गया था। अब इस प्रेतात्मा के दर्शन से वह बहुत ही घबड़ा उठा। अब उसकी दशा देख कर लोगों के मन में संदेह पैदा होना स्वाभाविक था। हैमलेट डरता था, कहीं उसका चाचा क्लाडियस सारे भेद को न ताड़ ले और सावधान हो जाय। अब हैमलेट ने सारे रहस्य को छिपा कर रखने के लिए पागलपन का ढोंग रचा। वह पागलों की सी ऐसी हरकतें करने लगा जिससे सभी का ध्यान उस पर से हट गया, विशेष कर वर्त-मान राजा क्लाडियस का। वह समझने लगा कि वह पागल अब उसका क्या बिगाड़ सकता है?

राजा और रानी दोनों हैमलेट के इस पागलपन के सुन्दर अभिनय से प्रतारित हुए। वे यह नहीं समझ सके कि पिता के शोक में उसका मन विक्षिप्त है और वह बदला लेने के लिए ही

ऐसा कर रहा है ! प्रेतात्मा के आगमन के बारे में वे कुछ भी न जान पाये। राजा और रानी ने बहुत सोचा—परन्तु कुछ न हुआ। अन्त में वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि प्रेम ही इस पागलपन का मूल कारण है। हैमलेट उस समय सचमुच ओफेलिया से प्रेम करता था। ओफेलिया पालोनीयस नाम के एक सभासद की पुत्री थी।

हैमलेट दिन रात सोचा करता था कि किस प्रकार से पितृ-हत्या की प्रतिहिंसा चरितार्थ हो। वह क्षण भर के लिए भी अपनी प्रतिज्ञा को भूल नहीं सकता था। पिता उसका सब-कुछ था। अब उसने पिता के लिए सब-कुछ का त्याग कर दिया। सुख, शांति और ऐश्वर्य ही नहीं प्राणों से भी प्यारी ओफेलिया के प्रेम की बलि देना भी उसने सहर्ष स्वीकार कर लिया। फिर भी उससे क्या हो सकता था ? उसे बदला लेना ही होगा और वह भी शीघ्रता से, क्योंकि पिता के शांतिहीन आत्मा को शांति प्रदान करना उसके लिए जीवन का महान व्रत था।

हैमलेट रानी और राजा की परीक्षा लेने का उपाय सोचने लगा। इसी बीच नगर में एक घुमक्कड़ नाटक-मंडली आयी। अब हैमलेट ने एक अच्छी तरकीब सोची। उसने नाटक-मंडली से एक नाटक खेलने को कहा तथा राजा और रानी को इस अवसर पर निमंत्रित किया।

नाटक का अभिनय आरम्भ हुआ। नाटक का कथानक इस प्रकार से लिखा गया कि उसमें डेनमार्क के राजपरिवार में घटने वाली घटनाओं का एक वास्तविक चित्रण हो। वर्तमान रानी गार-ट्रूड और राजा क्लाडियस जैसे वास्तविक नायकों तथा नायिकाओं का समावेश भी इसी नाटक में कल्पित चरित्रों के छद्मवेश में किया गया। राजा क्लाडियस का प्रतीक था लूसीयेनस रानी का

नाटकीय रूप था बैपटिस्टा। मृत राजा का चरित्र-चित्रण इस नाटक में ड्यूक गोनजागो के रूप में हुआ था।

नाटक की कथा इस प्रकार से आरम्भ होती है।

वियेना के ड्यूक गोनजागो और उसकी पत्नी बैपटिस्टा में गभीर प्रणय था। वे एक दूसरे को अपने प्राणों से अधिक चाहते थे। एक दिन गोनजागो अपने बगीचे में सोया हुआ था। इतने में ड्यूक के एक निकट सम्बन्धी जिसका नाम लूसीयेनस था, मौका पाकर वहाँ आता है और संपत्ति के लोभ से उस ड्यूक के कान में जहर डाल कर मार डालता है। थोड़े ही दिनों बाद मृत ड्यूक की पत्नी बैपटिस्टा और हत्याकारी लूसीयेनस के बीच प्रेम का सम्बन्ध स्थापित होता है।

राजा क्लाडियस अथवा रानी गारट्रूड—किसी को भी हैमलेट के इस चालाकी का पता न था। वे तो केवल अभिनय देखने आये थे। जो भी कुछ हो हैमलेट उन्हीं के समीप बैठ कर अभिनय देखने लगा। वास्तव में हैमलेट नाटक नहीं देख रहा था—वह तो एक बहाना था। वह तो केवल एकाग्र होकर राजा और रानी के मुख-मंडल को देख रहा था। नाटक की कथा अग्रसर होती गयी। ड्यूक गोनजागो और रानी बैपटिस्टा मंच पर आते हैं। वे एक दूसरे को दत्तचित्त होकर प्रेम जताते हैं। बैपटिस्टा कहती है, यदि उसे गोनजागो की मृत्यु के बाद भी जीवित रहना पड़े तो वह कदापि अन्य किसी से प्रेम नहीं करेगी क्योंकि जो स्त्री ऐसा करती है वह अपने प्रथम पति की हत्याकारिणी कहलाती है।

नाटक की कथा अग्रसर होती गयी। क्लाडियस अपने किये को ज्यों के त्यों नाटक की घटना-परम्परा में स्पष्ट अंकित देखता गया। उसका मुखमण्डल वर्णहीन होने लगा। मानो उसे अपने

पापों की पुरानी याद फिर से सताने लगी। हैमलेट राजा के इन परिवर्तनों को ध्यानपूर्वक देखने लगा।

नाटक की कथा अग्रसर होती गयी। ड्यूक का निकट संबंधी लूसीयेनस ड्यूक के कानों में जहर डाल कर उसकी हत्या करता है। इस दृश्य को देख कर राजा क्लाडियस सचमुच विचलित हो उठा। अब उससे रहा न गया। वह एकाएक तबीअत खराब होने का मिस करके नाटक देखना छोड़ चला गया।

राजा के चले जाने पर नाटक भी स्थगित कर दिया गया।

जो भी कुछ हो हैमलेट का संशय दूर हो गया। अब वह केवल एक चिंता से घिरा रहा कि कैसे अपने प्रिय पिता की मृत्यु की प्रतिशोध-कामना चरितार्थ हो। इतने में रानी गारट्रुड ने हैमलेट को अपने प्रासाद में बुला भेजा। उसे हैमलेट के साथ एकांत में कुछ बातें करनी थीं।

जब राजा क्लाडियस ने सुना कि हैमलेट अपनी माँ से मिलने के लिए उसके महल में जा रहा है तब उसके मन में अकारण संदेह उत्पन्न हो गया। माँ और बेटे के बीच कैसी बातें होती हैं जानने के लिए उसने अपने सभासद पालोनीयस को रानी के प्रासाद में गुप्त रूप से भेजा। पालोनीयस रानी के कमरे में जा कर एक पर्दे के पीछे छिप गया।

हैमलेट अपनी माँ के पास गया। उसे देखते ही उसकी माँ उसे फटकारने लगी। रानी कहती गयी—"तुम्हारे पिता तुम्हारे इस व्यवहार से बहुत ही अप्रसन्न हुए हैं..."

क्लाडियस के लिए हैमलेट के अंतर में अत्यन्त घृणा थी। जब रानी गारट्रुड ने 'तुम्हारे पिता' कह कर क्लाडियस का उल्लेख किया तब हैमलेट का क्रोध अपनी सीमा पार कर गया। उसने अपनी माँ को फटकारने के लिए बड़ी बुद्धिमानी से काम लिया। वह पुनः पागलों का सा व्यवहार करने लगा। वह कहने

लगा—"पिता असंतुष्ट होंगे ! ऐसा कोई भी काम तो मैंने नहीं किया। हाँ तुमने अवश्य ऐसा काम किया है जिससे पिता सच-मुच क्रोधित हुए हैं..."

हैमलेट का मतलब उसके स्वर्गीय पिता से था।

हैमलेट का पागलपन देख कर उसकी माँ कुछ सहम कर कहने लगी—"हैमलेट ! मेरी बातों को सुनो ! व्यर्थ की बातें न करो ! तुम यह न भूलना कि तुम किससे बातें कर रहे हो।"

हैमलेट माँ की बातें सुन कर हँसने लगा। वह कहने लगा—"मैं बातें कर रहा हूँ डेनमार्क की माननीया रानी के साथ, जो अपने पति के विश्वासघातक भाई की पत्नी तथा इस अभागे की माँ हैं !"

हैमलेट ने अपने को ऐसी माँ के पुत्र होने के कारण अभागा बताया। रानी हैमलेट की इन बातों को सुन कर अपने को अपमानित समझने लगी। वह बोली—"बेटा ! यदि तुम मेरा अपमान करना चाहते हो तो मैं चली जाऊँ !"

रानी जाने लगी। हैमलेट ने न जाने क्यों उसका हाथ थाम लिया और उसे फिर से बैठा दिया। रानी हैमलेट की इस हरकत से बहुत ही डर गयी—न जाने उसका पागल बेटा क्या कर बैठे ! वह एकाएक डर कर चौंक पड़ी ! पालोनीयस, जो पर्दे के पीछे छिपा हुआ था, रानी की सहायता के लिए चिल्लाने लगा !

हैमलेट अचानक पर्दे के पीछे से मनुष्य का कण्ठ-स्वर सुन कर समझ गया कि वह अवश्य राजा क्लाडियस है ! उसने तुरन्त तलवार खींच ली और पर्दे के पीछे छिपे पालोनीयस के शरीर में घुसेड़ दी। आघात भयानक था। पालोनीयस उसी क्षण गिर पड़ा और साथ ही साथ उसकी मृत्यु हो गयी।

रानी हैमलेट को धिक्कारने लगी—"हैमलेट ! यह तुमने क्या किया। तुम इतने निर्दयी हो !"

अब हैमलेट अपनी माँ से कहने लगा कि उसकी यह निष्ठुरता उसकी माँ की निष्ठुरता के आगे अति नगण्य है। जो अपने पति की हत्या कर पति के विश्वासघातक भाई के साथ प्रेम कर सकती है उसकी उस निष्ठुरता से हैमलेट की यह निष्ठुरता क्या अधिक भयानक है ?

रानी के मन में अब सचमुच तीव्र अनुशोचना उत्पन्न हुई। उसी स्थान पर उसी समय हैमलेट के पिता का आत्मा पुनः दिखाई पड़ा हैमलेट उसे देखते ही घबड़ा उठा। उसने कातर हो कर उस आत्मा से पूछा, "आप फिर क्यों आये हैं ?"

मृत राजा का आत्मा बोला, "तुम अपनी प्रतिज्ञा को न भूलना। मैं उसीकी याद दिलाने आया हूँ ! देखो ! तुम्हारी माँ के मन में पश्चात्ताप उत्पन्न हुआ है। तुम उससे बातें करो, उसे सांत्वना दो। यदि ऐसा नहीं करते तो इस पश्चात्ताप के कारण उसकी मृत्यु भी हो सकती है।

आत्मा हैमलेट की आँखों के सामने से अंतर्हित हो गया।

रानी न तो उस आत्मा को देख सकी और न उसकी बातों को ही सुन सकी। उसने अनुमान किया कि यह एक पागल का प्रलाप है। उसने हैमलेट से पूछा, "हैमलेट तुम किससे बातें कर रहे हो ?"

हैमलेट बोला, "माँ मेरी बात मानो ! यह मेरे महान पिता का आत्मा था। उसका साक्षात्कार पाकर मैं अपने को भाग्यवान समझता हूँ। मैं जो बक रहा था वह एक पागल का प्रलाप नहीं था।"

ईश्वर के निकट क्षमा-प्रार्थना करने के लिए हैमलेट अपनी माँ से अनुरोध करने लगा, जो भी कुछ हो, अब हैमलेट के मन में भी घोर पश्चात्ताप उत्पन्न होने लगा। क्योंकि उसने एक ऐसी भूल की थी जो कभी भी सुधर नहीं सकती। उसने राजा समझ कर

अपनी प्रेमिका ओफेलिया के पिता पालोनीयस की हत्या कर दी। वह मन ही मन रोने लगा।

क्लाडियस चाहता था कि किसी भी प्रकार से हैमलेट का अंत कर दिया जाय। परंतु रानी गारट्रूड हैमलेट को अपने प्राणों से भी अधिक चाहती थी, इसलिए राजा उसी समय कुछ न कर सका। फिर भी, जब पालोनीयस की हत्या हैमलेट के हाथों से हो गयी तब वह रानी को समझाने लगा कि अब हैमलेट को कहीं दूर भेज देना चाहिये, नहीं तो सभी उसे हत्याकारी कह कर दंड देने को उतारू हो जायेंगे और इस प्रकार उस पर विपत्ति आ सकती है। रानी को यह युक्ति ठीक जँची। तब उसने हैमलेट को बाहर भेजने की अनुमति दी।

अब राजा क्लाडियस ने हैमलेट को निरापद करने के बहाने उसे बलपूर्वक एक जहाज में बैठा कर इंगलैंड भेज दिया। उसके साथ डेनमार्क की राजसभा के दो सभासद भी गये। उनके हाथ क्लाडियस ने एक पत्र लिख कर दिया कि इंगलैंड पहुँचते ही हैमलेट की हत्या कर दी जाय।

हैमलेट क्लाडियस के चरित्र से भली-भाँति परिचित था, इसलिए उसने फिर बुद्धिमानी से काम लिया। एक रात उसने चोरी से उस पत्र को पढ़ लिया तथा उस पर से अपने नाम को काट कर उस स्थान पर उन दोनों सभासदों के नाम लिख दिये!

संयोगवश उसी रात को उनके जहाज पर जल-दस्युओं का आक्रमण हुआ। हैमलेट के जहाज के रक्षकों तथा दस्युओं में खूब मार-काट मच गयी। हैमलेट भी नंगी तलवार लेकर दस्युओं के जहाज पर कूद पड़ा। दोनों दलों में घमासान लड़ाई चलती रही। हैमलेट के जहाज के रक्षकों ने जब देखा कि अपनी हार हो रही है तब वे जहाज ले कर भाग गये! हैमलेट दस्युओं के जहाज में ही छूट गया। दस्युओं ने हैमलेट का परिचय पा कर उसे डेनमार्क

के किसी बंदरगाह में उतार दिया। उन्होंने इसलिए ऐसा किया था कि आवश्यकता पड़ने पर राजकुमार उनकी सहायता करेगा।

हैमलेट जब राजप्रासाद को लौटा तब उसे एक ऐसा करुण दृश्य दृष्टिगत हुआ जिससे कि वह सचमुच पागल होने लगा। अब उसकी प्रेम-प्रतिमा ओफेलिया इस लोक में नहीं थी। यह उसी की अंतिम-क्रिया हो रही थी। हैमलेट ने देखा, ओफेलिया का भाई लेयर्टिस किसी की समाधि पर मिट्टी डाल रहा है। राजा, रानी तथा अन्य सभी सभासद वहाँ उपस्थित थे। हैमलेट फिर भी पहले समझ नहीं सका कि उस समाधि के नीचे उसकी प्रणय-प्रतिमा प्रियतमा की अनुपम देह पड़ी है। यह देह कभी हैमलेट के निकट स्वर्गीय संपद के समान प्रिय थी। परंतु जब रानी उस समाधि को फूलों से सजाने लगी और ओफेलिया का नाम लेकर आँसू बहाने लगी तब हैमलेट समझ गया कि उसकी प्रियतमा ओफेलिया अब सचमुच संसार में नहीं है। ओफेलिया का भाई लेयर्टिस भी दुःखी था। परंतु उसका दुःख उतना मर्मस्पर्शी नहीं था जितना कि हैमलेट का था। ओफेलिया के लिए हजारों लेयर्टिस का प्रेम भी हैमलेट के प्रेम के आगे तुच्छ था। शोक तथा पश्चात्ताप के कारण अब हैमलेट सचमुच पागल होने लगा।

ओफेलिया की मृत्यु के पीछे शोक से भरी एक दुःखद गाथा छिपी हुई थी। ओफेलिया का प्रेमिक राजकुमार हैमलेट जब पागल हो गया तब उसके अंतस्थल में पहली चोट पहुँची थी। जब उसके एकमात्र अवलंबन पिता का भी दुःखद अंत हो गया तब ओफेलिया की चिंता-शक्ति भी समाप्त हो गयी। वह दिन भर फूल चुना करती थी और माला गूँथती थी। कभी कभी राज-प्रासाद में जा कर महिलाओं को फूल दे कर कहती थी कि वे उसके पिता की अंतिम-क्रिया के फूल हैं।

ओफेलिया के घर के समीप एक नदी थी। उसी नदी के किनारे वीलो नाम के एक फूल का पेड़ था। एक दिन वह वहाँ उस पेड़ से फूल लाने गयी। उसी समय वह असावधानी से नदी में गिर पड़ी और उसकी मृत्यु हो गयी। उसका भाई लेयर्टिस उसकी मृत्यु के उपरांत घर लौटा।

लेयर्टिस पहले से हो पिता की मृत्यु से कातर था अब ओफेलिया की मृत्यु से उसके मन में जो शोक उत्पन्न हुआ वह उसके लिए असहनीय था। वह मन ही मन हैमलेट पर क्रुद्ध हो उठा। उसकी सारी प्रतिहिंसा हैमलेट पर केंद्रित हुई। यह क्लाडियस के लिए एक अच्छा अवसर था। अब वह स्वयं लेयर्टिस को हैमलेट के विरुद्ध उत्तेजित करने लगा। फल यह हुआ कि लेयर्टिस हैमलेट से तलवार की बाजी लड़ने के लिए उतारू हो गया। उनकी तलवार-बाजी की तिथि भी निश्चित हो गयी। निश्चित दिवस पर राजा, रानी तथा सभी सभासदों के सम्मुख उनका तलवार-बाजी आरंभ हुई। दोनों ही तलवार चलाने में समान पटु थे। उपस्थित दर्शकों में से कोई-कोई सोचने लगे कि हैमलेट विजयी होगा और कोई-कोई सोचने लगे, लेयर्टिस का जीत होगा।

आपसी तलवार-बाजी का उद्देश्य होता है केवल मात्र तलवार चलाने का कौशल दिखाना। उनकी तलवारों में धार नहीं बँधी रहती। परन्तु इस तलवार-बाजी में लेयर्टिस राजा के बहकावे में आकर तेज धारवाली तलवार लेकर मैदान में उतरा था। केवल यही नहीं लेयर्टिस ने अपनी तलवार की नोक को भी जहरीला बना लिया था।

प्रारंभ में हैमलेट जीत रहा था। यह देख कर क्लाडियस मन ही मन जलने लगा परंतु उसे बनावटी प्रसन्नता दिखानी ही पड़ी। लेयर्टिस और हैमलेट दोनों ही तलवार के धनी थे। घात पाकर लेयर्टिस ने हैमलेट पर एक आघात किया। पलक मारते ही

हैमलेट ने दूने वेग से उस आघात को लौटा दिया। लेयर्टिस के हाथ से तलवार छूट गयी। इसी धपले में दोनों की तलवारों की अदला-बदली हो गयी। हैमलेट लेयर्टिस की तलवार पा गया और उसने उसी के द्वारा लेयर्टिस पर आघात किया।

इसी बीच रानी चिल्ला उठी—'जहर! जहर!' क्लाडियस ने हैमलेट को मारने के लिए एक जहर मिला हुआ शरबत बना रखा था। रानी यह नहीं जानती थी इसलिए वह उसी शरबत को पी लेती है।

लेयर्टिस ने जब देखा कि उनकी तलवारों की अदला-बदली हो गयी और वह स्वयं अपनी तलवार से घायल हो गया तब उसके मन में पश्चात्ताप जागृत हुआ। उसने अकपट हो कर हैमलेट के सामने समस्त गुप्त चक्रांत को प्रकट कर कहा। वह यह भी कहते न भूला कि उस चक्रांत का नायक राजा क्लाडियस ही है तथा वह उसी के बहकावे में आकर हैमलेट से लड़ने को तैयार हुआ था। उसने हैमलेट से कहा—"ईश्वर ने मुझे उचित दंड दिया है। मैं स्वयं अपनी तलवार से आहत हो कर मर रहा हूँ। तुम्हारे शरीर में भी यह भयानक विष प्रविष्ट हुआ है—तुम भी नहीं बच सकते।"

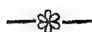
लेयर्टिस हैमलेट से क्षमा माँग कर गिर पड़ा।

हैमलेट जब समझ गया कि उसे भी मरना होगा तब उसने कुछ भी देर न कर क्लाडियस पर आक्रमण कर उसका प्राणांत कर दिया। उसने विश्वासघातक क्लाडियस को मार कर पिता के प्रेतात्मा को दिये वचन का पालन किया।

हैमलेट के शरीर में विष अपना प्रभाव विस्तार करने लगा। उसने अपने मित्र होरेशियो से मरते समय कहा—"भाई! देशवासी संभवतः मुझे न समझ सकेंगे। वे संभवतः मेरी परि-

स्थिति से परिचित नहीं हैं। तुम उनसे सब-कुछ खोल कर कहना। उनको समझा देना कि उनके प्रिय राजकुमार हैमलेट ने क्यों ऐसा किया है।

हैमलेट गिर पड़ा। उसके अमूल्य कर्ममय जीवन का अंत अदृष्ट ने हँस कर कर दिया।



एक ग्रीष्म-रात्रि का सपना

कभी एथेन्स नगर में एक अद्भूत क़ानून प्रचलित था कि यदि कोई लड़की अपने पिता के मनोनीत लड़के से विवाह नहीं करती तो पिता देश के प्रचलित क़ानून के द्वारा उस लड़की को कारागार में भेज सकता था। परन्तु बहुत कम पिता इस नियम को व्यवहार में लाते थे। परन्तु बूढ़ा इजियस बहुत ही झक्की था। न जाने उस पर कौन सी सनक सवार हुई, वह सचमुच एथेन्स के शासक थिसिउस के निकट अपनी लड़की के नाम अभियोग लाया कि उसकी लड़की हार्मिया डेमेट्रियस नामक एक नेक और अच्छे घर के लड़के के साथ विवाह करना नहीं चाहती क्योंकि वह लिसेंडर नाम के एक दूसरे युवक से प्रेम करती है इसलिए उस ढीठ लड़की को प्राणदण्ड से दंडित किया जाय।

हार्मिया न्यायालय में उपस्थित की गया। वहाँ उसने केवल अपने समर्थन में कहा कि डेमेट्रियस बहुत पहले से ही उसकी सखी हेलेना के प्रेम-पाश में बँध चुका है तथा हेलेना भी डेमेट्रियस से प्रेम करती है ऐसी परिस्थिति में क्या उसका विवाह डेमेट्रियस से कर देना अनुचित नहीं होगा? परंतु बूढ़े इजियस ने अपनी लड़की की यह युक्ति नहीं मानी।

थिसिउस बड़ा ही दयालु शासक था। वह वास्तव में हार्मिया को छोड़ देना चाहता था। परन्तु वह एक देश का शासक था। उसके लिए देश के प्रचलित नियम के साथ मनमाना काम

करना भयानक अन्याय था। इसलिए वह किसी भी नियम का विरोध नहीं कर पाता था।

फिर भी उसने हार्मिया को भली-भाँति सोच लेने के लिए चार दिनों का अवसर दिया। यदि उस अवधि के बाद भी हार्मिया डेमेट्रियस से विवाह करना नहीं चाहती तो उसका प्राण दण्ड निश्चित है।

हार्मिया विचार-सभा समाप्त होने पर अपने प्रणयी लिसेंडर के पास गयी, उसने उसे सारा वृत्तांत खोल कर कहा। लिसेंडर ने यह सुन कर कहा कि एथेन्स नगर के बाहर उसकी एक चाची रहती है। यदि हार्मिया रात के अंधकार में वहाँ भाग चलती है तो एथेन्स का नियम उस पर प्रयोज्य नहीं हो सकता और वे वहाँ निर्भय हो कर विवाह कर सकते हैं। क्यों कि वह स्थान एथेन्स के शासनाधिकार के बाहर है। लिसेंडर की यह युक्ति हार्मिया को ठीक जँची। वह एथेन्स नगर के बाहर एक घने वन में लिसेंडर से मिलने को सम्मत हुई।

हार्मिया ने अपनी सखी हेलेना के निकट अपने भाग चलने का सारा वृत्तांत पहले से ही बता दिया। हेलेना ने भी यह समाचार डेमेट्रियस तक पहुँचा दिया हेलेना जानती थी कि डेमेट्रियस अवश्य हार्मिया को खोजते-खोजते उस वन में जायगा। इससे डेमेट्रियस की सारी कलई खुल जायगी और हेलेना अपने प्रणयी का सारा रहस्य लोगों के सम्मुख प्रकट कर देगी।

हार्मिया जिस वन में लिसेंडर से मिलने वाली थी वह वन किन्नरों का था। किन्नर एक प्रकार के अद्भुत शक्तिशाली देवता थे। वे अपनी जादू-विद्या से अद्भुत से अद्भुत काम कर सकते थे। यह वन किन्नरों का अतिशय प्रिय था। वे अवकाश पाते ही यहाँ सैर करने चले आया करते थे। किन्नरों के राजा ओबेरन अपनी रानी टाइटानिया तथा अनेक अन्य अनुचरों के साथ इस

वन में प्रायः निशा-भोज के लिए आधीरात को आया करता था और सभी किन्नर एकत्र हो कर हँसते-गाते, खाते-पीते और अवशिष्ट रात को इस प्रकार बिता देते थे।

परन्तु उन दिनों राजा ओवेरन तथा रानी टाइटानिया में न जाने क्यों मनमुटाव चल रहा था। चाँदनी रात की अनुपम आभा से जब वन की शोभा रुपहरी हो उठती थी तब भी वे न जाने क्यों अकारण आपस में झगड़ते थे। उन्हें झगड़ते देख सभी किन्नर लज्जित हो कर लाल हो जाते थे और चुपके से 'ओक' के फलों में छिप जाते।

उनके उस झगड़े का कारण था एक लड़का। रानी टाइटानिया की एक सखी थी। जब उसकी सखी मर गयी तब टाइटानिया ने उसके लड़के को अपने पास रख लिया और उसके पालन-पोषण का भार अपने ऊपर लिया। जब वह लड़का कुछ बड़ा हुआ तब ओवेरन ने टाइटानिया से वह लड़का माँगा। परन्तु रानी उस लड़के को अपने प्राणों से भी अधिक चाहती थी। उसने राजा के प्रस्ताव को अस्वीकृत कर के कहा कि यदि उसे सारा किन्नर-राज्य भी मिल जाय तो वह उसके बदले में उस लड़के को नहीं देगी।

संयोगवश राजा और रानी का झगड़ा उसी रात को उसी वन में आरंभ हुआ, जिस रात को हार्मिया लिसेंडर से वहाँ मिलनेवाली थी।

राजा ओवेरन रानी टाइटानिया की ढिठाई पर बहुत क्रुद्ध हुआ। उसने भोर होने के पहले ही रानी को इस अपराध के लिए दण्ड देने का निश्चय किया। राजा ने इस विषय पर विचार-विमर्श करने के लिए अपने मंत्री पाक को बुलाया। पाक बहुत ही चतुर मंत्री था। उसकी बुद्धि ठीक समय पर ठीक काम करने-वाली थी। साथ ही साथ वह बहुत ही विनोदी और रसिक था। कोई विशेष राज-कार्य न रहने पर उसका सारा समय हँसी

दिल्लगी में बीतता था। लोगों को हैरत में डालने का कौशल वह खूब जानता था। आसपास के गाँवों में वह ऊधम मचाया फिरता था। यदि वह कभी किसी अहीरिन की अल्हड़ता पर रीझ जाता था तो वह उसे खूब छकाता था। वह चुपके से उसकी मटकी में छुप जाता था और वहाँ ऐसा मतवाला होकर नाचता था कि लाख मथने पर भी मक्खन नहीं निकलता था। इससे बेचारी बड़े अचंभे में पड़ जाती थी। कभी-कभी वह किसी खेतिहर किसान के पीछे पड़ जाता था और उस बेचारे की भट्ठी में घुस कर उसके ताँबे के बने शराब चुआने के बरतन में ऐसा चमत्कार दिखाता था कि बेचारे की बनी-बनायी शराब खराब हो जाती थी। जब किसी दावत पर उसकी दृष्टि पड़ जाती तब उसका मसखरापन और भी मनोरंजक बन जाता था। वह बेचारी सीधी-सादी मालकिन की शराब की प्याली में केंकड़ा बन कर छिप जाता था और ज्यों ही बेचारी बूढ़ी मालकिन शराब पीने के लिए प्याली को होंठों से लगाती त्यों ही वह केंकड़ा उसके होंठों को पकड़ कर झूलने लगता था। बेचारी के हाथ से प्याली गिर जाती थी और उसका कपड़ा-लत्ता शराब से तराबोर हो जाता था। थोड़ी देर बाद जब वह बूढ़ी कुर्सी पर बैठने गयी तब पाक महाशय ने उसकी कुर्सी हटा ली। अब क्या देखना था! बेचारी जमीन पर धम्म से गिर पड़ी। पाक बड़ा ही मजाकिया था।

किन्नरों के राजा ओबेरन ने पाक को एक फूल लाने का आदेश किया। उस अद्भुत फूल का नाम था—'अंगड़ाई-का प्रेम'। उस फूल का रस किसी सोये हुए मनुष्य की आँखों में डालने से वह जाग कर जिसे प्रथम देखता है उससे ही प्रेम करने लगता है चाहे वह सिंह हो अथवा सियार, चाहे भालू हो अथवा बन्दर। राजा ओबेरन ने पाक से कहा कि उस फूल का रस रानी टाइटानिया की आँखों में डाल दे। राजा ओबेरन फूल के

रस के प्रभाव को नष्ट करनेवाला जादू भी जानता था, परंतु उसने अपने मन में निश्चय कर लिया कि वह तब तक उस जादू का प्रयोग नहीं करेगा जब तक कि रानी उस लड़के को न देती हो।

पाक शुरू से ही नटखट था। भला वह इस नटखटी के सु-अवसर को कैसे व्यर्थ जाने देता।

राजा ओवेरन वन के एक स्थान में पाक के लौट आने की प्रतीक्षा करने लगा। इतने में हेलेना और डेमेट्रियस उस वन में आये। ओवेरन छिप कर दोनों की बातें सुनने लगा। हेलेना डेमेट्रियस का पीछा करती हुई उस वन में आयी थी। अब इसलिए डेमेट्रियस उसे डराने-धमकाने लगा। हेलेना ने उत्तर दिया—"तुम पहले मुझसे प्रेम करते थे परंतु अब हार्मिया से क्यों प्रेम करने लगे हो? वह तो दूसरे की प्रेमिका है।"

परंतु डेमेट्रियस हेलेना के इतने कहने पर भी शांत न हुआ। वह हेलेना को जंगली जानवरों के बीच छोड़ कर हार्मिया के अन्वेषण में चला गया। किंतु हेलेना भी छोड़नेवाली न थी। वह डेमेट्रियस का अनुसरण करती ही गयी।

राजा ओवेरन सब कुछ देख रहा था। वह वास्तव में सच्चे प्रेमिकों का मित्र था। हेलेना की दुर्दशा से उसके मन में दया आयी। पाक जब फूल लेकर आया तब ओवेरन ने तुरंत उसे कुछ फूल देकर कहा—"जाओ, सोये हुए डेमेट्रियस की आँखों में इन फूलों का रस डाल देना ताकि वह आँखें खोलते ही हेलेना को देख कर उससे प्रेम करने लगे।"

डेमेट्रियस को पहचानने के लिए ओवेरन ने पाक से कहा कि डेमेट्रियस एथेन्सवासियों का पोशाक पहना हुआ है। ओवरन ने पाक को बार-बार सावधान कर दिया कि वह डेमेट्रियस की आँखों में फूल का रस बड़ी सावधानी के साथ छोड़े; ताकि वह जाग कर केवल हेलेना को ही देखे। पाक चला गया।

ओबेरन भी फूल लेकर रानी टाइटानिया की खोज में किन्नरियों के कुंज में गया। वहाँ टाइटानिया एक साँप की चमकीली और रंग-बिरंगी केंचुली में सो रही थी। उस समय कोई दूसरी किन्नरी वहाँ न थी। वे रानी के आदेश के अनुसार जहाँ-तहाँ चली गयी थीं। राजा ओबेरन ने अवसर पाकर रानी की आँखों में फूल का रस डाल दिया और कहा—"जाग कर जिसे प्रथम देखोगी उसीसे प्रेम करोगी।"

इधर हार्मिया भी घर से भाग कर वन में चली आयी थी। वह लिसेंडर के साथ उसकी चाची के घर जानेवाली थी। हार्मिया और लिसेंडर दोनों लंबी यात्रा के बाद थक कर उसी वन में एक पेड़ के नीचे सो गये।

पाक डेमेट्रियस को खोजते-खोजते वहाँ आ पहुँचा और लिसेंडर को सोया हुआ देख कर समझा कि यही डेमेट्रियस है क्योंकि उसके पहनावे भी एथेन्सवासियों के से थे। पाक ने उस फूल का रस लिसेंडर की आँखों में छोड़ा। संयोगवश हेलेना डेमेट्रियस को खोजते-खोजते वहाँ आ पहुँची। ज्यों ही हेलेना लिसेंडर के सामने आयी त्यों ही लिसेंडर की नींद टूटी। उसने हेलेना को देखा और वह उसी क्षण हेलेना के प्रेम-पाश में हो गया।

अब लिसेंडर हेलेना के निकट अपना प्रेम जताने लगा। हेलेना लिसेंडर के व्यवहार से बहुत ही विस्मित हुई। क्योंकि वह जानती थी कि लिसेंडर हार्मिया से प्रेम करता है। हेलेना ने पहले-पहल अपने मन में अनुमान किया कि लिसेंडर उससे दिल्लगी कर रहा है। परंतु जब वह जान गयी कि यह साधारण दिल्लगी नहीं है तब वह बहुत लज्जित और क्रुद्ध हो उठी। उसने इस प्रकार अपने को अकारण अपमानित होते देख कर लिसेंडर की खूब भर्त्सना की। किंतु इन भर्त्सनाओं का कुछ भी प्रभाव लिसेंडर पर नहीं पड़ा। वह तो फूल के प्रभाव से सचमुच

हेलेना के प्रेम में पागल हो उठा था। वह हेलेना को तरह-तरह की प्रेम भरी मीठी-मीठी बातें सुनाने लगा। तब हेलेना निरुपाय हो कर उससे अपनी जान छुड़ाने के लिए वहाँ से भाग चली। परंतु लिसेंडर अब उस फूल के प्रभाव से उसे छोड़नेवाला कहाँ था। वह भी हेलेना के पीछे-पीछे दौड़ा। यह जो घटना घटी इसका पता हार्मिया को न था क्योंकि वह थकावट के मारे खूब गहरी नींद सो रही थी।

हार्मिया जब जागी तब वह लिसेंडर को न देख कर बहुत विस्मित हुई और घबड़ायी। वह बेचारी बहुत ही डर गयी क्योंकि अब वह उतने बड़े वन में अकेली थी। वह व्याकुल होकर लिसें-डर की खोज में इधर-उधर भटकने लगी।

उधर डेमेट्रियस किसी प्रकार से हेलेना से अपना पिंड छुड़ा कर एक तरफ भाग निकला। वह भी दौड़ते-दौडते थक गया। अब वह कुछ सुस्ताने के लिए एक पेड़ के नीचे सो गया। राजा ओबेरन उसी रास्ते से कहीं जा रहा था। वह डेमेट्रियस को देख कर समझ गया कि पाक ने भूल से फूल का रस किसी दूसरे की आँखों में छोड़ा है। राजा ओबेरन ने पाक की गलती को सुधारने के लिए स्वयं डेमेट्रियस की आँखों में उस फूल का रस छोड़ा। बेचारी हेलेना कहीं पास ही थी। डेमेट्रियस ने जाग कर पहले ही उसे देखा। अब डेमेट्रियस भी पागल होकर हेलेना के निकट प्रेम निवेदन करने लगा।

इसी बीच हार्मिया वहाँ आ पहुँची। उसने आश्चर्यचकित हो कर देखा कि लिसेंडर और डेमेट्रियस दोनों हेलेना के निकट प्रणय निवेदन कर रहे हैं। पहले-पहल हार्मिया ने सोचा कि वे हेलेना से मजाक कर रहे हैं। परंतु बाद में वह समझ गयी कि मजाक नहीं बल्कि सचमुच ही वे हेलेना से प्रेम की प्रार्थना कर रहे हैं। अब धीरे-धीरे दोनों सखियों में कहा-सुनी होने लगी।

लिसेंडर और डेमेट्रियस हेलेना की बाजी रख कर लड़ने के लिए जंगल के भीतर चले गये।

राजा ओबेरन परिस्थिति बिगड़ी हुई देख कर चिंतित हो उठा। उसने पाक को उसकी गलती के कारण डाँटता हुआ कहा, "लिसें-डर और डेमेट्रियस आपस में लड़ने के लिए वन के भीतर कोई खुला स्थान ढूँढ़ रहे हैं। इसलिए तुम अभी वन में घना कुहरा फैला दो ताकि वे एक दूसरे को देख न सकें। फिर एक के कंठ-स्वर की नकल कर दूसरे को भला-बुरा कह कर ललकारता हुआ दूर ले जाओ। इस प्रकार से दोनों को दो दिशाओं में ले जाओ। जब दोनों हवा का पीछा करते-करते थक जायेंगे तब वे अपने से सो जायेंगे। जब वे सो जायेंगे तब इस फूल का रस लिसेंडर की आँखों में छोड़ देना। इस फूल के रस के प्रभाव से लिसेंडर पुनः हार्मिया से प्रेम करने लगेगा। इस प्रकार फिर दोनों सखियाँ अपने-अपने प्रेमास्पदों को वापस पायेंगी तब वे समझेंगी कि सारी घटना एक सपना मात्र थी।"

पाक अपने प्रभु से फूल ले कर चला गया। ओबेरन भी टाइटानिया को देखने के लिए चला गया कि वह किसके प्रेम में फँसी है!

ओबेरन टाइटानिया के कुंज में पहुँचा। टाइटानिया उस समय सो रही थी। ओबेरन ने देखा कि उसी कुंज के पास एक थकामाँदा चरवाहा सो रहा है। अब ओबेरन को एक अच्छा मजाक सूझा। उसने मन में सोचा कि यदि इस गँवार चरवाहे को टाइटानिया का प्रेमी बना दिया जाय तो बहुत ही मजा होगा। उसने उस मजाक को और भी सर्वांगसुंदर बनाने के लिए उस चरवाहे की गरदन पर एक गदहे का मुंड बैठा दिया।

इस मस्तक-परिवर्तन के कारण बेचारे की नींद भाग गयी। वह उठ कर टाइटानिया के कुंज में जा कर उपस्थित हुआ।

इससे टाइटानिया भी जाग गयी। उसने आँखें खोलते ही सर्व-प्रथम उस अद्भुत गदहे के मस्तकवाले चरवाहे को देखा और उस अद्भुत फूल के प्रभाव से वह उस अद्भुत जीव से प्रेम करने लगी। टाइटानिया ने उसे संबोधित कर प्रेमभरे स्वर में कहा, "आप स्वर्ग के रहनेवाले देवदूत हैं। आप बहुत अच्छे हैं। आप रूप की खान तथा गुण के भंडार हैं।"

बेचारा चरवाहा टाइटानिया को ऐसा कहते देख कर डर गया। वह घबड़ा कर कहने लगा, "श्रीमती जी। अभी किसी सूरत से वन के बाहर जा सकूँ तो खैरियत है।"

टाइटानिया मानो यह सुन कर रो पड़ी, कहने लगी, "प्राण-नाथ ! आप ऐसी बातें न कीजिये ! मैं एक किन्नरी हूँ और आपके प्रेम में बावरी हूँ ! आप मुझे बचाइये ! मेरे साथ चलिये ! किन्न-रियों के कुंज में आपकी सेवा में कोई त्रुटि नहीं होगी।"

टाइटानिया ने उस चरवाहे की सेवा के लिए दासियाँ नियुक्त कीं। बेचारा चरवाहा प्रेम के उस दौड़ान से बहुत ही घबड़ा उठा। परन्तु वह कर ही क्या सकता था। किन्नरियाँ उस चरवाहे के कहने पर उसके माथे में गुदगुदी देने लगीं। टाइटानिया भी स्वयं उसके आदर-सत्कार के लिए तत्पर हो उठी। वह उस चर-वाहे से बार-बार पूछने लगी कि वह क्या खायेगा !

टाइटानिया की खातिरदारी से बेचारा नाकों दम हो गया। अंत तक उसे कहना पड़ा, "श्रीमती जी ! मैं बहुत थकामाँदा हूँ मुझे नींद आ रही है। कृपा कर थोड़ी देर तक सोने दीजिये !"

बेचारा चरवाहा सो गया। टाइटानिया भी प्रेम से उसके गले में बाहें डाल कर पास ही सो गयी !

इतने में किन्नरों का राजा ओबेरन वहाँ पहुँचा। अब उसे हँसने का अच्छा मौका मिल गया। वह खूब हँसने लगा। वह टाइटानिया को बार-बार गदहे की महबूबा कह कर चिढ़ाने लगा।

बेचारी टाइटानिया भी अपने गर्दभ-प्रेम को कैसे अस्वीकार कर सकती थी, क्योंकि उस समय भी गदहे की गरदन उसकी बाहों में थी। केवल यही नहीं टाइटानिया ने उस गर्दभ-मुंड को फूलों से सजाया भी था।

टाइटानिया अपने किये पर बहुत ही लज्जित हुई और वह लड़का राजा को देने के लिए तैयार हो गयी। जब ओबेरन का मनोरथ सिद्ध हुआ तब उसने रानी की आँखों में दूसरे फूल का रस डाल दिया जिससे रानी का स्वाभाविक ज्ञान लौट आया। रानी अपने पिछले कामों के लिए बहुत लज्जित हुई और उस गदहे के मुंडवाले अद्भुत जीव से घृणा करने लगी। ओबेरन ने उस चरवाहे को उसका अपना मस्तक लौटा दिया। बेचारा खूब सो रहा था इस कारण अपना मस्तक-परिवर्तन जान न सका।

टाइटानिया और ओबेरन में पुनः प्रणय स्थापित हुआ। ओबेरन ने अपनी रानी से उस वन में आये हुए प्रेमियों के बारे में कहा तथा चल कर उन्हें देखने के लिए अनुरोध किया। रानी चलने के लिए तैयार हो गयी।

टाइटानिया ओबेरन के साथ वहाँ गयी जहाँ लिसेंडर आदि चारों मानव प्रणयी सो रहे थे। पाक महाशय ने अपनी गलती सुधारने के लिए दूसरे फूल का रस लिसेंडर की आँखों में डाल दिया। जब वे जागे तब लिसेंडर हार्मिया से प्रेम करने लगा और डेमेट्रियस हेलेना से। हार्मिया और हेलेना इस अद्भुत परिवर्तन से बहुत ही विस्मित हुईं। पिछली रात की अद्भुत घटना उनके निकट सपना-सी जान पड़ने लगी। दोनों दंपतियों में अकपट मित्रता स्थापित हुई।

उधर बूढ़ा इजियस भी अपनी भागी हुई लड़की को खोजते खोजते उस वन में आ पहुँचा। परन्तु जब बूढ़े ने डेमेट्रियस के मुँह से सुना कि डेमेट्रियस हार्मिया से नहीं बल्कि हेलेना से विवाह

करेगा। तब वह बूढ़ा लिसेंडर के साथ हार्मिया का विवाह कर देने के लिए राजी हो गया।

दोनों जोड़ियों के उस सुखमय मिलन से किन्नरों के राजा और रानी बहुत ही आनन्दित हुए। उन्होंने आपस में यह निश्चय किया कि जिस दिन दोनों जोड़ियों का विवाह होगा उस दिन किन्नरों के राज्य में भी खुशियाँ मनायी जायेंगी।



जाड़े की कहानी

सिसिली का राजा लिवन्टेस बहुत ही सुखी था। रानी हार्मियन उससे बहुत ही प्रेम करती थी। हार्मियन के प्रेम से अब लिवन्टेस का कोई अभाव न था—कोई भी अभिलाषा उसकी अपूर्ण नहीं थी। केवल कभी-कभी बोहेमिया के राजा पालिक्सनेस को देखने के लिए उसका मन व्याकुल हो उठता था। पालिक्सनेस लिवन्टेस के बचपन का मित्र तथा सहपाठी था। वे एक साथ पालित-पोषित हुए थे। परंतु जब उनके पिता गुजर गये और उन्हें अपने-अपने राज्य के भार सँभालने पड़े तब वे सदा के लिए एक दूसरे से पृथक् हो गये। उसके बाद फिर दोनों एक दूसरे से मिल न सके क्योंकि वे अपनी-अपनी राजधानी में जा कर बस गये थे। फिर भी दोनों मित्रों में पत्रों तथा उपहार-उपायनों का आदान-प्रदान सदा ही चलता रहा।

सिसिली का राजा लिवन्टेस बार-बार अपने मित्र के निकट एक बार सिसिली में आने के लिए निमंत्रण भेजा करता था। बार-बार अपने मित्र से निमंत्रण पा कर पालिक्सनेस ने कम से कम एकबार अपने मित्र की राजधानी में जाने का निश्चय किया।

बहुत दिनों बाद बोहेमिया का राजा अपने मित्र से मिलने के लिए सिसिली के राजभवन में निमंत्रित हो कर आया। दोनों मित्र एक दूसरे से मिल कर बहुत प्रसन्न हुए। लिवन्टेस ने अपने मित्र का परिचय अपनी पत्नी हार्मियन से कराया।

हार्मियन भी अपने पति के बचपन के साथी से मिल कर बहुत ही आनन्दित हुई। दोनों मित्र बीते दिनों की सुनहरी याद में अपना समय बिताने लगे।

कुछ दिनों बाद जब पालिक्सनेस के स्वदेश लौटने का समय आया तब लिवन्टेस उसे कुछ दिन और ठहरने के लिए अनुरोध करने लगा। किन्तु पालिक्सनेस सम्मत न हुआ। क्योंकि उसे अपने राज्य के कामों को भी देखना था। जब लिवन्टेस हार गया तब उसकी पत्नी हार्मियन ने पालिक्सनेस को कुछ दिन और रह जाने के लिए अनुरोध किया। हार्मियन वास्तव में बहुत ही मधुर-भाषिणी थी। उसकी बातों में वह जादू था जो सभी के मन को मोह लेता था। पालिक्सनेस रानी की बातों को टाल न सका। वह कुछ दिन और सिसिली में रह गया।

अदृष्ट का संयोग ऐसा था कि इसी तुच्छ कारण से लिवन्टेस के मन में संशय उत्पन्न हो गया। वह भली-भाँति पालिक्सनेस को जानता था, यह वह भी जानता था कि पालिक्सनेस के समान सुशील और चरित्रवान व्यक्ति शायद ही कोई दूसरा हो। फिर अपनी पत्नी के चरित्र पर भी उसका दृढ़ विश्वास था। वह यह भली भाँति जानता था कि उसकी पत्नी कदापि असती नहीं हो सकती। फिर भी न जाने क्यों लिवन्टेस के मनोभाव में परिवर्तन आ गया। यह परिवर्तन बहुत ही आकस्मिक और भयानक था। सहसा उसके समान एक दयालु व्यक्ति क्रूर और निष्ठुर हो गया। उसने कैमिलो नाम के एक सभासद को पालिक्सनेस की हत्या के लिए नियुक्त किया। परंतु कैमिलो वास्तविक सज्जन था। उसने लिवन्टेस की बातों में आ कर पालिक्सनेस की हत्या नहीं की बल्कि पालिक्सनेस के समीप सब कुछ खोल कर कह दिया। तत्पश्चात् पालिक्सनेस और कैमिलो गुप्त रूप से सिसिली छोड़ कर भाग गये और बोहेमिया पहुँचे। बोहेमिया

पालिक्सनेस का राज्य था। वहाँ वे दोनों बड़ी मित्रता से रहने लगे।

पालिक्सनेस के भाग जाने से लिवन्टेस का संदेह और भी बढ़ गया। उसने एक दिन अंतःपुर में प्रवेश कर के देखा कि रानी हार्मियन अपने पुत्र मेमिलस से बातें कर रही है। मेमिलस उस समय बहुत छोटा था। राजा पहले से ही रानी पर कुपित था, उसने मेमिलस को किसी दूसरे स्थान में भेजने का आदेश दे कर रानी को कारागार में डाल दिया।

मेमिलस अपनी माँ को बहुत चाहता था। वह अपनी माँ को लांछित और अपमानित देख कर बहुत ही दुःखी हुआ। बेचारा बालक अपनी मृत्यु का प्रतीक्षा करने लगा, जो उसे शांति दे सकती थी।

लिवन्टेस ने रानी को कारागार में डालने के बाद क्रियोमिनिस और डियोन नाम के दो सम्मानित व्यक्तियों को डेलफस नामक स्थान में जाकर एपोलो के मन्दिर से देववाणी लाने के लिए भेजा कि रानी सचमुच दोषी है या निर्दोष! एपोलो साक्षात् चैतन्यमय देवता थे। उनकी वाणी कभी मिथ्या नहीं होती थी।

कारागार में रानी हार्मियन को एक लड़की हुई। यह समाचार पाकर रानी की एक सखी पोलिना ने रानी की दासी एमिलिया के पास कहला भेजा कि वह उस लड़की के पालन-पोषण का भार स्वयं लेना चाहती है। हार्मियन अपनी सखी की इच्छा को सुन कर बहुत ही सुखी हुई। उसने सानंद अपनी शिशु-कन्या का भार अपनी सखी पोलिना के हाथ सौंप दिया।

पोलिना उस कन्या को लेकर राजा लिवन्टेस के पास गयी और हार्मियन के सतीत्व के बारे में बहुत-कुछ कह कर राजा को समझाने-बुझाने लगी कि राजा ने रानी के साथ ऐसा व्यवहार कर सचमुच अन्याय किया है। पोलिना ने राजा के चरणों में

उस लड़की को रख दिया और राजा से उस लड़की के प्रति कृपालु होने के लिए कहा। लिवन्टेस इस पर और भी क्रोधित हो उठा। उसने पोलिना के पति एन्टिगोनस से कहा कि वह अपनी पत्नी को वहाँ से ले जाये। पोलिना राजा के समीप उस लड़की को छोड़ कर चली गयी। हो सकता था, उस छोटी लड़की को देख कर राजा के मन में दया उत्पन्न हो। परंतु वैसा न हुआ। राजा का हृदय नहीं पसीजा। राजा ने एन्टिगोनस को आदेश दिया कि वह उस शिशु कन्या को ले जा कर समुद्र के किनारे छोड़ आये जिससे वह अपने आप मर जाय।

उधर राजा लिवन्टेस ने रानी हार्मियन का विचार राज-सभा में सर्वसाधारण के सम्मुख करना चाहा। इसी बीच क्लियोमिनिस और डियोन एपोलो के मंदिर से दैववाणी मुहरबंद लिफाफे में भर कर ले आये। लिवन्टेस के आदेशानुसार वे लोगों के सम्मुख दैववाणी पढ़ने लगे। उस दैववाणी में लिखित था, "हार्मियन निर्दोष है! पालिक्सनेस पर भी कोई कलंक नहीं लग सकता। कैमिलो राजा का अनुगत सेवक है। लिवन्टेस का मन संशययुक्त है तथा वह स्वयं अत्याचारी है। जो खो गया यदि वह न मिला तो राजा का वंश-नाश होगा।"

राजा ने उस दैववाणी पर विश्वास नहीं किया। उसने सोचा कि यह रानी के पक्षवालों का षड़यंत्र है। उसने विचारपति से विचार आरंभ करने के लिए कहा। उसी समय विचार-सभा में एक दूत ने आकर संदेश दिया कि राजकुमार मेमिलस अपनी माँ की दुर्दशा को सह न सका और इस संसार से सिधार गया।

राजकुमार के मृत्यु-संवाद से सभी दुःखित हुए। रानी तो सुनते ही मूर्छित होकर गिर पड़ी। राजा का कठोर हृदय भी उस दुःखित समाचार से रो उठा। उसने रानी को विचार-सभा से ले जाने का आदेश दिया। पोलिना रानी को साथ लिये चली

गयी। थोड़ी देर बाद पोलिना लौट आयी और राजा से कहने लगी कि रानी की भी मृत्यु हो गयी है।

अब राजा लिवन्टेस के हृदय में पश्चात्ताप होने लगा। अब उसे विश्वास हो गया कि हार्मियन सचमुच निर्दोष थी। अब उसका विश्वास दैववाणी पर दृढ़ हुआ।

दैववाणी के अंत में लिखित था, 'जो खो गया है यदि वह न मिला तो राजा का वंश-नाश होगा।' राजा समझ गया कि वह वाक्यांश उसकी शिशु-पुत्री को उद्देश कर लिखित था। इसलिए उसने पुत्री को ढूँढ़ निकालने के लिए चारों तरफ चरों को भेजा। वह अपनी पुत्री के विनिमय में अपने समस्त राज्य तक को देने के लिए तैयार हो गया। उसी क्षण से लिवन्टेस का जीवन दुःखों और पश्चात्तापों से पूर्ण हो उठा।

इधर लिवन्टेस का अनुचर एन्टिगोनस जिस जहाज में बैठ कर राजकुमारी को लिए जा रहा था वह भयानक तूफान के कारण वाध्य होकर बोहेमिया-राज्य के समुद्र-किनारे में जाकर लगा। एन्टिगोनस उस शिशु को वहीं समुद्र के किनारे छोड़ कर लौट चला। परंतु लौटते समय उसकी मृत्यु एक जंगली भालू के द्वारा हो गयी।

उस शिशु पुत्री के शरीर पर मूल्यवान पहिनावा तथा अनेक आभूषण थे। एन्टिगोनस ने एक कागज पर उस लड़की का नाम पार्डिटा तथा वंश-परिचय लिख कर उस कागज को उस लड़की के पहिनावे में चिपका दिया। संयोगवश वह लड़की एक गड़ेरिये को मिली। वह गड़ेरिया उस लड़की को अपने घर ले गया और उसे अपनी लड़की के समान पालने लगा। उस गड़ेरिये ने उस शिशु के साथ मिले आभूषणों को बेच कर भेड़ों का एक भारी झुण्ड खरीद लिया और सुख से अपना दिन बिताने लगा।

धीरे-धीरे पार्डिटा बड़ी हो गयी। यद्यपि उसे बचपन में उचित मात्रा में शिक्षा नहीं मिली तो भी वह अपनी माँ के समान रूप और गुणसम्पन्ना हो उठी थी। उसका आचरण भी एक अच्छे घर की लड़की के समान था।

इसके बाद बहुत दिन बीत गये। एक दिन बोहेमिया का राजकुमार फ्लोरिजेल शिकार खेलने के लिए उस जंगल के उस स्थान पर आया जहाँ पार्डिटा अपनी भेड़ों को चराती थी। राजकुमार की दृष्टि पार्डिटा पर पड़ी। वह पार्डिटा की अनिर्वचनीय सुंदरता से मुग्ध हो गया और देर न लगी दोनों में मधुर प्रेम के संबंध स्थापित होने में। राजकुमार फ्लोरिजेल ने तरुणी के निकट अपना परिचय डोरिक्लिस के छद्मनाम से दिया। धीरे-धीरे दोनों का प्रेम खूब बढ़ गया। डोरिक्लिस-वेशी फ्लोरिजेल प्रायः उस गड़ेरिये के घर में आने-जाने लगा।

राजकुमार फ्लोरिजेल का आचरण सहसा कुछ अद्भुत हो उठा। वह कब कहाँ रहता है कोई नहीं जान पाता। राजकुमार सभी की आँखों में धूल झोंकने में समर्थ हुआ। परंतु वह अपने पिता राजा पालिक्सनेस की आँखों से बच न सका। राजकुमार कहाँ जाता है—एक दिन पालिक्सनेस ने गुप्त रूप से अपने पुत्र का पीछा करके सब-कुछ जान लिया। तब पालिक्सनेस ने एक दिन भेष बदल कर अपने मित्र कैमिलो को साथ लिये पार्डिटा के पिता उस गड़ेरिये के घर चलने का निश्चय किया।

उस दिन गड़ेरियों का अपना उत्सव था। सभी गड़ेरिये उस दिन अपने घर आये अतिथियों का खूब आदर-सत्कार करते थे। इस कारण पार्डिटा के पालक पिता ने भी छद्मवेशी राजा तथा कैमिलो का बड़ा आदर और सम्मान किया। राजा और

उसके साथी उस उत्सव को देखने लगे। सर्वत्र आनंद का राज्य था। सभी के होंठों पर हँसी थी। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष सभी हास-परिहास में मग्न थे। सभी मंडल बना कर नाच रहे थे। जब सभी अपने-अपने कामों में लगे हुए थे तब फ्लोरिजेल एकांत में अपनी प्रेमिका पार्डिटा से बातें कर रहा था।

राजा पार्डिटा की सुन्दरता को देख कर मुग्ध हुआ। उसने गड़ेड़िये से पूछा—"वह युवक जो तुम्हारी लड़की से बातें कर रहा है—कौन है ?"

गड़ेड़िया बोला—"उस युवक का नाम डोरिक्लिस है। वह मेरी लड़की पार्डिटा से विवाह करना चाहता है।"

पालिक्सनेस ने तब अपने पुत्र को सम्बोधित कर कहा—"सुना तुमने युवक ! जब मैं भी युवक था तब ऐसे अवसरों पर मैं अपनी प्रेमिका को बहुत से उपहार देता था। लेकिन तुमने तो अपनी प्रेमिका के लिए कुछ भी नहीं खरीदा ?"

फ्लोरिजेल क्या जानता था कि उसका पिता ऐसा कह रहा है ! उसने झट उत्तर में कहा—"नहीं जी ! मेरी प्रेमिका कोई मामूली उपहार नहीं लेती। उसके लिए मेरा उपहार तो मेरे हृदय में सुरक्षित है।"

फ्लोरिजेल की बातों को सुन कर पालिक्सनेस क्रुद्ध हो उठा। उसने छद्मवेश त्याग दिया और वास्तविक वेश में प्रकट होकर फ्लोरिजेल को उसकी निर्लज्जता के कारण बहुत ही फटकारा। राजा पार्डिटा को भी यह कह कर धमकाने लगा कि यदि वह फ्लोरिजेल से फिर कभी मिलती है तो उसके पिता का प्राणदंड अवश्य होगा।

राजा चला गया।

कैमिलो बहुत ही उदार और सज्जन था। वह किसी की बुराई

नहीं चाहता था। जब उसने देखा कि फ्लोरिजेल और पार्डिटा का प्रेम सचमुच शुद्ध और निर्मल है तब उसने अपने मन में एक उपाय सोचा। इस प्रकार से उसका एक स्वार्थ भी सिद्ध हो सकता था। उसने फ्लोरिजेल और पार्डिटा को लेकर बोहेमिया से भाग चलने का निश्चय किया। उसने बहुत दिन हुए स्वदेश छोड़ा था। इसलिए अपनी जन्म भूमि सिसिली को एक बार देखने के लिए उसकी अभिलाषा प्रबल हो उठी थी। इसके अतिरिक्त कैमिलो को समाचार मिला था कि सिसिली का राजा सचमुच अपने किये पापों के लिए दुःखित है। इसलिए उसने फ्लोरिजेल और पार्डिटा को लेकर सिसिली के राजदरबार में शरण लेने का निश्चय किया। सभी को कैमिलो का प्रस्ताव ठीक जँचा।

कैमिलो, फ्लोरिजेल, पार्डिटा और बूढ़े मेषपालक को साथ लेकर सिसिली पहुँचा। लिवन्टेस ने उनका खूब आदर-सत्कार किया। उसने पार्डिटा की सुन्दरता की अकपट प्रशंसा की और रानी हार्मियन की आकृति से उसकी आकृति की समानता को देख कर कहा कि उसको भी एक लड़की थी, यदि वह आज रहती तो इतनी ही बड़ी होती। निष्ठुर और विचार-शून्य होकर कभी उसने लड़की को त्याग दिया था। आज राजा लिवन्टेस के मन में पश्चात्ताप की अग्नि सुलग उठी।

राजा के निकट उसकी लड़की के खो जाने की बात सुन कर उस गड़ेड़िये ने कहा कि पार्डिटा भी अपने शैशव में उसे वन में पड़ी मिली थी। उसने लिवन्टेस को पार्डिटा के शैशव के आभूषण अलंकार तथा उसके साथ जो परिचय-पत्र लिखित था उसे दिखाया। तब सभी समझ गये कि पार्डिटा ही वास्तव में सिसिली की राजकुमारी है। राजा लिवन्टेस के हृदय की लुप्त स्नेह-धारा पार्डिटा को पाकर फिर से उमड़ पड़ी। परन्तु उस समय उस सुख

का अंश ग्रहण करने के लिए वहाँ रानी हार्मियन उपस्थित नहीं थी। रानी हार्मियन का अभाव लिवन्टेस को असह पीड़ा देने लगा।

हार्मियन की सखी पोलिना अभी तक मौन थी। अब वह राजा से बोली कि उसने इटली के प्रसिद्ध शिल्पी जूलियो रोमानो के द्वारा हार्मियन की एक प्रतिकृति बनवायी है। वह प्रतिकृति इतनी स्वाभाविक बनी थी कि किसी को भी उसे देख कर जीवित होने का भ्रम हो सकता है।

सभी उस मूर्ति को देखने के लिए पोलिना के निवास-स्थान पर गये। पोलिना ने पर्दे को हटाया। सभी आश्चर्य चकित होकर उस प्रतिकृति को देखने लगे। वह प्रतिमूर्ति इतनी निपुणता से बनी थी कि सभी की आँखों में वह जीवित प्रतीत हुई। राजा आँखें फाड़-फाड़ कर हार्मियन की प्रतिकृति को देखने लगा। बहुत देर तक उस प्रति मूर्ति को देख लेने के पश्चात् राजा ने कहा—"परन्तु हार्मियन की अवस्था तो उस समय इतनी अधिक नहीं थी। इसके पूर्व ही उसकी मृत्यु हो गयी थी।"

पोलिना ने कहा—"कुशल शिल्पी की तो यही सिफ़त है। आज यदि हार्मियन जीवित रहती तो उसकी सुन्दरता में इतनी ही प्रौढ़ता आती। इसलिए शिल्पी ने उसका ऐसा रूप बनाया है। अधिक देर तक देखते रहने से ऐसा लगता है कि यह प्रतिकृति हिल रही है मानो इसमें सचमुच जीवन का संचार हो गया है।"

पोलिना इतना कह कर उस प्रतिमूर्ति को पर्दे से ढाँकने लगी। परन्तु राजा लिवन्टेस के बार-बार अनुरोध करने पर उसने वैसा न किया।

राजा लिवन्टेस एकटक उस मूर्त्ति को देखता रहा। सचमुच

वह मूर्त्ति धीरे-धीरे हिल उठी। मानो उसमें अदृश्य जीवन का धीर-संचार होने लगा। मूर्त्ति अपने आप अपनी जगह छोड़ कर धीरे-धीरे नीचे उतर आयी। किसी के मुख से एक भी शब्द न निकल सका। सभी मंत्रमुग्ध के समान खड़े रह गये। मूर्त्ति धीरे-धीरे राजा लिवन्टेस के पास आकर खड़ी हो गयी। मूर्ति की कुसुम-शुभ्र बाहें ऊपर को उठीं और राजा के कन्धों पर आश्रित हो गयीं। इस अपूर्व संस्पर्श से राजा को जीवन का स्पर्श मिला। रानी हार्मियन जीवित थी।

राजा लिवन्टेस के कोप से रानी हार्मियन को बचाने के लिए उसकी सखी पोलिना ने लोगों में उसकी मृत्यु का झूठा संवाद प्रचारित किया था। उसी समय से हार्मियन पोलिना के पास रहने लगी। हार्मियन की इच्छा थी कि उसके जीवित रहने का संवाद राजा को न दिया जाय परन्तु जब रानी ने सुना कि उसकी पुत्री पार्डिटा लौट आयी है तभी वह प्रकट हुई।

राज्य के सभी भागों में खुशियाँ मनायी जाने लगीं। राजा और रानी ने फ्लोरिजेल का खूब आदर-सत्कार किया। उन्होंने उस बूढ़े गड़ेड़िये को भी उचित रीति से सम्मानित किया।

उधर पालिक्सनेस ने जब देखा कि केमिलो फ्लोरिजेल को साथ लेकर भाग गया है। तब उसने अपने मन में अनुमान लगाया कि वह अवश्य सिसिली को गया है क्योंकि केमिलो ने पहले से ही सिसिली जाने का निश्चय कर रखा था और उसके लिए पालिक्सनेस से अनेक बार अनुमति भी मांगी थी। पालिक्सनेस केमिलो की खोज में सिसिली पहुँचा। लिवन्टेस ने पालिक्सनेस को गले से लगाया तथा उस पर किये सन्देह के कारण उससे क्षमा माँगी। फिर दोनों में पूर्व की सी मित्रता स्थापित हुई। सिसिली की राजकुमारी पार्डिटा से अपने पुत्र के

विवाह कर देने में अब पालिक्सनेस को कौन सी आपत्ति रही ?

दीर्घ काल दुःख झेलने के उपरान्त रानी हार्मियन के सुख का समय लौट आया। जीवन का अन्तिम भाग उसने बड़े सुख से बिताया।



सिम्बेलीन

ब्रिटेन का राजा सिम्बेलीन रोम के सम्राट आगस्टस सीजर का समसामयिक था। सिम्बेलीन की प्रथमा पत्नी की मृत्यु असमय में हुई। वह दो पुत्र और एक शिशु पुत्री को पीछे छोड़कर इस लोक से चली गयी। सिम्बेलीन की उस शिशु पुत्री का नाम आइमोजेन था। आइमोजेन के दोनों भाइयों के नाम गुइडेरियम और आर्विगेरस थे। इन दोनों भाइयों को बचपन में ही न जाने किसी ने चुरा लिया। उनको किसने चुराया तथा वे कहाँ रखे गये यह कोई न जान सका।

इन दुर्घटनाओं से सिम्बेलीन का जीवन सम्पूर्ण निरस हो उठा। फिर भी उसे बाध्य हो कर दूसरा विवाह करना पड़ा। उसकी दूसरी पत्नी बहुत ही दुष्ट प्रकृति की थी। वह प्रायः आइमोजेन पर निर्दय व्यवहार करती थी। सिम्बेलीन से विवाह होने के पूर्व इस रानी का एक और विवाह हुआ था। उस विवाह के कारण रानी को एक पुत्र भी हुआ था जिसका नाम था क्लाटेन। रानी चाहती थी कि उस पुत्र के साथ आइमोजेन का विवाह हो जाय जिससे ब्रिटेन का सिंहासन उसके ही पुत्र को मिले।

परंतु आइमोजेन ने किसी की न सुनी। उसने स्वयं अपना पति मनोनीत किया जिसका नाम था पासथिउमस। पासथिउमस उस समय ब्रिटेन का श्रेष्ठ विद्वान तथा तथा गुणी था।

पासथिउमस का पिता सिम्बेलीन का मित्र था। वह सिम्बेलीन के पक्ष से एक बार एक युद्ध में गया और वहीं उसकी मृत्यु हो गयी। पासथिउमस की माँ भी अपने पति के शोक से इस

लोक को छोड़ कर चली गयी। उसी समय से पासथिउमस सिम्बेलीन की राजसभा में रहने लगा। वहीं वह बड़ा हुआ। पासथिउमस को उचित रूप से शिक्षित करने की व्यवस्था भी सिम्बेलीन ने ही कर दी थी। सिम्बेलीन की लड़की आइमोजेन जिस शिक्षक के पास पढ़ती थी, पासथिउमस भी उसी शिक्षक के पास पढ़ता था। वे एक साथ पढ़े-लिखे और खेले-कूदे। इस प्रकार एक दूसरे के लिए दोनों के हृदयों में प्रेम संचारित होने लगा। जब वे यौवन काल में उपनीत हुए तब उन्होंने गुप्त रूप से विवाह कर लिया। परंतु यह समाचार अधिक दिन छिपा न रहा! रानी के मुख से यह संवाद सुनते ही सिम्बेलीन का क्रोध अपनी सीमा पार कर गया। उसने सदा के लिए पासथिउमस को ब्रिटेन से निकल जाने का आदेश किया। पासथिउमस ने तब रोम में जाकर बसने का निश्चय किया।

रानी ने उचित अवसर जान कर अब एक नयी चाल चली।

उसने आइमोजेन के प्रति कपट दया दिखा कर पासथिउमस की रोम-यात्रा के पूर्व पासथिउमस से एक बार मिलने की व्यवस्था कर दी। साधारण विचार से रानी का यह कार्य बड़ा ही सराहनीय हुआ। परंतु उसके इस महान कार्य के पीछे एक भयानक दुष्ट उद्देश्य था। रानी समझी थी कि इस प्रकार से आइमोजेन के प्रति दया दिखाने से आइमोजेन स्वतः उसके वश में आ जायगी। फिर पासथिउमस की रोमयात्रा के पश्चात् आइमोजेन के विवाह को असिद्ध प्रमाणित कर पुनः आइमोजेन का विवाह रानी ने अपने पुत्र क्लाटेन से कर देने का निश्चय किया।

आइमोजेन ने अंतिम बार के लिए अपने पति पासथिउमस से मिल कर उसे अपनी माँ की दी हुई एक अंगूठी दी और उस अंगूठी को सदा अपने पास रखने के लिए कहा। पासथिउमस ने भी अपनी पत्नी के हाथों में कंगन पहना दिये और पत्नी से

उनको उसके प्रेम के प्रतीक समझ कर सदा अपने हाथों में धारण किये रहने की प्रतिज्ञा करा ली। आइमोजेन ने सानंद वैसी प्रतिज्ञा की। तत्पश्चात् दोनों एक दूसरे से विदा माँग कर चले गये।

आइमोजेन अपने पिता के प्रासाद में अकेली रहने लगी। पासथिउमस भी ब्रिटेन से निर्वासित हो कर रोम में जा कर बस गया।

रोम में पासथिउमस को अनेक मित्र मिले जिनमें से अधिकतर उसे बुरे मार्ग पर ले चलने में तत्पर थे। पासथिउमस उनके निकट अपने देश की स्त्रियों की प्रशंसा प्रायः किया करता था। वह कहा करता था कि ब्रिटेन की तरुणियाँ वास्तव में वफादार होती हैं। वह कथा-प्रसंग में कभी-कभी अपनी पत्नी की बड़ाई भी कर देता था। वह कहता था कि उसको पत्नी आज भी अपने निर्वासित पति के प्रति वैसी ही प्रेम की भावना रखती है जैसी कि वह अपने पति के विद्यमान रहने पर रखती थी। पासथिउमस का एक मित्र, जिसका नाम याकिमो था, पासथिउमस के इस कथन की सत्यता के बारे में संदेह प्रकट करने लगा।

इस कारण याकिमो और पासथिउमस के बीच काफी देर तक वाद-विवाद हुआ और अन्त तक यह निश्चित हुआ कि याकिमो ब्रिटेन जाकर आइमोजेन के साथ प्रेम का सम्बन्ध स्थापित कर लेगा तथा पासथिउमस के दिये कंगनों को ले आयगा। इस कार्य में यदि याकिमो सफल रहा तो पासथिउमस अपनी बाजी हार जायगा और आइमोजेन की दी हुई अँगूठी याकिमो को दे देगा। यदि याकिमो अपना दाँव हारता है तो वह पासथिउमस को प्रचुर धन देगा। अपनी पत्नी पर पासथिउमस का दृढ़ विश्वास था, वह एक प्रकार निश्चित हो गया कि याकिमो किसी भी प्रकार अपने कामों में सफल न हो पायगा।

जो कुछ हो, याकिमो ब्रिटेन के राजभवन में जा कर उपस्थित हुआ। उसने आइमोजेन के निकट अपने को उसके पति का मित्र कह कर परिचित किया। आइमोजेन उसका परिचय पा कर बहुत ही प्रसन्न हुई। याकिमो उसके पति का मित्र था। इसलिए आइमोजेन ने उसका यथेष्ठ आदर-सत्कार किया। परन्तु याकिमो का अभिप्राय कुछ और था। उसने आइमोजेन को एकांत में पा कर उससे प्रेम की बातें छेड़ीं। आइमोजेन इस पर बहुत ही खिन्न हुई। उसने उस घृणित व्यक्ति को उसी क्षण वहाँ से चले जाने का आदेश दिया। बाजी जीतने का अब कोई सुगम उपाय न रहा देख कर उसने कौशल से अपना मतलब सिद्ध करना चाहा। उसने कुछ धन देकर आइमोजेन के प्रासाद के कुछ नौकरों को अपने पक्ष में कर लिया। वह उनकी सहायता से एक बड़े सन्दूक में बन्द हो कर आइमोजेन के शयन-कक्ष में पहुँचा। आधी रात को जब आइमोजेन घोर निद्रा में सो रही थी तब याकिमो उस सन्दूक से निकला। उसने पहले ही उस कमरे को भली-भाँति देख लिया मानो उस कमरे का एक चित्र अपनी आँखों के आगे रख लिया। फिर वह बड़ी सावधानी से आइमोजेन के पास जा कर खड़ा हो गया। आइमोजेन सो रही थी। याकिमो ने धीरे-धीरे पासथिउमस के दिये कंगनों को आइमोजेन के हाथों से खोल लिया। तत्पश्चात वह पुनः सन्दूक में छिप गया।

दूसरे दिन याकिमो रोम के लिए रवाना हो गया। वहाँ पहुँचते ही उसने सर्वप्रथम पासथिउमस को वे कंगन दिखाये और कहा कि उसने आइमोजेन के शयन-गृह में प्रवेश किया है। वह अपने कथन को सत्य प्रमाणित करने के लिए उस कमरे की सजावट की वर्णना सुनाने लगा। आइमोजेन के शयन-गृह में कौन सी वस्तु कहाँ रखी थी। उसका वर्णन वह इतनी सरलता से करता गया कि याकिमो के आइमोजेन के शयन-गृह में उप-

स्थित होने के बारे में कौन सन्देह प्रकट कर सकता था ? पासथिउमस के मन में दृढ़ विश्वास हुआ कि उसकी पत्नी आइमोजेन सचमुच विश्वासघातिनी हो सकती है। पत्नी के प्रति क्रोध और घृणा से उसका मन भर उठा। उसने प्रतिज्ञा हारने के प्रमाणस्वरूप याकिमो को आइमोजेन की दी हुई अंगूठी दे दी।

पासथिउमस अपनी पत्नी के असतीत्व का प्रमाण पा कर अतिशय क्रोधित हो उठा। उसने अपनी पत्नी के असती होने का विषय उल्लेख कर पिसानियो नामक अपने एक मित्र के निकट एक पत्र भेजा। उसने उस पत्र के द्वारा अपने मित्र से अनुरोध किया कि वह आइमोजेन को मिलफोर्ड हावेन नामक स्थान में ले जा कर वहाँ उसकी हत्या कर दे।

पासथिउमस आइमोजेन के निकट भी एक पत्र भेजा। जिसमें लिखित था कि वह आइमोजेन से एक बार मिलने के लिए बेचैन हो उठा है लेकिन ब्रिटेन जाना उसके लिए असंभव है। इस कारण वह आइमोजेन से साक्षात करने के लिए मिलफोर्ड हावेन में उपस्थित रहेगा।

पासथिउमस द्वारा लिखित पत्र पा कर आइमोजेन ने सरल अंतःकरण से मिलफोर्ड हावेन जाना स्वीकार कर लिया। फिर वह अपने पति से मिलने के लिए भी मन ही मन व्याकुल हो उठी थी। वह पिसानियो के साथ मिलफोर्ड हावेन के लिए चल पड़ी।

पिसानियो पासथिउमस के कहने पर ही ऐसा करने को स्वीकृत हुआ था, परंतु वह आइमोजेन को भली-भाँति जानता था। इसलिए आइमोजेन पर पिसानियो का दृढ़ विश्वास भी था। वह आइमोजेन के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार अपने मन को संशययुक्त न कर सका। इस कारण उसने मिलफोर्ड हावेन

पहुँचने के पूर्व ही आइमोजेन को उसके पति के क्रूर आदेश के विषय में कहा।

आइमोजेन ने जब सब कुछ सुन लिया तब उसका हृदय स्वतः रो पड़ा। परन्तु उसने अन्त तक पिसानियो के कहने पर तब तक गुप्तरूप से रहने का निश्चय किया जब तक न उसका पति पासथिउमस अपनी भूल समझ जाता है। आइमोजेन बहुत देर तक अपने भविष्य के कार्यक्रम के बारे में पिसानियो से विचार-विमर्ष करती रही। अन्त तक आइमोजेन ने एक पुरुष के वेश में रोम पहुँच कर अपने पति से साक्षात्कार करने का निश्चय किया।

पिसानियो आइमोजेन को भली प्रकार से पुरुष-वेश में सज्जित कर राज सभा में चला गया। जाने के पूर्व उसने आइ-मोजेन को एक भरी हुई शीशो दे कर कहा कि उस शीशी में एक ऐसी दवा है जिसके सेवन से सभी रोग दूर हो सकते हैं। सिम्बेलीन की दूसरी रानी ने पिसानियो को यह दवा दी थी। रानी ने वास्तव में पिसानियो को जान से मारने के लिए यह दवा उसे यथार्थ में जहर समझ कर दी थी। रानो ने पिसानियो के जीवन-नाश के लिए एक वैद्य से कुछ विष माँगा था क्यों कि पिसानियो सदा से आइमोजेन का पक्ष समर्थन करता आ रहा था। परन्तु वह वैद्य रानी की बुरी नीयत से परिचित था इसलिए उसने रानी को सचमुच विष न देकर एक ऐसी दवा दी जिसके सेवन करने पर कोई व्यक्ति कुछ समय तक मृतवत् पड़ा रहता है। रानी ने उसी दवा को 'सर्व-रोग-हर' कह कर पिसानियो के हवाले कर दिया था। अब पिसानियो ने उस दवा को सचमुच लाभदायक दवा जान कर आइमोजेन को दिया क्यों कि उस लम्बी यात्रा में वह दवा बेचारी आइमोजेन के काम में आ सकती थी।

आइमोजेन एकाकी चलने लगी। अनेक अपरिचित स्थानों को पार करती हुई वह एक घने जंगल के समीप आ पहुँची। उसे इतना चलने का अभ्यास नहीं था। इसलिए वह बहुत ही क्लांत हो चुकी थी। इसके अतिरिक्त उसे भूख तथा प्यास भी सता रही थी। उससे और अधिक न चला गया। वह उस वन की एक गुफा के समीप पहुँच कर रुक गयी। वह कुछ भोजन-सामग्री की तालाश में उस गुफा के भीतर गयी। उसे वहाँ खोजने पर कुछ मांस पड़ा मिला। वह मांस उस समय ठंढा था। परन्तु आइमोजेन को ऐसी भूख लगी थी कि वह उसे अमृत समझ कर खाने लगी।

उस गुफा के अधिकारी ब्रिटेन की राज सभा का निर्वासित लार्ड बेलेरियस तथा उसके दो पालित पुत्र थे। जिनके वर्तमान नाम पालिडोर और कैडवल थे। ये वास्तव में ब्रिटेन के राजा सिम्बेलीन के दो पुत्र थे जिन्हें बेलेरियस चुरा कर यहाँ लाया था। सिम्बेलीन ने जब मिथ्या अभियोग लगा कर बेलेरियस को राज सभा से निकाल दिया तब उसने अपनी प्रतिहिंसा चरितार्थ करने के लिए ऐसा किया था। परन्तु अपनी प्रतिहिंसा को वह पूर्णरूप से चरितार्थ न कर सका। न जाने क्यों उन शिशुओं के लिए उसके हृदय से स्नेह की धारा उमड़ पड़ी। वह उस वन की उस गुफा में रह कर दोनों भाइयों का पालन-पोषण करने लगा।

बेलेरियस उन्हें अपने पुत्र के समान देखता था। उसने उनको नैतिक तथा व्यावहारिक शिक्षाएँ दीं। तथा सब तरह से शिक्षित और मार्जित बनाया। बड़े हो कर दोनों भाई इसी वन में रहने लगे। वे जंगली पशुओं को मार कर अपनी जीविका निर्वाह कर लेते थे।

आइमोजेन जिस समय उनकी गुफा में प्रवेश कर उनके रखे मांस से अपनी क्षुधा को शांत कर रही थी तब बेलेरियस तथा

उसके दो पालक पुत्र पशु का शिकार कर लौटे। बेलेरियस सर्व-प्रथम गुफा के भीतर गया। उसने गुफा में प्रवेश कर देखा कि कोई व्यक्ति उनके रक्षित मांस को खा रहा है। आइमोजेन उस समय एक पुरुष के वेश में थी। इसलिए बेलेरियस ने उसे पुरुष समझा। आइमोजेन की अलौकिक सुन्दरता को देख उसने अपने मन में सोचा कि यह व्यक्ति अवश्य कोई फरिश्ता होगा।

आइमोजेन उनको देख कर बाहर आयी और बोली, "भाइयो! मैं इस मांस का उचित मूल्य दूँगा। मैं असह्य भूख के कारण मर रहा था। इसलिए बिना आप लोगों की अनुमति के मैंने गुफा में प्रवेश किया तथा इस माँस से अपनी क्षुधा का निवारण किया है। यदि आप लोग न आ पहुँचे होते तो मैं अवश्य मांस का मूल्य मांस के निकट रख कर चला जाता।"

आइमोजेन उनको मांस के लिए मूल्य देने लगी। पर उन्होंने मूल्य न लिया। आइमोजेन की समझ में आया कि वे क्रुद्ध होकर मूल्य लेने से अस्वीकार कर रहे हैं। इसलिए वह बोली, "आप लोग यदि मेरे इस अपराध के कारण मेरा प्राण लेते हैं तो आप लोगों को कुछ न लाभ होगा क्योंकि मैं भूख से तड़प-तड़प कर मर ही जाता यदि न मुझे यह मांस खाने को मिलता।"

बेलेरियस ने आइमोजेन से उसका नाम तथा वह कहाँ जा रहा था पूछा। इस पर आइमोजेन ने अपना प्रकृत नाम छिपा कर कहा कि उसका नाम है फिडेल और वह मिलफोर्ड हावेन को जा रहा था। वहाँ से जहाज पर चढ़ कर उसका एक साथी इटली तक जानेवाला था। वह उससे मिलने को जा रहा था। परंतु मिलफोर्ड को जानेवाला रास्ता उसका अपरिचित था इस कारण वह भटक कर उस जंगल के भीतर जा पहुँचा है। यह सुन कर वे सन्तुष्ट हुए और उस आगंतुक अतिथि का उचित सत्कार करने के लिए शिकार द्वारा

प्राप्त हरिण के मांस को पकाने का आयोजन करने लगे। आइमोजेन ने भी प्रसन्न होकर उनके कामों में सहयोग दिया। आइमोजेन ने गृहस्थी के कामों में दक्ष गृहिणी के समान उस मांस को पकाया तथा सभी को परितृप्त कर खिलाया और स्वयं खाया। आइमोजेन के सुंदर रूप, मधुर वार्तालाप तथा विनय पूर्ण व्यवहार से गुहा-निवासी दोनों भाई बहुत ही संतुष्ट हुए। न जाने आइमोजेन भी प्रथम साक्षात्कार में ही दोनों भाइयों के प्रति आकृष्ट हुई तथा उन दोनों के लिए अपने मन में भ्रातृ-स्नेह का अनुभव करने लगी। यद्यपि वह नहीं जानती थी कि वे ही सचमुच उसके भाई हैं।

बेलेरियस और उसके दोनों पालित पुत्र पुनः शिकार करने को निकले। आइमोजेन उनके साथ न जा सकी क्योंकि वह बहुत क्लांत हो पड़ी थी। जब उसे अत्यधिक थकावट का अनुभव होने लगा तब उसे पिसानियो की दी हुई दवा की याद आई। वह तुरंत उस दवा को लाभदायक समझ कर पी गयी। उस दवा के प्रभाव से उसे गहरी नींद आयी और वह मृतवत् पड़ी रही।

आखेट से लौट कर जब उन्होंने आइमोजेन को उस दशा में देखा तब वे निःसंदेह समझ गये कि उसकी मृत्यु हो गयी है। वे आइमोजेन के लिए अनुताप करने लगे। परंतु उस मृतक शरीर को वे कैसे अपनी गुफा में रख सकते थे। वे उसे उठा कर घने जंगल में ले गये और वहाँ उसे जंगली फूलों तथा पत्तों से ढाँक कर छोड़ आये।

कुछ समय पश्चात् जब उस औषधि का प्रभाव नष्ट हो गया तब आइमोजेन की आँखें खुलीं। वह अपने को फूलों तथा पत्तों से ढँका देख कर बहुत ही विस्मित हुई। जो भी कुछ हो, वह उठी। परंतु उस स्थान से पुनः गुफा तक लौट चलना उसके

लिए असंभव था। इसलिए वह मिलफोर्ड हावेन तक पहुँचने के लिए उसी जंगल में इधर-उधर भटकने लगी। उसी समय संयोगवश, रोम राज्य की एक सेना उसी जंगल के रास्ते से ब्रिटेन पर आक्रमण करने के लिए जा रही थी। रोम के सम्राट आगस्टस सीजर ने वह सेना भेजी थी। आइमोजेन का पति पासथिउमस भी उसी सेना के साथ था। स्वदेशवासियों के विरुद्ध अस्त्र-धारण करने की इच्छा उसे न थी। ब्रिटेनवासियों के पक्ष से लड़ कर मरने का अभिप्राय उसे था। यदि उस प्रकार से भी वह नहीं मरता तो सिम्बेलीन के कोप से उसे कौन बचाता? क्यों कि बिना अनुमति के ब्रिटेन में प्रवेश करने के लिए उसका प्राणदंड निश्चित था। उसकी प्रियतमा पत्नी आइमोजेन ने उसके साथ विश्वासघात किया है—इस चिंता ने उसके जीवन को नीरस बना दिया था। फिर पिसानियो के हाथ आइमोजेन की मृत्यु हो गयी है—यह सोच कर भी उसे जीने की इच्छा न रही!

संयोगवश उसी सेना से आइमोजेन का साक्षात्कार भी हो गया। रोमीय सेना के सेनापति ल्यूसीयस ने पुरुषवेशी आइमोजेन को अपने पास रख लिया। सेनापति को एक निजी अनुचर की आवश्यकता थी।

जब स्वदेश के सामने कोई भयानक विपत्ति आ उठती है तब सभी सच्चे स्वदेशप्रेमी आपसी भेद-भाव को भूल कर एक साथ कंधे से कंधा लगा कर उस विपत्ति के विरुद्ध खड़े होते हैं। निर्वासित सभासद बेलेरियस भी अपनी प्रतिहिंसा को भूल कर ब्रिटेन राज सिम्बेलीन की पताका के नीचे आकर खड़ा हुआ। उसके दो पालित पुत्र पालिडोर और कैडवल भी ब्रिटेन की सेना में सम्मिलित हो गये। रोम और ब्रिटेन दोनों पक्षवालों की सेनाओं में भयंकर युद्ध हुआ जिसमें ब्रिटेनीय सेना विजयी

हुई। युद्ध-क्षेत्र में पासथिउमस, बेलेरियस, पालिडोर और कैडवल ने अधिक शौर्य का प्रदर्शन किया। यदि वे अपनी जान हथेली पर रख कर न लड़े होते तो ब्रिटेन-राज की मृत्यु प्रायः निश्चित थी।

युद्ध समाप्त होने पर पासथिउमस ने ब्रिटेन के राजकर्मचारी के निकट आत्मसमर्पण किया। निर्वासन-आदेश के अमान्य करने से उसे प्राणदंड मिलना चाहिये था। पासथिउमस ने अपने दुःखपूर्ण जीवन का अंत इसी प्रकार से करना चाहा।

सिम्बेलीन के सम्मुख आइमोजेन तथा उसका प्रभु रोमीय सेनापति ल्यूसीयस और याकिमो को बन्दी बना कर उपस्थित किया गया। पासथिउमस आया था अपने प्राणदंड का आदेश सुनने। बेलरियस पालिडोर और कैडवल को लेकर आया था अपनी वीरता का पुरस्कार लेने। पिसानियो, जो आइमोजेन तथा पासथिउमस का मित्र था, प्रधान राज अनुचर के रूप में उपस्थित था।

पासथिउमस को देखते ही आइमोजेन ने पहचान लिया। आइमोजेन को जीवित देख कर बेलेरियस, पालिडोर और कैडवल विस्मित हुए। पिसानियो ने भी आइमोजेन को पहचान लिया क्योंकि उसीने आइमोजेन को पुरुष वेष में सजाया था।

रोमीय सेनापति ल्यूसीयस ने ब्रिटेन-राज से आइमोजेन के लिए प्रार्थना की, "महानुभव! आप धन लेकर बंदियों को मुक्त नहीं करते—यह मैं जानता हूँ। मैं भी स्वयं मुक्त होना नहीं चाहता। परंतु आप धन लेकर मेरे इस अनुचर को मुक्त कीजिये। यह एक ब्रिटेनवासी है तथा बहुत ही शिष्ट और भद्र है। इसने ब्रिटेन-वासियों के प्रति कोई भी अन्याय नहीं किया है।"

आइमोजेन पर सिम्बेलीन को दृष्टि पड़ते ही, न जाने क्यों, सिम्बेलीन के हृदय में स्नेह का संचार हुआ। उसे ऐसा लगा

उसने उस युवक को कहीं न कहीं देखा है। राजा अपनी की आइमोजेन को पुरुष के छद्मवेश में पहचान न सका। राजा रोमीय सेनापति की प्रार्थना पूरी की। उसने उस युवक को क देते समय उससे पूछा, "युवक यदि तुम्हारी कोई प्रार्थना तो माँग सकते हो!"

आइमोजेन ने याकिमो की ओर संकेत करते हुए कहा, "महाशय! उस व्यक्ति की उँगली में जो अँगूठी है वह उसे कैसे मिली?—उसे कहने के लिए बाध्य कीजिये!"

याकिमो अनुतप्त होकर अपने कुकर्म के बारे में सब-कुछ खोल कर कह गया। सब कुछ सुन कर पासथिउमस के मन में दारुण पश्चात्ताप उत्पन्न हुआ। उसने भी राजा के सामने स्वीकार किया कि उसने आइमोजेन की हत्या कर देने के लिए उसके मित्र पिसानियो के निकट एक पत्र लिखा था। पासथिउमस आइमोजेन के लिए अनुताप करने लगा।

अब आइमोजेन अधिक देर तक अपने को रोक न सकी। उसने अपना वास्तविक परिचय दिया। सिम्बेलीन बहुत ही प्रसन्न हुआ। उसने पासथिउमस को माफ कर दिया तथा उसे अपना जामाता स्वीकार कर लिया।

बेलेरियस ने उस आनंद के अवसर पर एक और आनंद का संदेश सुनाया। उसने अपना अपराध स्वीकार कर राजा के दो पुत्र, जिन्हें चुरा कर वह वन में जाकर बसा था, राजा को लौटा दिये। राजा बेलेरियस के व्यवहार से बहुत ही प्रसन्न हुआ। वह उसके अपराध को भूल गया।

आइमोजेन के अनुरोध करने पर सिम्बेलीन ने रोमीय सेनापति ल्यूसीयस को मुक्त कर दिया। आगे चल कर इसी ल्यूसीयस की मध्यस्थता से रोम और ब्रिटेन के बीच स्थायी मित्रता स्थापित हुई।

राजा सिम्बेलीन की दूसरी रानी की इसके बाद शीघ्र ही मृत्यु हो गयी। उसका पुत्र क्लाटेन भी एक झगड़े में शामिल हो कर मारा गया।

सच्चे मार्ग पर चलनेवालों का परिणाम सदा ही सुखमय होता है और जो बुरे मार्ग को अपनाते हैं उनकी दशा आगे चल कर बुरी ही होती है।

